राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

10 पर्यटन विकास के लिए दीर्घावधि योजना के साथ काम करने की जरुरत

सीमा मुद्दों को उचित स्थान पर रखते हुए स्थिति सामान्य..... 12

वर्ष : 10 | अंक : 291 | पटना, शनिवार, 04 मार्च, 2023 | फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी, विक्रम संवत् 2079 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

इंदौर टेस्ट : स्पिन के टेस्ट में भारत फेल, नौ विकेट से जीते कंगारू

नई दिल्ली, एजेंसी

ऑस्ट्रेलिया ने बॉर्डर-गावस्कर श्रृंखला के तीसरे टेस्ट मैच में शुक्रवार को यहां तीन दिन के अंदर भारत को नौ विकेट से करारी शिकस्त देकर चार मैचों की श्रृंखला में वापसी की और विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप के फाइनल में भी अपनी जगह पक्की कर ली। ऑस्ट्रेलिया ने जीत के लिए मिले 76 रने के लक्ष्य को एक विकेट गंवाकर हासिल कर लिया। इस जीत के बाद भी ऑस्ट्रेलिया श्रृंखला में 1-2 से पीछे है।

ट्रेविस हेड (नाबाद 49) और मार्नस लाबुशेन (नाबाद 28) ने पारी की शुरूआती ओवरों में मुश्किल परिस्थितियों का सामना करने के बाद 18.5 ओवरों में ऑस्ट्रेलिया को जीत दिला दी। भारत में जीत मेहमान टीमों के लिए दुर्लभ होती है और ऑस्ट्रेलिया के लिए भी यह अलग नहीं था, जिसने छह साल में भारतीय धरती पर अपनी पहली

जीत दर्ज की। भारत के लिए पिछले 10 वर्षों में यह केवल तीसरी हार है। टीम को नौ मार्च से अहमदाबाद में शुरू होने वाले अंतिम टेस्ट से पहले अपनी योजनाओं पर फिर से काम करने की आवश्यकता होगी। श्रृंखला में इस्तेमाल हुई पिचों की भी तीखी आलोचना हुई है और यह देखाना दिलचस्प होगा कि क्या भारत स्पिन के अनुकूल पिचों की प्राथमिकता को जारी रखेगा क्योंकि घरेलू टीम के बल्लेबाज भी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों से निपटने के लिए बुरी तरह संघर्ष करते दिखे हैं। भारत अपनी दो पारियों में केवल 109 और 163 रन ही बना सका। ऑस्ट्रेलिया टीम जिस तरह से नागपुर और दिल्ली की दूसरी पारी लड़खडायी थी उससे लग रहा था कि शुक्रवार को पहले सत्र में कुछ भी हो सकता है। जीत के लिए 76 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी ऑस्ट्रेलियाई टीम को रविचंद्रन अश्विन ने दिन की दूसरी गेंद पर उस्मान ख्वाजा को कैच आउट कराकर चमत्कार की उम्मीद जगाई। अश्विन की यह गेंद तेजी से टर्न लेते हुए ख्वाजा के बल्ले का किनारा लेते हुई विकेट कीपर कोना भरत के दस्तानों में चली गयी। स्कोर बोर्ड पर बिना किसी रन के पहला विकेट गंवाने के बाद टीम दबाव में थी लेकिन लाबुशेन ने रविंद्र जडेजा की गेंद पर चौका लगाकर दबाव कम किया। हेड और लाबुशेन को आक्रामक बल्लेबाजी के लिए जाना जाता है लेकिन दोनों ने बिना कोई जोखिम लिए शुरूआती 10 ओवर में सिर्फ 13 रन बनाये। पारी के 10वें ओवर में गेंद बदलने के बाद मैच का रूख ऑस्ट्रेलिया की ओर मुड़ गया। अश्विन इस गेंद से संतुष्ट नहीं थे और हेड ने उनके ओवर में चौका और छक्का जड़कर अपने इरादे जात दिये। हेड और लाबुशेन ने इसके बाद जडेजा के खिलाफ चौके लगाये और फिर मैच पर ऑस्ट्रेलिया की पकड़ बन गयी। लाबुशेन ने चौका लगाकर ऑस्ट्रेलिया को यादगार जीत दिलायी।

मौसम

अधिकतम तापमान 34.0°C

न्यूनतम तापमान 20.0°C

राजधानी दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों में आज भी बारिश के आसार

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	57,790
चांदी	55,300
सेंसेक्स	59,809
निफ्टी	17,594

संक्षिप्त खबरें

9 जिलों में सिविल सर्जन की पोस्टिंग

पटना। बिहार की खराब होती स्वास्थ्य व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए स्वास्थ्य विभाग ने जिलों के सिविल सर्जन की नियुक्ति में बड़ा फेलबदल किया है। शुक्रवार को विभाग के द्वारा नौ जिलों के सिविल सर्जन के ट्रांसफर का आदेश जारी किया गया है। जिन जिलों में नए सिविल सर्जन बनाए जाने का आदेश जारी किया गया है। उनमें जमुई, बक्सर, नवादा, पश्चिम चंपारण, जहानबाद, औरंगाबाद, खगड़िया, शेखपुरा और पटना शामिल है।

राज्यपाल से बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्रीज के शिष्टमंडल ने मुलाकात की

पटना। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर से बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष पीके अग्रवाल के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल ने राजभवन आकर मुलाकात की।

राजीव मिश्रा पटना के नए एसएसपी

पटना (प्राकि)। राजीव मिश्रा पटना के नए एसएसपी बनाए गए। मानवजीत सिंह ढिल्लो नवप्रोन्नत डीआईजी को आर्थिक अपराध इकाई बिहार, पटना और मद्य निषेध विभाग का भी अतिरिक्त प्रभार दिया गया है।

तमिलनाडु प्रकरण पर मुख्यमंत्री सख्त, अधिकारियों के साथ की बैठक

बिहारी मजदूरों पर हमले की जांच करने वरिष्ठ अधिकारियों की टीम जाएगी तमिलनाडु

राज्य सरकार इस मामले पर पूरी तरह संवेदनशील : सीएम

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। तमिलनाडु में बिहारी मजदूरों पर हमले के वीडियो वायरल होने के बाद प्रदेश में सियासी घमासान छिड़ा है। इस बीच मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इस प्रकरण को लेकर मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक के साथ शुक्रवार को पुनः उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि राज्य के वरिष्ठ अधिकारियों की एक टीम जिसमें वरिष्ठ पुलिस अधिकारी भी शामिल रहेंगे, तमिलनाडु के उस प्रभावित क्षेत्र का दौरा करेगी, जहां से ऐसी खबरें मिली हैं। टीम प्रभावित इलाकों में रह रहे बिहार के लोगों एवं स्थानीय प्रशासन से बातचीत करेगी और बिहार के लोगों की समस्याओं के समाधान को लेकर समुचित कार्रवाई सुनिश्चित करायेगी। मुख्यमंत्री ने मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक को पूरी स्थिति पर लगातार नजर रखने को कहा है।

राज्य सरकार इस मामले पर पूरी तरह संवेदनशील है। वहीं, तमिलनाडु सरकार इसे अफवाह करार दे चुकी है। वहीं इस मामले को लेकर नेता प्रतिपक्ष विजय सिन्हा ने बताया कि उन्होंने सम्राट चौधरी व अन्य विपक्षी विधायकों के साथ शुक्रवार को सीएम से मुलाकात की । उन्होंने कहा कि हम लोगों ने सीएम से मांग की कि बिहार से एक सर्वदलीय टीम अधिकारियों के साथ तमिलनाडु भेजी जाए। इस पर सीएम ने डीजीपी और मुख्य सचिव को बुलाकर कहा कि अधिकारियों की एक टीम कल ही भेजी जाए। सीएम ने कहा कि जो लोग भी तमिलनाडु से बिहार आना चाहते हैं, उन्हें वापस लाया जाएगा। फिलहाल डीजीपी और मुख्य सचिव की मुख्यमंत्री के साथ मीटिंग हो रही है। मीटिंग के बाद ही फैसला

होगा कि टीम में कौन-कौन जाएंगे।

बिहार के सभी मजदूर सुरक्षित, सियासत न करे विपक्ष : तेजस्वी

इस प्रकरण को लेकर सदन में उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव व नेता प्रतिपक्ष विजय कुमार सिन्हा के बीच तीखी नोकझोंक हुई। विजय सिन्हा ने कहा कि तमिलनाडु में बिहारियों पर हो रहे हमले से जमुई और मुंगेर के लोग सहमे हए हैं। पलायन कर रहे हैं। तमिलनाडु में एक टीम बनाकर भेजनी चाहिए। इसकी जांच होनी चाहिए। विजय सिन्हा के आरोपों पर उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने कहा कि तमिलनाडु में बिहार के सभी मजदूर सुरक्षित हैं, इस पर सियासत नहीं करें। जो भी मामला है उसकी सरकार जांच करेगी। जो दोषी पाए जाएंगे उन पर कार्रवाई की जाएगी। बिहार डीजीपी ने वायरल हो रहे वीडियो को झूठा बताया है। आपको हम पर विश्वास नहीं है तो केंद्रीय गृहमंत्री इसकी जांच करवा लें। सिन्हा ने कहा कि उनकी मजदूरों से बात भी हुई है। मजदूरों ने बताया कि तमिलनाडु में हत्याएं हुई है। वह लोग अपने घर नहीं जा पा रहे हैं। बिहार विधान परिषद में नेता विरोधी दल सम्राट चौधरी ने कहा कि बिहार सरकार तमिलनाडु मामले में जनता को गुमराह कर रही है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। वहां के कई परिवार के लोग यह बता रहे कि तमिलनाडु में उनके साथ क्या-क्या हो रहा है। इसकी जांच होनी चाहिए। पुलिस मुख्यालय भी दबाव में गलत बयान दे रहा है। वहीं, उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने ट्वीट के माध्यम से भी तमिलनाडु प्रकरण को लेकर विपक्ष पर हमला बोला है। कहा है कि बीजेपी, बीजेपी समर्थित मीडिया और इनके नेताओं का तथ्य और सत्य से कोई नाता नहीं है। इनकी झूठ फिर पकड़ी गयी। भ्रम,झूठ,नफरत,हिंसा और अफवाह फैलाना ही भाजपाइयों का मुख्य धंधा और पूँजी है। किसी भी देशहितैषी व्यक्ति को समाज में द्वेष व भ्रम नहीं फैलाना चाहिए।

तमिलनाडु पुलिस का दावा : सोशल मीडिया पर प्रसारित दो वीडियो फर्जी

पटना। तमिलनाडु पुलिस ने दावा किया है कि बिहार के मजदूरों को मारे जाने के संबंध में सोशल मीडिया पर जो वीडियो चल रहे थे, वह फर्जी हैं। वीडियो में सड़क पर शख्स को मारते हुए दिखाया गया है जबकि त्रिपुर शहर में ऐसी कोई घटना हुई नहीं है। ऐसी अफवाह फैलाने वाले के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। इस मामले में एफआइआर भी दर्ज की गई है। इससे पहले तमिलनाडु के डीजीपी ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो पोस्ट करते हुए कहा है कि बिहार में किसी ने बिहार के मजदूरों पर तमिलनाडु में हमले के संबंध में एक झूठा और भ्रामक वीडियो पोस्ट किया है। घटना के संबंध में सोशल मीडिया पर प्रसारित दो वीडियो फर्जी है। वीडियो के तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर पेश किया गया है और दावा किया गया है कि तमिलनाडु में रहने वाले बिहारी मजदूरों पर हमला किया जा रहा है। वहीं, तमिलनाडु में बिहारी मजदूरों के मारपीट की खबर को एक फिर से बिहार पुलिस मुख्यालय ने नकारा है। एडीजी मुख्यालय जितेंद्र सिंह गंगवार ने दावा किया है कि जिस तरह से तमिलनाडु के दो

वीडियो वायरल हुए हैं, उन्हें गलत तरीके से प्रचारित किया गया है। बिहार पुलिस के अधिकारियों से हुई बातचीत में तमिलनाडु पुलिस ने भी फिर से कहा है कि उनके राज्य में बिहार या उत्तर भारत के लोगों के साथ किसी प्रकार की कोई घटना स्थानीय लोगों के द्वारा नहीं की गई है। जितेंद्र सिंह गंगवार ने दावा किया कि इस मसले पर बिहार पुलिस लगातार तमिलनाडु पुलिस कांटेक्ट में है। जैसे ही कोई सूचना मिल रही है, बिहार पुलिस उसे वेरीफाई कर रही है। इसमें आगे की कार्रवाई कर रही है।

आचरण सुधार लें, वरना कार्रवाई की जाएगी : विस अध्यक्ष

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। बिहार विधानमंडल के दोनों सदनों में विपक्ष लगातार सरकार पर हमलावर है। पांचवें दिन भी दोनों सदनों मे विपक्ष का हंगामा जारी रहा। विपक्ष तमिलनाडु में बिहारी मजदूरों के साथ हो रहे मारपीट के मामले पर शुक्रवार को विस में जमकर हंगामा किया। हंगामा कर रहे विपक्षी सदस्यों का रवैया देखकर विधानसभा अध्यक्ष अवध बिहारी चौधरी नाराज हो गए। उन्होंने हंगामा कर रहे भाजपा विधायकों को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि अपना आचरण सुधार लें, वरना आप लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। आप लोगों को निष्कासित कर दिया जाएगा।' विधानसभा अध्यक्ष ने बीजेपी विधायक जीवेश मिश्रा, जनक सिंह, लखेंद्र पासवान और प्रमोद कुमार को चेतावनी देते हुए कहा कि आपका आचरण निंदनीय है अगर आप लोगों का आचरण इसी तरह का रहेगा तो संसदीय कार्य मंत्री से राय लेकर सदन से निष्कासित कर दिया जाएगा । स्पीकर द्वारा करवाई की बात कह जाने के बाद बीजेपी विधायकों की ओर से आपत्ति जताई गई है। सदन के बाहर नेता प्रतिपक्ष विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि सत्ता पक्ष में बैठे लोगों को आचरण सुधारने की जरूरत है।

पैसे की भूख ने भ्रष्टाचार को कैंसर की तरह पनपने में मदद की : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि पैसे की भूख ने भ्रष्टाचार को कैंसर की तरह पनपने में मदद की है। न्यायालय ने कहा कि संविधान के तहत स्थापित अदालतों का देश के लोगों के प्रति कर्तव्य है कि वे दिखाएं कि भ्रष्टाचार को कतई बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। साथ ही वे अपराध करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई भी करें।

शीर्ष अदालत ने कहा कि संविधान की प्रस्तावना में धन का समान वितरण कर भारत में लोगों के लिए सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने का वादा किया गया है, जिसे पूरा करने में भ्रष्टाचार एक बड़ी बाधा है। गौरतलब है कि छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय ने आय के ज्ञात स्त्रोतों से अधिक संपत्ति अर्जित करने के आरोप में राज्य के पूर्व प्रधान सचिव

अमन सिंह और उनकी पत्नी के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी को निरस्त कर दिया था। न्यायमूर्ति एस. रवींद्र भट और न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की पीठ ने उच्च न्यायालय के आदेश को रद्द करते हुए यह टिप्पणी की है। पीठ ने कहा, संविधान की प्रस्तावना में, भारत के लोगों के बीच धन का समान वितरण करके सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने का वादा किया गया है, लेकिन यह अभी तक दूर का सपना है। भ्रष्टाचार यदि प्रगति हासिल करने में मुख्य बाधा नहीं भी है, तो निस्संदेह एक बड़ी बाधा जरूर है। पीठ ने कहा, ह्लभ्रष्टाचार एक बीमारी है, जो जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त है। यह अब शासन की गतिविधियों तक सीमित नहीं है, अफसोस की बात है कि जिम्मेदार नागरिक कहते हैं कि यह जीवन का हिस्सा बन गया है।

शीर्ष अदालत ने कहा कि यह पूरे समुदाय के लिए शर्म की बात है कि हमारे संविधान निमार्ताओं के मन में जो ऊंचे आदर्श थे, उनका पालन करने में लगातार गिरावट आ रही है और समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास तेजी से बढ़ रहा है। पीठ ने कहा, भ्रष्टाचार की जड़ का पता लगाने के लिए अधिक बहस की आवश्यकता नहीं है। हिंदू धर्म में सात पापों में से एक माना जाने वाला 'लालच' अपने प्रभाव में प्रबल रहा है। वास्तव में, पैसे की भूख ने भ्रष्टाचार को कैंसर की तरह पनपने में मदद की है।

पीएम मोदी व इटली की पीएम ने रायसीना डायलॉग 2 का किया शुभारंभ

नई दिल्ली, एजेंसी

भू-राजनीति और भू-अर्थशास्त्र पर रायसीना डायलॉग 2 शुभारंभ इटली की प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया। गुरुवार को अपने उद्घाटन भाषण में, मेलोनी ने कहा कि भारत और इटली कानून के शासन में गहरा विश्वास रखते हैं, जहां एक एक मानव-केंद्रित दृष्टि, जिसमें लोकतंत्र, शांति, विज्ञान और प्रगति साथ-साथ चलती है।

वैश्विक अशांति के समय में मजबूत नेतृत्व की आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित करते हुए उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, युद्ध और तेजी से डिजिटल संक्रमण से उत्पन्न खतरों का सामना केवल अधिक अंतरराष्ट्रीय सहयोग और संकल्प के माध्यम से ही किया जा सकता है। मेलोनी ने यूरोप और इंडो-पैसिफिक के बीच बढ़ती कनेक्टिविटी और व्यापार और रणनीतिक साझेदारी के लिए इसके सकारात्मक प्रभाव की ओर इशारा किया। उन्होंने एक वैश्विक समूह के रूप में जी20

के महत्व को भी पहचाना, जो संयुक्त रूप से जटिल चुनौतियों का समाधान कर सकता है, और प्रधान मंत्री मोदी को जी20 अध्यक्ष के रूप में भारत के हस्तक्षेप के लिए इटली के समर्थन का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि जी20 एजेंडे को आगे बढ़ाने की संयुक्त प्रतिबद्धता आपसी हित के कई क्षेत्रों में से एक है और भारत व इटली ने हाल ही में अपने द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाने का फैसला किया है। इस अवसर पर भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। उन्होंने टिप्पणी की कि जब दुनिया अभूतपूर्व अनिश्चितता का सामना कर रही है, तब हर चुनौती के लिए समाधान करने के लिए एक सक्षम नेतृत्व मौजूद है।

भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किये जाने के खिलाफ विजय माल्या की याचिका खारिज

नई दिल्ली, एजेंसी

उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को संकटग्रस्त कारोबारी विजय माल्या की वह याचिका खारिज कर दी, जिसमें उन्होंने मुंबई की एक अदालत में उन्हें भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किये जाने और उनकी संपत्तियों को जब्त करने की कार्यवाही को चुनौती दी थी। माल्या का प्रतिनिधित्व करने वाले वकील ने शीर्ष अदालत को अवगत कराया कि उन्हें इस मामले में अपने मुवक्किल से कोई निर्देश नहीं मिल रहा है, जिसके बाद शीर्ष अदालत ने मुकदमा न चलाने की याचिका खारिज कर दी। न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति राजेश बिंदल की पीठ ने कहा, याचिकाकर्ता के वकील का कहना है कि याचिकाकर्ता उन्हें कोई निर्देश नहीं दे रहा है।

इस बयान के मद्देनजर, मुकदमा न चलाने संबंधी याचिका खारिज की जाती है। शीर्ष अदालत ने माल्या को भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम के तहत भगोड़ा घोषित करने को लेकर मुंबई में विशेष धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) अदालत के समक्ष प्रवर्तन निदेशालय की याचिका की सुनवाई पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था। इससे पहले शीर्ष अदालत ने सात दिसंबर, 2018 को माल्या की याचिका पर ईडी को नोटिस जारी किया था।

मुंबई की विशेष अदालत ने पांच जनवरी, 2019 को अधिनियम के तहत माल्या को 'भगोड़ा' घोषित किया था। अधिनियम के प्रावधानों के तहत, एक बार किसी व्यक्ति को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किए जाने के बाद, अभियोजन एजेंसी के पास उसकी संपत्ति को जब्त करने की शक्तियां होती हैं। मार्च 2016 में ब्रिटेन भाग गया माल्या 9,000 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी के मामले में भारत में वांछित है। कई बैंकों ने बतौर ऋण किंगफिशर एयरलाइंस (केएफए) को यह राशि दी थी। शीर्ष अदालत ने एक अलग मामले में 11 जुलाई, 2022 को, माल्या को अदालत की अवमानना के लिए चार महीने की जेल की सजा सुनाई थी और केंद्र को भगोड़े व्यवसायी की मौजूदगी सुनिश्चित करने का निर्देश दिया था, ताकि भगोड़ा कारोबारी सजा भुगत सके।

पर्यटन | **मिशन मोड में पर्यटन का विकास : डिजिटल सम्पर्क आधुनिक बनाएगा मंत्रालय**

देश में सुविधाएं बढाई जाएंगी, तो पर्यटकों की संख्या बढेगी : पीएम

नई दिल्ली, एजेंसी

पर्यटन मंत्रालय अगले कुछ वर्षों में पर्यटन एप्लीकेशन और डिजिटल सम्पर्क को और अधिक आधुनिक बनाएगा। ये संयुक्त राष्ट्र की सभी भाषाओं और भारतीय भाषाओं में उपलब्ध होगा।

केंद्रीय बजट में घोषित पहलों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए विचारों और सुझावों के लिए सरकार द्वारा आयोजित किए गए पोस्ट-बजट वेबिनार में शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संबोधित किया। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि देश में पर्यटन क्षेत्र को नई ऊंचाई देने के लिए दीर्घकालिक योजना बनाने पर विचार करने की आवश्यकता है।

भारत की पर्यटन संभावना को बढ़ावा देने पर बजट उपरान्त वेबिनार को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि भारत के पर्यटन क्षेत्र को तटीय, मैनग्रोव, हिमालयी, एडवेंचर, वन्य जीवन, पारिस्थितकीय, विरासत और आध्यात्मिक पर्यटन के रूप में बढावा दिया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि इस वर्ष के केन्द्रीय बजट में पर्यटन क्षेत्र को समग्र रूप से बढावा देने का प्रावधान किया गया है। भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक सभ्यता का पर्यटन सदा ही एक हिस्सा रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि अगर हमारे देश में सुविधाएं बढाई जाएंगी, तो पर्यटकों की संख्या बढेगी। उन्होंने कहा कि यात्रा की सुगमता बढेगी, तो

पर्यटक आकर्षित होंगे। वाराणसी के काशी विश्वनाथ धाम और केदारनाथ धाम इसके जीवन्त उदाहरण है। प्रधानमंत्री ने कहा कि नागरिक सुविधाएं, डिजिटल सम्पर्क, स्वच्छता और बेहतर अवसंरचना पर्यटन को बढावा देने में सहायक होंगे। उन्होंने कहा कि पर्यटकों की बढती संख्या से रोजगार के अवसर बढेंगे।

पीएम मोदी ने कहा कि भारत विदेशी पर्यटकों के अभूतपूर्व आगमन का साक्षी बन रहा है। उन्होंने कहा कि बेहतर योजना से इस अवसर का लाभ उठाने की आवश्यकता है। मोदी ने कहा कि और अधिक विदेशी यात्रियों के आगमन को बढावा देने के लिए एक कार्यनीति बनाने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि पर्यटन सामग्री की रूपरेखा तैयार करने में सभी भाषाओं का प्रयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने पर्यटन एप्लीकेशन और डिजिटल सम्पर्क को और अधिक आधुनिक बनाने की बात कही। मोदी ने कहा कि यह संयुक्त राष्ट्र की सभी भाषाओं और भारतीय भाषाओं में उपलब्ध होना चाहिए।

मंत्रालय के अनुसार इन ब्रेकआउट सत्रों के विषय पर्यटन विकास के लिए गंतव्य केंद्रित धष्टिकोण, अभिसरण - सहयोग की शक्ति, पर्यटन क्षेत्र में सार्वजनिक निजी भागीदारी को मजबूत करना, पर्यटन क्षेत्र में नवाचार और डिजिटलीकरण को बढ़ावा देना, पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए जमीनी स्तर पर जीवन को प्रभावित करना है।

संक्षिप्त खबरें

पतिलार पंचायत में शिक्षा समिति सदस्यों ने किया विधालयों का निरीक्षण

बगहा (नगर संवाददाता) बगहा अनुमंडल अंतर्गत बगहा एक प्रखंड के पतिलार पंचायत में शुक्रवार को पंचायत स्तरीय शिक्षा समिति के द्वारा पंचायत के सभी विद्यालयों का औचक निरीक्षण किया गया। शिक्षा समिति के अध्यक्ष डॉ अभिषेक मिश्रा ने बताया की किसी भी देश और समाज के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षित लोगों का होना बहुत ही जरूरी होता है। बेहतर शिक्षा मिलने से बच्चे देश और समाज को विकास से विकसित की तरफ ले जाने का काम करेंगे। जिसको लेकर पंचायत के सभी विद्यालयों में विद्यालय में पठन-पाठन साफ-सफाई और शिक्षकों की उपस्थिति से संबंधित सभी पहलुओं का बारीकी से निरीक्षण किया गया। सभी मिलकर एक शिक्षित समाज का निर्माण किस तरह हो इस पर भी चर्चा की गई। वही मध्यान भोजन की गुणवत्ता की भी जांच की गई। इस अवसर पर शिक्षा समिति के सदस्य कृष्णा पासवान, अभय उपाध्याय, प्रहलाद चौधरी, लक्ष्मण चौधरी सहित लोग मौजूद रहे।

साइकिल के साथ दो चोर को गिरफ्तार किया गया

दानापुर। रूपसपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत थाने के पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर रूपसपुर आरओबी के पास छापेमारी कर चोरी के दो साइकिल के साथ दो चोर को गिरफ्तार किया गया है. थानाध्यक्ष अवधेश कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना मिला कि रूपसपुर आरओबी के पास चोरी का साइकिल बेचने के लिए दो युवक पहुंचे है. सूचना के आधार पर छापेमारी कर चोरी के दो साइकिल के साथ करण कुमार चिचौल नौबतपुर व रूपसपुर चमर टोली निवासी विकास कुमार को गिरफ्तार किया गया है. गिरफ्तार करण व विकास से पूछताछ के बाद न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

दानापुर पोकलेन से मुख्य नाला का उडाही कार्य शुरू किया गया

दानापुर. नगर परिषद प्रशासन द्वारा बेली रोड के मुख्य नाला का पोकलेन व जेसीबी मशीन से उडाही कार्य शुरू कर दिया है. परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी सुशील कुमार ने बताया कि सगुना मोड से रूपसपुर नहर तक सडक के दोनों किनारे मुख्य नाला का उडाही कार्य शुरू कर दिया गया है. उन्होंने बताया कि परिषद प्रशासन द्वारा अपने स्तर से बडे नाला का उडाही कार्य कराया जा रहा है. उन्होंने बताया कि परिषद क्षेत्र के बडे नालों को पोकलेन व जेसीबी मशीन से उडाही किया जायेगा. ताकि मानूसन में जल जमाव से लोगों को निजात मिलेगा . उन्होंने बताया कि वार्डों में रोस्टर बनाकर दैनिक सफाई कर्मी द्वारा नाला का उडाही कार्य किया जायेगा।

शादी में गरीब कन्या को सामान प्रदान किया

पटना सिटी (प्राकि)। लक्ष्मी अपराजिता सेवा संस्थान के सचिव श्रीमती बैधुबाला सिन्हा के द्वारा शाहगंज नहर रोड, प्रोफेसर कॉलोनी के पास कन्या विवाह दान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कन्या विवाह दान कार्यक्रम के तहत गरीब बेटियों को उसकी विवाह के समय उपहारस्वरूप पलंग, गद्दा, तकिया, ट्रंक और कुर्सी, इत्यादि सामान प्रदान की। अभी तक लक्ष्मी अपराजिता संस्थान के सौजन्य से लगभग 107 कन्या को विवाह पर विवाह सामाग्री गरीब बेटियों को दे चुकी हैं। राधा कुमारी की कल विवाह होने वाली है, उसे भी उपहारस्वरूप सामग्री दिया गया।

होली की उमंग मनाया कुष्ठ रोगियों के संग

पटना सिटी, प्रातःकिरण संवाददाता समाज से कुष्ठ रोगी के प्रति फैली भ्रांतियों एवं छूआछूत को दूर करने तथा कुष्ठ रोग से ग्रसित व्यक्तियों के चेहरे पर थोड़ी सी मुस्कान लाने के उद्देश्य से स्थानीय कुष्ठ नियंत्रण इकाई, गुलजारबाग के प्रांगण में होली की उमंग कुष्ठ रोगियों के संग कार्यक्रम किया गया। मौके पर पूर्व मंत्री श्याम रजक ने अतिथि के रूप में भाग लिया। मौके पर समाजसेवी राजेश बल्लव उर्फ मुन्ना यादव, स्थानीय प्रभारी सह-नामित जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी डा सुनीति सिन्हा, स्थानीय कुष्ठ केंद्र प्रभारी सह कार्यक्रम आयोजक मो अली के साथ साथ जिला कुष्ठ निवारण कार्यालय के पदाधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

संत जोसेफ स्कूल का प्रमुख विजया सिंह ने किया उद्घाटन

प्रात : किरण संवाददाता

बगहा (नगर संवाददाता)शिक्षा जगत में नये पीढ़ी को नई सोच के साथ शुक्रवार को धनहा थाना क्षेत्र के तमकुहवा में संत जोसेफ स्कूल का मधुबनी प्रखंड के मुख्य अतिथि के रूप में प्रमुख विजया सिंह से अपने हाथों से उदघाटन समारोह में फीता काटकर उदघाटन किया। इस दौरान प्रखंड प्रमुख विजया सिंह ने समारोह में पहंचे छात्रों, शिक्षकों तथा अतिथियों के बीच कहा कि देश का भविष्य नये जनरेशन पर ही आधारित है। जिसके लिए भारत सरकार के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने डिजिटल इंडिया का शुभारंभ किया। जो वैश्विक कीर्तिमान के रूप में देखा जा सकता है। इसी कड़ी में सामाजिक तथा गरीब व मध्यम वर्गीय परिवार के बच्चों को इस स्कूल में बेहतर से बेहतर शिक्षा के साथ साथ व्यवहारिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण शिक्षा मुहैया योग्य शिक्षक के अधीन पढ़ाई के रूप में किया जाना है। छात्रों के अभिभावक को चाहिए कि अपने बच्चों की भविष्य उज्जवल हो ।इसके लिए विशेष रूप से ध्यान रखने की जरूरत है। यही नहीं स्कूल प्रबंधन की कोई भी कमी यदि होती है तो बेखौफ मेरे नम्बर या मेरे प्रमुख कार्यालय में संपर्क कर इसकी शिकायत जरूर करें। इस पर कठोर कारवाई की जाएगी। शिक्षा और स्वास्थ्य के लिये जो कुछ भी करना पड़े हम करने के लिए 24 घन्टे तैयार हैं। किसी भी ब्यक्ति को विशेष तौर पर दलाली या चापलूसी इस सिस्टम में बर्दाश्त नहीं है।

शिक्षा ग्रहण करना भारत देश के लिये अनिवार्य अर्थ है। बेशक नौकरियों के लिए नहीं बल्कि सामाजिकता के मूल रूप से जीवन शैली बदलने के लिए बेहद जरूरी है। इसी संदर्भ में स्कूल के प्राचार्य मनोहर गुप्ता ने कहा कि इस गंडक पार के दुर्लभ स्थल पर शिक्षा की शुरूआत बेहतर अनुभूति हुई है। हिसाबन सीबीएससी पैटर्न से स्टेंडर्ड वन से लेकर सातवां वर्ग के बच्चों को इसी माध्यम से स्कूल में पढ़ाई करना बेहतर शिक्षा पर्याय बन रहा है।

सेना में बहाली करने के नाम पर ठगी करने वाले गिरोह के मुख्य सरगना व फर्जी कर्नल को पुलिस गिरफ्तार करने में विफल

प्रात : किरण संवाददाता

दानापुर। थाना क्षेत्र के अंतर्गत थाना के पुलिस ने गिरोह के तीन दलालों को गिरफ्तार कर पूछताछ के बाद न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। गिरफ्तार दलाल शमी राज, सतीश कुमार उर्फ सन्नी व रंजन कुमार ने पुलिस के समक्ष स्वीकार किया था कि मुख्य सरगना रोतहास के चेनारी के सोनू सिंह व रवि कुमार है। इनके पर ही भोले-भाले युवकों को झांसा में फंसाकर सेना , डाक , संचार समेत अन्य विभाग में नौकरी दिलाने के नाम पर ठगी करते थे और सोनू व रवि युवकों को सैनिक अस्पताल बुलाकर फर्जी मेडिकल पास होने जाने का विश्वास दिलाकर मोटी रकम लेकर फर्जी ज्वाइनिंग लेटर देता था ।साथ ही सोनू व रवि युवकों को अपने आपको कर्नल बनाकर फोन कर झांसा में फंसाकर सेना में बहाली करने व मेडिकल पास करने का दावा करता था। आर्मी इंटेलिजेंस यूनिट व पुलिस ने गिरफ्तार गिरोह के दलालों का पूर्व सेना दलालों के तार जोड कर जांच पडताल किया जा रहा है। कई पूर्व दलालों फर्जी तरीके से अपने बाइक पर प्रेस लिखकर सेना इलाके में घूमते भी नजर आते है । बताया जाता है कि आर्मी सप्लायर व ठेकेदार के आडे में उनके रिश्तेदारों सेना दलाली भी करते है। इसकी भी जांच पडताल किया जा रहा है। थानाध्यक्ष केपी सिंह ने बताया कि पिछले 13 फरवरी को आर्मी इंटेलिजेंस यूनिट के सहयोग से सैनिक अस्पताल के बाहर से सेना में बहाली करने के नाम पर ठगी करने वाले गिरोह के शमी राज, सतीश कुमार उर्फ सन्नी व रंजन को रंगे हाथ गिरफ्तार किया गया था। गिरफ्तार के पास से फर्जी संचार , डाक व सेना के ज्वाइनिंट लेटर , 13 मोबाइल, 95 हजार नगद रुपए , एक बाइक समेत अन्य कागजात बरामद किया गया था। जबकि गिरोह के मुख्य सरगना सोनू सिंह व रवि कुमार के गिरफ्तारी के लिए सघन छापेमारी किया जा रहा है।

मंगल तालाब परिसर में कैफेटेरिया, टिकट काउंटर व मुक्ताकाश मंच की होगी मरम्मत : नंदकिशोर

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

बिहार विधानसभा में शुक्रवार को नंदकिशोर यादव के प्रश्न का लिखित उत्तर देते हुए पर्यटन मंत्री ने बताया कि पटना साहिब के मंगल तालाब परिसर में पर्यटन विभाग द्वारा निर्मित सूचनाओं के प्रबंधन एवं रखरखाव के लिए समिति गठित है, जो इसकी देखरेख करती है। सरकार के उत्तर में कहा गया कि बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम, पटना द्वारा कैफेटेरिया, टिकट काउंटर एवं मुक्ताकाश मंच के लिए अनुरक्षण एवं मरम्मत से संबंधित प्राक्कलन प्राप्त हुआ है। प्राप्त प्राक्कलन की समीक्षा के बाद अग्रेतर कार्रवाई की जाएगी।

इससे पूर्व भाजपा विधायक श्री यादव ने अपने प्रश्न में पूछा था कि पटना साहिब विधानसभा क्षेत्र की हृदय स्थली मंगल तालाब परिसर में 2006-07 में सामुदायिक भवन, ऑडिटोरियम, स्टेडियम, ओपन एयर थिएटर एवं कैफेटेरिया का निर्माण पर्यटन विभाग द्वारा कराया गया था। लेकिन रखरखाव के अभाव में उपरोक्त भवन क्षतिग्रस्त हो गया है। इसकी मरम्मत की शीघ्र जरूरत है। हालांकि रामदेव महत्व सामुदायिक भवन और घसीटा कहार एसी ऑडिटोरियम के निर्माण होने के बाद से अब तक इस भवन का न तो मरम्मत हो पाई है और न ही कभी रंग-रोगन का ही काम हो पाया है। संपन्न 356वां प्रकाश पर्व की तैयारी को लेकर पुलिस प्रशासन के जिला कप्तान और विभिन्न विभागों के अधिकारी व पदाधिकारियों की बैठक में भी इस मामले को एक पत्रकार के द्वारा उठाया गया था। तब डीएम डॉ चंद्रशेखर ने सिटी एसडीओ से कहा था कि जब समिति के कोष में राशि उपलब्ध है, तो रंग-रोगन करा दिया जाए। मगर उक्त आदेश के करीब ढाई माह बीतने के बाद भी मरम्मत एवं रंग-रोगन का काम नहीं हो पाया है।

निशान शोभायात्रा निकाल खाटू नरेश को किया अर्पित

मालसलामी से गुरहट्टा के बीच भक्तिमय हुआ माहौल, यातायात प्रभावित

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

रंग रंगीला फागुन महोत्सव के दूसरे दिन श्याम मंदिर सेवा ट्रस्ट के बैनर तले शुक्रवार को निशान ध्वजा शोभायात्रा मालसलामी स्थित श्री बिहारी जी मिल्स से निकाली गई। लाल, पीले, गुलाबी प्रधानों में श्याम बाबा के भक्त केसरिया दुपट्टा ओढ़े हाथों में जयश्री श्याम का ध्वजा लिए निकल पड़े। बाबा को निशान अर्पित करने के पूर्व श्री बिहारी जी मिल्स में गुरुवार की रात बाबा का भजन कीर्तन चलता रहा। भक्त झूम-झूम कर बाबा को रिझा और गा रहे थे। आए हैं दिन फागण के आए दिन फागण के, ले हाथों में निशान बाबा के द्वारे जाते हैं। आयो फागन मेलो बाबो माहरो हेलो। खाटू को श्याम रंगीलो रे खाटू को, जैसे अनेक भजनों पर भक्त झूमते, गाते और नाचते रहे। भक्तों ने शोभायात्रा के पूर्व बाबा को अरदास लगाया, ज्योत दी और उसके बाद निकल पड़े अशोक राजपथ पर। आगे-आगे हाथी, घोड़े और ऊंट चल रहे थे। उसके बाद नागपुर से आया ढोल पार्टी अपनी छटा बिखेर रही थी। आधा दर्जन बैंड पार्टी शोभायात्रा की रौनक बना रही थी। सुसज्जित पालकी पर खाटू वाले श्याम प्रभु विराजित थे। इस दौरान श्याम प्रभु के जयकारा से माहौल भक्तिमय हो गया। श्रद्धालुओं के स्वागत में जगह-जगह स्वागत तोरण द्वार पटना सिटी की विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों द्वारा बनाया गया था। सड़कों पर जल का छिड़काव किया गया। रास्ते में श्याम भक्तों का पुष्प वर्षा से स्वागत किया गया। पीने का पानी, ठंडाई, शरबत, फल, टॉफी व बिस्कुट से भक्तों का स्वागत किया गया। निशान शोभायात्रा मालसलामी, मारूफगंज, हाजीगंज, झाऊगंज, शहीद भगत सिंह चौक, मचछरहट्टा, गुरहट्टा होते हुए वापस चौक स्थित श्री श्याम मंदिर में समाप्त हुआ। श्री श्याम भक्त 501 रंग-बिरंगे निशान और चांदी के निशान बाबा को अर्पित किए। शोभायात्रा का नेतृत्व अध्यक्ष अमर अग्रवाल, रमन साह, गौरव साह, नारायण साह, दिलीप डिडवानिया, राहुल अग्रवाल, मनीष हरलालका, राजू सुल्तानिया, संजीव देवड़ा, राजकुमार गोयनका, मनोज खेतान, सोनू बेरीवाल, पप्पू मोदी, शिव प्रसाद मोदी आदि सदस्य सक्रिय थे। शाम में भजन संध्या का आयोजन मंदिर प्रांगण में हुआ ।कोमल चोपड़ा द्वारा भक्ति गीत गंगा बहाई गई। रात तक भजन का दौर चलता रहा।

होली व शबे बरात मिलजुल कर मनाएं, रहेगी चौकसी

पटना सिटी। होली और शबे बरात को लेकर शुक्रवार को शांति समिति व विभागीय पदाधिकारियों की बैठक एसडीओ मुकेश रंजन की अध्यक्षता में हुई। इसमें त्योहार को मिलजुल कर मनाने, डीजे बजाने पर प्रतिबंध रहने, अश्लील गीत नही बजाने पर प्रतिबंध रहेगा। होलिका दहने वाले स्थल, मजार व कब्रिस्तान के पास पुलिस निगरानी रखने सहित अन्य बिंदु के अनुपालन में सहयोग की अपील शांति समिति के सदस्यों से की गई। एसडीओ ने सदस्यों को बताया कि होली के अगले दिन बसियौरा में मटका फोड़ कार्यक्रम में आयोजन स्थल का पता व समय थानाध्यक्ष को दें, ताकि पुलिस टीम उस समय वहां मौजूद रह विधि व्यवस्था सुनिश्चित कर सकें। सरकार के गाइड लाइन का अनुपालन करना होगा। बैठक में उपस्थित एएसपी अमित रंजन ने बताया कि थानाध्यक्षों को विधि-व्यवस्था बनाए रखने के लिए आवश्यक निर्देश दिया गया है। इसमें कहा गया है कि गलियों से लेकर सड़क तक सघन गश्ती की व्यवस्था हो। संवेदनशील स्थानों पर कड़ी निगरानी रखी जाए। बैठक में कार्यपालक दंडाधिकारी मंजू कुमारी, कुंवर जी, थानाध्यक्षों, नगर निगम, फायर व विद्युत विभाग के अभियंता व अस्पताल के पदाधिकारी के साथ शांति समिति सदस्यों में राजेश साह, रामजी योगेश, अंजू सिंह, मो फिरोज हसन, पूर्व पार्षद गुलफिशां जबीं, चुन्नू चंद्रवंशी, विश्वनाथ चौधरी, प्रफुल्ल पांडेय, अनिता पांडेय, संजय अलबेला आदि उपस्थित थे।

गौरी शंकर मंदिर के शिवलिंग के अरघा को चांदी से मढ़ा

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

श्री गौरीशंकर मंदिर न्यास समिति, गायघाट के द्वारा महाशिवरात्रि पर्व के सफल आयोजन एवं माता गौरी सहित महादेव के शिवलिंग के नीचे के अरघा को महाकाल एवं काशी विश्वनाथ शिवलिंग की तर्ज पर चांदी के पांच किलो प्लेट से अरघा का निर्माण कराया गया। दानदाता बजरंगपुरी के संजय कुमार के सौजन्य से स्थायी शिवलिंग में फिटिंग करवाया गया। मंदिर परिसर में महाशिवरात्रि को लेकर बाबा महादेव एवं माता शिव-गौरी की शादी के उपलक्ष्य में होली मिलन का कार्यक्रम मंदिर परिसर में किया गया। इसमें मंदिर के 12 मासी भक्तों एवं स्थानीय सिटी अनुमंडल के पुलिस प्रशासन के पदाधिकारीगण और गण्यमान्य लोग, मंदिर के न्यासी सदस्यगण, पुजारी एवं सेवाकर्मी उपस्थित रहे। बाबा भोलेनाथ को होली का अबीर गुलाल और बाबा के भोग में लगे होली के व्यंजन पूरी, पुआ, सब्जी, दहीबड़ा का भोग लगाकर मंदिर में पधारे भक्तों को प्रसाद ग्रहण करा कर अबीर गुलाल लगाकर किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में मंदिर के अध्यक्ष सह एसडीओ मुकेश रंजन, उपाध्यक्ष राजेंद्र यादव, सचिव विश्वनाथ चौधरी, कोषाध्यक्ष दिलीप गुप्ता, संजय कुमार, अवधेश कुमार, शंकर चौधरी, संजय सिंह, बबलू आदि काफी सक्रिय थे।

भीम चौपाल, प्रकाशोत्सव एवं भीम संवाद की सफलता हेतु जदयू प्रभारियों की बैठक

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। डॉ भीमराव अंबेदकर जंयती 14 अप्रैल को प्रत्येक पंचायत-वार्ड में बाबा साहेब की जयंती पर भीम चैपाल लगाने तथा पूर्व संध्या 13 अप्रैल को प्रकाशोत्सव मनाने की तैयारी के लिए प्रत्येक अनुमंडल में 4 मार्च से भीम संवाद कार्यक्रम शुरू करने एवं बाबा साहेब के संदेशों को अनुसूचित जाति के घर-घर स्टीकर एवं पर्चा के माध्यम से पहुँचाने का निर्णय पार्टी ने लिया है। उपयुक्त कार्यक्रम की सफलता हेतु राष्ट्रीय सचिव सह विधानपार्षद रवीन्द्र प्रसाद सिंह, अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष सह पूर्व मंत्री संतोष कुमार निराला एवं पार्टी के प्रदेश महासचिव चंदन कुमार सिंह ने प्रभारियों संग प्रदेश कार्यालय में बैठक की। भीम संवाद कार्यक्रम के लिए पार्टी नेताओं के नेतृत्व में चार टीम बनायी गयी है जो 4 मार्च से राज्य के सभी 101 अनुमंडलों में कार्यक्रम करेगी। साथ ही पार्टी के कार्यकताओं ने अनुसूचित जाति के घर-घर बाबा साहेब के संदेशों को स्टीकर एवं पर्चा के माध्यम से पहुंचाने का कार्य शुरू कर दिया है। आज की बैठक में विधानपार्षद रवीन्द्र प्रसाद सिंह, पूर्व मंत्री संतोष कुमार निराला, पार्टी के प्रदेश महासचिव चंदन कुमार सिंह, पूर्व विधानपार्षद सतीश कुमार, रविन कुमार सिन्हा, परमहंस कुमार, शुभानंद मुकेश, मो अब्दुल क्यूम अंसारी, मुकेश विद्यार्थी, प्रहलाद सरकार, राजकिशोर प्रसाद तथा डॉ धर्मेन्द्र चंद्रवंशी उपस्थित रहे। भीम संवाद के लिए मंत्री सुनील कुमार, पूर्व मंत्री महेश्वर हजारी, पूर्व सांसद कैलाश बैठा, विधायक रत्नेश सदा एवं पूर्व विधान पार्षद राजेश राम की टीम पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, मुजफ्फरपुर, वैशाली, समस्तीपुर, खगड़िया एवं बेगूसराय जिलों के अनुमंडलों में कार्यक्रम करेगी करेगी। जबकि पूर्व मंत्री संतोष कुमार निराला, पूर्व मंत्री मुनेश्वर चौधरी, पूर्व विधायक अरुण कुमार मांझी, पूर्व विधायक ललन पासवान, पूर्व विधायक प्रभुनाथ राम एवं पूर्व विधायक रेणु देवी की टीम गोपालगंज, सिवान, सारण, पटना, रोहतास, कैमूर, भोजपुर, बक्सर, औरंगाबाद, एवं पटना जिलों के अनुमंडलों में भीम संवाद करेगी। मंत्री अशोक चौधरी, सहरसा, पूर्णियां एवं अररिया जिलों के अनुमंडलों में भीम संवाद करेंगे।

उत्पाद विभाग के पदाधिकारियों के नेतृत्व में भैरोगंज पुलिस ने चलाया मदरहनी में छापेमारी

प्रात : किरण संवाददाता

बगहा (नगर संवाददाता) बगहा पुलिस जिला अंतर्गत भैरोगंज थाना पुलिस ने होली के मद्देनजर शराब धंधेबाजों के विरुद्ध काफी सख्त है। साथ ही उत्पाद विभाग के पदाधिकारी भी होली में शराब कारोबारियों की मनसुबे को ध्वस्त करने के लिए लगातार मुहिम चला रहे हैं।

इस दौरान उत्पाद विभाग के अधिकारियों व भैरोगंज थाना पुलिस के संयुक्त अभियान में थाना क्षेत्र के मदरहनी गांव में छापेमारी चला कर कारोबारियों की मनसुबे को ध्वस्त किया है । भैरोगंज थानाध्यक्ष राम उदय ने बताया कि उत्पाद विभाग के एसडीएम व डीएसपी के नेतृत्व में मदरहनी गांव में छापेमारी अभियान चलाई गई। छापेमारी के क्रम में 119 लीटर देशी चुलाई शराब बरामद किया गया। तथा अर्द्ध निर्मित पॉस लगभग दो हजार लीटर विशिष्ट किया गया। उन्होंने बताया कि छापेमारी के दौरान एक शराब कारोबारी को गिरफ्तार किया गया। थानाध्यक्ष ने बताया कि गिरफ्तार धंधेबाज की पहचान मदरहनी गांव के नरेश उरांव के रुप में की गई है। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार शराब कारोबारी के विरुद्ध बिहार उत्पाद अधिनियम के तहत मामला दर्ज करते हुए शुक्रवार को न्यायिक हिरासत में बगहा भेजा गया।

फर्जी हल्का कार्यालय चलाने के के मामले में दो आरोपी अभी तक फरार चल रहे हैं

प्रात : किरण संवाददाता

दानापुर। थाना क्षेत्र के अंतर्गत फर्जी तरीके से अंचल कार्यालय के हल्का कार्यालय चलाने के मामले में फरार चल रहे मुंशी उमेश ठाकुर व मकान मालिक राजीव कुमार सिंह उर्फ मंटू को पुलिस अब तक गिरफ्तार नहीं कर पायी है. बताया जाता है कि पिछले 8 दिसंबर को एसडीओ प्रदीप सिंह ने गुप्त सूचना के आधार पर आरपीएस मोड़ स्थित बालाजी होम्स भवन के तीसरी मंजिल पर एम कॉपोर्रेशन हल्का के अवैध हल्का कार्यालय में छापेमारी की थी।

छापेमारी में पंकज कुमार को लैपटॉप व प्रिंटर के साथ पकडा गया था. साथ ही शुद्धि पत्र, हल्का में संधोरित दाखिल -खारिज पंजी, खतियान और रजिस्टर टू के दस्तावेज , जमाबंदी पंजी , दाखिल खारिज और परिमार्जन के आवेदन, अंचल कार्यालय का सील समेत अन्य सरकारी दस्तावेज बरामद हुए थे. जबकि मुंशी उमेश ठाकुर फरार हो गया था.सीओ अमत राज बंधु ने स्थानीय थाना में मुंशी उमेश ठाकुर , पंकज कुमार व मकान मालिक राजीव कुमार सिंह के विरूद्ध मामला दर्ज कराया गया था. इसी मामले में पिछले दिनों व्यवहार न्यायालय के अपर जिला व सत्र न्यायाधीश 6 ब्रजेश कुमार सिंह ने आरोपित उमेश ठाकुर व मकान मालिक राजीव कुमार सिंह के अग्रिम जमानत याचिका खारिज करते हुए पुलिस को गिरफ्तारी करने का सख्त आदेश दिया था. इसके बाद कांड के अनुसंधानकर्ता द्वारा फरार मुंशी उमेश ठाकुर व मकान मालिक राजीव को गिरफ्तारी करने के बजाय चुप्पी साधे हुए हैं. सिटीएसपी पश्चिम राजेश कमार ने बताया कि फरार नामजद आरोपित की गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है और जल्द गिरफ्तार किया जायेगा।

होली मिलन समारोह में खूब उड़े रंग-गुलाल

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। होली के नजदीक आते ही होली मिलन समारोह का सिलसिला शुरू हो गया है। टोले-मोहल्लों में रंग-अबीर और लजीज पकवानों की खुशबू फिजां में फागुनी बयार को और भी मदमस्त बना रही है। कहीं ढोलक और मंजीरे की थाप पर मस्ती में झूमती महिलाओं की टोली दिख रही है और कहीं फगुआ की तान के बीच हंसी-ठिठोली करती नवयौवनाएं। महेंद्रू स्थित व्योम सभागार में अलका साहू और अंजू जायसवाल के संयोजन में आयोजित होली मिलन समारोह में महिला मंडल की सदस्यों ने जम कर होली खेली। इस दौरान स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ भी उठाया। इस दौरान होली गीत पर जम कर ठुमके भी लगे। कार्यक्रम में श्वेता, प्रीति, सुनीता, पिंकी, अलका, रचना, संगीता, नीतू, प्रतिभा, कंचन, पूनम सहित महिला मंडल की अन्य सदस्यों ने अपनी मधुर आवाज में लोकगीतों की मनोहारी प्रस्तुति भी दी। कार्यक्रम को सफल बनाने में रिंकी और निर्मला ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

होली की उमंग मनाया कुष्ठ रोगियों के संग

पटना सिटी। समाज से कुष्ठ रोगी के प्रति फैली भ्रांतियों एवं छूआछूत को दूर करने तथा कुष्ठ रोग से ग्रसित व्यक्तियों के चेहरे पर थोड़ी सी मुस्कान लाने के उद्देश्य से स्थानीय कुष्ठ नियंत्रण इकाई, गुलजारबाग के प्रांगण में होली की उमंग कुष्ठ रोगियों के संग कार्यक्रम किया गया। मौके पर पूर्व मंत्री श्याम रजक ने अतिथि के रूप में भाग लिया। मौके पर समाजसेवी राजेश बल्लव उर्फ मुन्ना यादव, पूर्व डीएसपी विजय यादव, पूर्व नामित जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी डा पियूष कुमार, स्थानीय प्रभारी सह-नामित जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी डा सुनीति सिन्हा, स्थानीय कुष्ठ केंद्र प्रभारी सह कार्यक्रम आयोजक मो अली के साथ साथ जिला कुष्ठ निवारण कार्यालय के पदाधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। सबों ने कुष्ठ रोगियों के साथ फूल की पंखुड़ियों से होली मनाई।

रसोई गैस की कीमत बढ़ने पर सड़क पर उतरे कांग्रेसी, फूंका पुतला

पटना सिटी, । रसोई गैस की कीमत बढ़ाने से नाराज कांग्रेसी नेताओं ने मालसलामी रेलवे लाइन के समीप पुतला फूंका। अशोक यादव के नेतृत्व में केंद्र सरकार का पुतला फूंक विरोध जताया। आंदोलन में ललन राय, डा विनोद अवस्थी, मनीष गौतम, घनश्याम शर्मा, यशलोक विद्यार्थी, दीपक शर्मा, पप्पू, विजय, छोटू, दीपक, उमेश, विश्वजीत यादव, बालकिशन यादव, शंकर पासवान आदि शामिल थे। पटना साहिब स्टेशन के समीप में पूर्व प्रदेश सचिव डॉ विनोद कुमार अवस्थी के संचालन में आयोजित प्रदर्शन सह पूतला दहन में केंद्र सरकार के खिलाफ नारेबाजी की गयी. इस दौरान आयोजन में अजय जायसवाल,पार्षद मनोज मेहता, सुजीत कसेरा,कौशल किशोर सहाय, सुभाष मेहता, प्रदीप यादव, मनीष गौतम, डॉ. तुषार आर्य, पप्पू गुप्ता, अरविन्द प्रसाद, मो वकील, विजय प्रसाद, मुन्ना कुमार, आदित्य अवस्थी समेत दर्जनों कांग्रेसी उपस्थित थे। आक्रोशित कांग्रेसियों ने गैस सिलिंडर के साथ प्रदर्शन किया।

तमिलनाडु प्रकरण पर दोनों सदनों मे विपक्ष का हंगामा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार विधानमंडल के बजट सत्र के पांचवें दिन दोनों सदनों में 5वें दिन भी विपक्ष का हंगामा जारी रहा। शुक्रवार को तमिलनाडु में बिहारियों पर हो रहे हमलों को लेकर सदन में सत्ता पक्ष और विपक्ष में तीखी नोकझोंक हुई। हंगामे से नाराज स्पीकर ने भाजपा के चार विधायकों को चेतावनी भी दे दी। हंगामे को देखते हुए विधानसभा की कार्यवाही सोमवार तक के लिए स्थगित कर दी गई है। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजय सिन्हा ने कहा कि तमिलनाडु में मजदूरों के साथ घटना हो रही हैं। उन्होंने कहा कि इस मामले में तमिलनाडु के झूठ बोल रहे हैं। जमुई और मुंगेर के लोग सहमे हए हैं। पलायन कर रहे हैं। तमिलनाडु में एक टीम बनाकर भेजनी चाहिए। इसकी जांच होनी चाहिए। मामला सही निकलेगा। अगर मामला गलत निकला तो मैं माफी मांगूंगा नहीं तो आपको सदन में माफी मांगनी पड़ेगी। विजय सिन्हा के आरोपों पर उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने जवाब दिया। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु में बिहार के सभी मजदूर सुरक्षित हैं, इस पर सियासत नहीं करें। जो भी मामला है उसकी सरकार जांच करेगी। जो दोषी पाए जाएंगे उन पर कार्रवाई की जाएगी। बिहार डीजीपी ने वायरल हो रहे वीडियो को झूठा बताया है। आपको हम पर विश्वास नहीं है तो केंद्रीय गृहमंत्री इसकी जांच करवा लें। विजय सिन्हा ने कहा कि उनकी मजदूरों से बात हुई है। मजदूरों ने उन्हें बताया कि तमिलनाडु में मजदूर की हत्याएं हुई है। और वह लोग अपने घर नहीं जा पा रहे हैं। इस पूरे मामले को बिहार सरकार दबाने में लगी है। विजय सिन्हा ने कहा कि केंद्र सरकार से हम लोग बात करेंगे। बिहार सरकार जल्द से जल्द टीम को तमिलनाडु भेजकर जांच कराए। हम चुप नहीं रहेंगे। विजय सिन्हा ने कहा कि चंदन नाम का मेरे क्षेत्र का डुंमरी गांव का युवक है। उसने मुझे फोन किया। उसने कहा कि फैक्ट्री में भी सुरक्षा नहीं दी जा रही है। बस, ट्रेन सभी जगहों हमें मारा जा

रहा है। हमने यही मामला विधानसभा में उठाया। उपमुख्यमंत्री जी इस मामले को फर्जी बता रहे हैं।

बिहार विधान परिषद में भी हंगामा :

तमिलनाडु प्रकरण पर बिहार विधान परिषद में भी विपक्ष ने हंगामा किया। नेता विरोधी दल सम्राट चौधरी ने कहा कि बिहार की सरकार तमिलनाडु मामले में जनता को गुमराह कर रही है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। वहां के कई परिवार के लोग यह बता रहे कि तमिलनाडु में उनके साथ क्या-क्या हो रहा है। वहां के परिवार के लोगों की हत्या की गई है। इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा कि सरकार झूठ बोलने पर उतारू है। सरकार जनता को गुमराह कर रही है। इसकी जांच होनी चाहिए। पुलिस मुख्यालय भी दबाव में गलत बयान दे रहा है। वहीं, प्रश्नकाल के दौरान एमएलसी महेश्वर सिंह ने कहा कि कॉलेजों में प्रोफेसर क्यों नहीं पढ़ा रहे हैं? 486 करोड़ रुपए का हिसाब आज तक नहीं मिला है। यह वित्तीय अनियमितता है। कक्षा कॉलेजों में नियमित चलनी चाहिए। कस्तूरबा विद्यालय के शिक्षकों को वेतन नहीं मिल रहा है। उन्होंने यहां तक कह दिया कि जितने लोग हत्या से नहीं मर रहे हैं। उससे ज्यादा लोग रोड एक्सीडेंट में मारे जा रहे हैं। महेश्वर सिंह ने स्वरोजगार का भी मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि आज तक बैंकों ने एक पर्सेंट को ही इसके लिए लोन दिया है। बैंक बहुत दौड़ाते हैं। सिक्योरिटी मनी खोजते हैं। युवाओं का जूता घिस जाता है। जदयू के एमएलसी रामबचन राय ने कहा कि बजट आंकड़ों का महाकाव्य है। इसमें वित्त भी है और चित भी है। शिक्षा का बजट जितना बड़ा है, उतना बेहतर प्रबंधन विद्यालयों से लेकर कॉलेजों तक नहीं दिखता है। इतनी बड़ी राशि खर्च हो रही है। लेकिन इसका कोई लाभ नहीं मिल पा रहा है। इसकी निगरानी होनी चाहिए। बजट पर बोलते हुए बीजेपी के एमएलसी देवेश चंद्र मिश्रा ने कहा कि बिहार में शिक्षा में इतने प्रयोग हुए हैं कि शिक्षा की हालत खराब हो गई है। यह प्राइमरी स्कूल से लेकर हाई स्कूल तक में हुआ। कहा कि अररिया में एक स्कूल के बच्चों से आमंत्रण पत्र पढ़ने के लिए दिया। मैं यह देखकर आश्चर्यचकित हो गया पांचवी क्लास के बच्चे हिंदी में लिखा हुआ नहीं पढ़ पाए।

आम आदमी को राहत पहुंचाएगा नीतीश कुमार का बजट : रणबीर

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जनता दल यूनाइटेड के प्रवक्ता और पूर्व विधान पार्षद प्रो रणबीर नंदन ने बिहार सरकार की ओर से पेश किए गए बजट 2023-24 को जनता के प्रति सरकार की सोच प्रदर्शित करने वाला करार दिया। उन्होंने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार हमेशा समाज के सबसे आखिरी पायदान पर खड़े व्यक्ति तक सरकारी योजना का लाभ पहुंचाने की बात करते हैं। बजट से ऐसा ही होता प्रतीत होता है। वर्ष 2015 से 2020 तक नीतीश सरकार ने सात निश्चय योजना के तहत जनता के हित में ऐसे कदम उठाए, जिसने लोगों की जिंदगी को आसान बनाया। शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल की उपलब्धता से लेकर तमाम मुद्दों को सरकार ने हल करने का प्रयास किया। वर्ष 2021 में सात निश्चय पार्ट-2 पर काम शुरू हुआ। सुशासन के इस कार्यक्रम पर 5 हजार करोड़ का बजट प्रस्तावित कर मुख्यमंत्री ने साबित किया है कि सरकार के केंद्र में आम आदमी है। वित्तीय वर्ष में विकासात्मक खर्च 1,67,375 करोड़ रुपए होंगे। यह कुल अनुमानित खर्च 2,61,885.40 करोड़ रुपए का 63.91 फीसदी है। यह दशार्ता है कि सरकार की योजनाओं के केंद्र में विकासात्मक योजनाएं हैं। डॉ नंदन ने कहा कि नीतीश कुमार ने हमेशा शिक्षा को प्राथमिकता दी है। इस बार के बजट में भी शिक्षा पर 40,450.91 करोड़ रुपए खर्च करने की योजना है। प्रो नंदन ने कहा कि सरकार ने हमेशा दलित और ओबीसी कल्याण को लेकर योजनाओं को प्राथमिकता दी है। इस वित्तीय वर्ष में भी अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कल्याण, अल्पसंख्यक कल्याण और पिछड़ा एवं अति पिछड़ा कल्याण विभागों के लिए 12,439.41 करोड़ रुपए खर्च का प्रावधान किया गया है। निश्चित तौर पर ये योजनाएं सरकार की आखिरी पंक्ति में खड़े लोगों को मुख्य धारा से जोड़ने में कारगर साबित होंगे।

तमिलनाडु प्रकरण पर चिराग ने सीएम को लिखा पत्र

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने तमिलनाडु में बिहारियों के साथ हो रही अपराधिक घटनाओं पर गहरी चिंता जाहिर की है। इसे लेकर पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एवं तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन को पत्र लिखा है।

पत्र के माध्यम से उन्होंने पीड़ितों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और उन्हें उचित न्याय दिलाने की मांग की है। गृहमंत्री अमित शाह को लिखे गए पत्र में चिराग पासवान ने उन्हे प्राप्त जानकारी के आधार पर मौजूदा स्थित से अवगत कराया और बिहारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की है। वहीं, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से ऐसी परिस्थिति में बिहारियों की मदद के लिए देश के सभी राज्यों में बिहार प्रवासी केंद्र खोले जाने की मांग की है। उन्होंने नीतीश कुमार से हालात की जानकारी प्रप्त करने के लिए तमिलनाडु में एक विशेष जांच दल भेजे जाने की मांग की है।

श्री चिराग ने कहा कि वे स्वंय लगातार तमिलनाडु सरकार से संपर्क में हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से आग्रह है कि वे तमिलनाडु के मुख्यमंत्री से बात करें और वहां रह रहे बिहारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करें। साथ ही एक जांच दल को बिहार से तमिलनाडु भेजें साथी प्रवासी बिहारी केंद्र सभी राज्यों में खोलने की मांग की है । उक्त आशय की जानकारी लोजपा (रा) के प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन पासवान ने दी।

पूर्व सांसद मीना सिंह ने जदयू से दिया इस्तीफा

● बोली- प्रदेश की स्थिति बहुत ही भयावह

पूर्व सांसद मीना सिंह ने शुक्रवार को इस्तीफे का एलान कर दिया है। उनके साथ जेडीयू के कई और नेताओं ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। पूर्व सांसद ने शुक्रवार को प्रेस वार्ता के दौरान कहा कि वह नीतीश कुमार से कभी अलग नहीं होना चाहती थी लेकिन जिस तरीके से वे अपना उत्तराधिकारी बनाने का एलान कर दिया है उससे बिहार की जनता डर गयी है। आम अवाम को पुराने दौर की वापसी दिख रही है। ऐसे में जेडीयू के साथ रहना मुमकिन नहीं है। मीना सिंह ने कहा कि उनके पति स्व. अजीत कुमार सिंह कांग्रेस में थे। लेकिन बिहार में जंगलराज के खात्मे के लिए उन्होंने कांग्रेस छोड़ कर जेडीयू का साथ दिया था। मीना सिंह ने कहा कि मुझे नीतीश कुमार ने बिहार की जनता को सेवा करने का मौका दिया तो मैंने पूरी निष्ठा के साथ जेडीयू की हर लड़ाई में अपनी सहभागिता

निभाई। लेकिन अब फिर से बिहार को जंगलराज की और ढकेलने की कोशिश की जा रही है। मीना सिंह ने कहा कि 2014 में भी वे नीतीश कुमार के साथ रहीं, जबकि बहुत सारे लोग छोड़ कर उन्हें चले गए। उन्होंने कहा कि 2015 में भी बिहार में महागठबंधन बना, लेकिन आम अवाम को इसलिए चिता नहीं हुई क्योंकि पूरी मजबूती से नेतृत्व नीतीश कुमार के पास ही रहा। जब भ्रष्टाचार के छीटे सहयोगी दल पर लगे, तो बिना देर किए नीतीश कुमार ने नाता तोड लिया था। लेकिन आज की स्थिति बहुत ही भयावह है। जब से बिहार में महागठबंधन की सरकार बनी हैं, पूरे बिहार में अपराधी तांडव कर रहे हैं। हर प्रकार के अपराध की घटनाएं बढ़ी हैं, ऐसा लग रहा है कि 2005 से पहले की तरह खास तरह के लोगों के खिलाफ पुलिस को कार्रवाई करने से रोक दिया गया है। जनता परेशान है। मीना सिंह के साथ- साथ आज समता पार्टी के निर्माण काल से पार्टी के सदस्य व प्रदेश सचिव, भोजपुर के पूर्व जिलाध्यक्ष अशोक शर्मा, युवा जेडीयू के प्रदेश सचिव राकेश पाठक समेत कई नेताओं ने भी पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है।

सुप्रीम कोर्ट का फैसला स्वागत योग्य : शिवानन्द

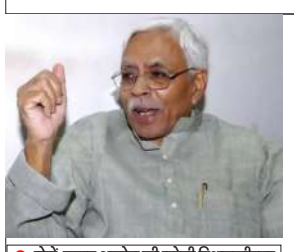

● बोलें-चुनाव आयोग की बढ़ेगी विश्वसनीयता

पटना। उच्चतम न्यायालय की संवैधानिक पीठ द्वारा भारत निर्वाचन आयोग के सदस्यों की नियुक्ति के संबंध में दिए गये फैसले का राजद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शिवानन्द तिवारी ने कोर्ट के इस फैसले का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि इससे आयोग की विश्वसनीयता बढ़ेगी। उन्होंने कह कि इस फैसले के द्वारा सुप्रीम कोर्ट ने यह संदेश भी दिया है कि वह सरकार के दबाव में आने वाली नहीं है। अभी तक चुनाव आयोग के सदस्य भारत सरकार द्वारा नामित होते थे। सरकारों द्वारा आयोग में सदस्यों की नियुक्ति पर हमेशा उँगली उठती रही है। इधर तो आयोग की विश्वसनीयता पर शंका उठाई गई है। आयोग की अविश्वसनियता से चुनावों की निष्पक्षता पर भी संदेह होने लगता है। यह लोकतंत्र के लिए घातक स्थिति है। शिवानंद तिवारी ने कहा की अब चुनाव आयोग के सदस्यों का चयन तीन सदस्यों की कमिटी द्वारा किया जाएगा। प्रधानमंत्री, लोकसभा में विरोधी दल या सबसे बड़े विरोधी दल के नेता तथा सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश कमेटी के सदस्य होंगे। इससे आयोग की विश्वसनीयता बढ़ेगी।

SUMMONS
(Order 5 Rules 1,5 and 20 of CPC)
In the Court of the Honorable Senor Civil Judge , Bhimavaram,W.G.Dt., AP State.
O.S. No. 9/2022

Between :
Krishna Priya Fishes, Bhimavaram ... Plaintiff
And
Jitendrasahani .... Defendant
Defendant Address:
JitendraSahani, S/o. Chandrika Sahani, aged about 40 years, Business, BISHNUPUR, Bishnupura, **Gopalaganj, Bihar-841 428.**
Adhar No: 5108 5206 7463

Where as the Plaintiff has instituted the above suit against you for the relief mentioned in the plaint therein, You are hereby summoned to appear in the court in person or by a pleader on the **25th day of April 2023(25-04-2023)** at 10.30 am before the above court.

Take Notice that in default of your appearance on the day mentioned above the suit will be heard and determined in your absence.

Published as per the orders of the Honorable court .

S/d .MSVV Ravi Kumar Raju
Bhimavaram Advocate, Bhimavaram
02.03.2023 **Cell: 9618034556**

लॉजिस्टिक प्लानिंग एवं बिजनेस डेवलपमेंट पर तकनीकी सेमिनार का आयोजन

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पूर्व मध्य रेल मुख्यालय हाजीपुर में शुक्रवार को को महाप्रबंधक पूर्व मध्य रेल अनुपम शर्मा की अध्यक्षता में लॉजिस्टिक प्लानिंग एवं बिजनेस डेवलपमेंट विषय पर एक तकनीकी सेमिनार का आयोजन किया गया । इस सेमिनार में अपर महाप्रबंधक श्री तरूण प्रकाश, प्रधान मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री मनोज कुमार एवं प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक श्री शिव कुमार प्रसाद सहित मुख्यालय एवं मंडलों के परिचालन एवं वाणिज्य विभाग उच्चाधिकारीगण उपस्थित थे ।

सेमिनार में बिजनेस डेवलपमेंट के तहत माल लदान हेतु मिशन 200 मिलियन टन प्लस का लक्ष्य प्राप्त करने हेतु लॉजिस्टिक प्लानिंग के

तहत यार्ड मोबिलिटी इम्प्रूवमेंट, एसेट फेल्यूर मैनेजमेंट, लॉजिस्टिक प्लानिंग फॉर अनलोडिंग टर्मिनल, गुड्स शेड में मैकेनाइज्ड अनलोडिंग तथा गारलैंड कांसेप्ट के आधार पर कोचिंग ट्रेनों की शुरूआत करने जैसे विषय पर चर्चा की गयी । इसके साथ ही सेमिनार में रेल उपभोक्ताओं को अधिकाधिक संतोषप्रद एवं सुविधाजनक सेवा प्रदान करने भी चर्चा की गयी तथा उनके विभिन्न समस्याओं एवं सुझावों के आदान-प्रदान को सुसुलभ बनाने पर विचार-विमर्श किया गया । उक्त जानकारी पूर्व मध्य रेल के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी वीरेन्द्र कुमार ने दी है।

तमिलनाडु घटना की रालोजना ने की घोर निंदा

पटना। राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता ललन कुमार चंद्रवंशी ने तमिलनाडु में बिहारी मजदूरों के साथ हुई घटना की निंदा करते हुए कहा कि आज हम सभी आजाद भारत के नागरिक है। हम सब स्वतंत्र है देश के किसी कोने में जाकर अपनी रोजी-रोटी से लेकर शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह की घटना की जितनी निन्दा की जाए कम है।

आगे चन्द्रवंशी ने कहा कि ये घटना बहुत ही निंदनीय है और इस घटना पर बिहार सरकार को कड़े कदम उठाते हुए तमिलनाडू सरकार को अविलंब हस्तक्षेप करना चाहिये, ताकि इस तरह की घटना की दोबारा पुनरावृति न हो। राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी ने बिहार सरकार से मांग की है कि बिहार में ज्यादा से ज्यादा रोजगार का सृजन कराया जाये ताकि बिहार के लोग बिहार में ही रहकर खुशहाल जिंदगी जी सके।

तमिलनाडु प्रकरण पर चिराग ने सीएम को लिखा पत्र

पटना। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने तमिलनाडु में बिहारियों के साथ हो रही अपराधिक घटनाओं पर गहरी चिंता जाहिर की है। इसे लेकर पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एवं तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन को पत्र लिखा है। पत्र के माध्यम से उन्होंने पीड़ितों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और उन्हें उचित न्याय दिलाने की मांग की है। गृहमंत्री अमित शाह को लिखे गए पत्र में चिराग पासवान ने उन्हे प्राप्त जानकारी के आधार पर मौजूदा स्थित से अवगत कराया और बिहारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की है। वहीं, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से ऐसी परिस्थिति में बिहारियों की मदद के लिए देश के सभी राज्यों में बिहार प्रवासी केंद्र खोले जाने की मांग की है। उन्होंने नीतीश कुमार से हालात की जानकारी प्रप्त करने के लिए तमिलनाडु में एक विशेष जांच दल भेजे जाने की मांग की है। श्री चिराग ने कहा कि वे स्वंय लगातार तमिलनाडु सरकार से संपर्क में हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से आग्रह है कि वे तमिलनाडु के मुख्यमंत्री से बात करें और वहां रह रहे बिहारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करें। साथ ही एक जांच दल को बिहार से तमिलनाडु भेजें साथी प्रवासी बिहारी केंद्र सभी राज्यों में खोलने की मांग की है । उक्त आशय की जानकारी लोजपा (रा) के प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन पासवान ने दी।

पूर्व मध्य रेल : ट्रेनों के परिचालन में अवरोध उत्पन्न करने वालों के विरूद्ध चलाया जा रहा है ऑपरेशन समय पालन

ऑपरेशन समय पालन के तहत 50 लोगों पर हुई कार्रवाई

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पूर्व मध्य रेल द्वारा पूर्व मध्य रेल द्वारा चलाया जा रहा ऑपरेशन समय पालन के तहत 50 लोगों पर कार्रवाई की गई है। उक्त जानकारी पूर्व मध्य रेल के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी वीरेन्द्र कुमार ने दी है। बताया गया कि बिना किसी कारण चेन पुलिंग करके रेल गाड़ियों को जहां-तहां रोकने वालों के खिलाफ नियमित कार्रवाई की जाती रही है । इसी क्रम पूर्व मध्य रेल के सुरक्षा बलों द्वारा ऑपरेशन समय पालन के तहत ऐसे लोगों पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है ताकि ट्रेनें अनावश्यक रूप से विलंब ना हो । इस विशेष अभियान में दिनांक 02 मार्च को रेलवे सुरक्षा बल द्वारा एक दिन में पूर्व मध्य रेल के विभिन्न रेलखंडों में बिना उचित कारण के चेन पुलिंग करने के आरोप में 50 लोगों को हिरासत में लिया गया । इन लोगों के विरूद्ध रेल अधिनियम की धारा 141 के तहत कार्रवाई की गई । ऑपरेशन समय पालन के तहत 2 मार्च को सबसे अधिक 32 लोग दानापुर मंडल में पकड़े गये जबकि सोनपुर मंडल में 09, पं. दीन दयाल उपाध्याय मंडल में 05, समस्तीपुर मंडल में 02 तथा धनबाद मंडल में 02 लोगों को गिरफ्तार किया गया । विदित हो कि गाड़ियों को बिना ठहराव एसीपी (चेन पुलिंग) करके रोकने के कारण यात्रियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है । लंबी दूरी वाली गाड़ियों में सफर करने वाले यात्री एसीपी के कारण और ज्यादा परेशान हो जाते हैं । यात्रियों की सुविधा के मद्देनजर पूर्व मध्य रेल द्वारा यह अभियान भविष्य में भी जारी रहेगा ।

ट्रांसजेंडर के खिलाफ 03 दिवसीय अभियान में 85 किन्नर गिरफ्तार

पटना। पूर्व मध्य रेल द्वारा ट्वीटर एवं रेल मदद एप्प पर रेल यात्रा के दौरान ट्रेनों में ट्रांसजेंडरों द्वारा यात्रियों को परेशान करने संबंधी प्राप्त कई शिकायतों के मद्देनजर 27 से 01 मार्च तक तीन दिवसीय विशेष अभियान चलाया गया । इस विशेष अभियान के दौरान रेलवे सुरक्षा बल द्वारा पूर्व मध्य रेल के विभिन्न रेलखंडों पर ट्रेनों में 85 किन्नरों को यात्रियों को परेशान करने के आरोप में हिरासत में लिया गया तथा इनसे 64 हजार रुपये दंडस्वरूप वसूल किये गये । इस विशेष अभियान के दौरान सोनपुर मंडल में 28, दानापुर मंडल में 24, पं. दीन दयाल उपाध्याय मंडल में 18, धनबाद मंडल में 08 तथा समस्तीपुर मंडल में 07 लोगों को गिरफ्तार किया गया । यात्रियों की सुविधा के मद्देनजर पूर्व मध्य रेल द्वारा यह अभियान भविष्य में भी जारी रहेगा । उक्त जानकारी पूर्व मध्य रेल के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी वीरेन्द्र कुमार ने दी गई है।

अहमदाबाद बरौनी अहमदाबाद एक्सप्रेस का खंडवा स्टेशन पर ठहराव

पटना। यात्रियों की सुविधा हेतु अहमदाबाद और बरौनी के बीच चलने वाली गाड़ी संख्या 19483/19484 अहमदाबाद-बरौनी-अहमदाबाद एक्सप्रेस का खंडवा स्टेशन पर प्रायोगिक तौर पर छः माह के लिए दो मिनट का ठहराव दिया जा रहा है । 06 मार्च से बरौनी से खुलने वाली गाड़ी संख्या 19484 बरौनी-अहमदाबाद एक्सप्रेस 00.43 बजे खंडवा पहुंचेगी और 00.45 बजे आगे के लिए प्रस्थान करेगी । इसी तरह 07 मार्च से अहमदाबाद से खुलने वाली गाड़ी संख्या 19483 अहमदाबाद-बरौनी एक्सप्रेस 13.48 बजे खंडवा पहुंचेगी तथा 13.50 बजे आगे के लिए प्रस्थान करेगी । उक्त जानकारी पूर्व मध्य रेल के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी वीरेन्द्र कुमार ने दी है।

जना स्मॉल फाइनेंस बैंक
(एक नियम वाणिज्यिक बैंक)
प्रधान कार्यालय: जना स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड- द फेयरवे, ग्राउंड एंड फर्स्ट फ्लोर, सर्वे नंबर- 10/1,11/2 और 12/2बी, ऑफ। डोम्लुर, कोरमंगला इनर रिंग रोड, नेक्स्ट ईजीएल बिजनेस पार्क, छल्लाघट्टा, बैंगलोर -560071।

स्वर्ण आभूषणों की नीलामी के लिए सार्वजनिक सूचना

नीचे उल्लिखित उधारकर्ता कई अनुस्मारक के बावजूद निर्धारित समय के भीतर ऋण चुकाने और सोने के गहनों को भुनाने में विफल रहे हैं। नीचे सूचीबद्ध उधारकर्ताओं द्वारा उक्त ऋण खातों के तहत गिरवी रखे गए सोने के आभूषण / आभूषण हमारी शाखा परिसर में सार्वजनिक / ऑनलाइन / निजी नीलामी में बेचे जाएंगे। **10-03-2023 सुबह 10.30 बजे।** भाग लेने के इच्छुक लोगों से शाखा से संपर्क करने का अनुरोध किया जाता है। बैंक बिना कोई कारण बताए किसी भी बोली को स्वीकार या अस्वीकार करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। कृपया ध्यान दें कि यदि नीलामी उसी दिन पूरी नहीं होती है, तो बाद के दिनों में उन्ही नियमो और शर्तों पर नीलामी की जाएगी। यदि ग्राहक की मृत्यु हो जाती है तो नीलामी से संबंधित सभी शर्तें नामांकित/कानूनी उत्तराधिकारी पर लागू होंगी। ऋण लेने वालों को नीलामी की तारीख से पहले अद्यतन ब्याज और सहायक खर्चों का भुगतान करने के लिए सूचित किया जाता है, ऐसा न करने पर गिरवी रखे गए सोने के आभूषणों को बेच दिया जाएगा और शेष बकाया राशि, यदि कोई हो, ब्याज और लागत के साथ वसूल की जाएगी। किसी भी प्रश्न और नियम और शर्तों के लिए शाखा से संपर्क करें। शाखा के पते की जानकारी के लिए विजिट करें**www.janabank.com**.

सीरियल नहीं।	ऋण खाता नहीं।	का नाम कर्जदार/सह कर्जदार	कुल वजन प्रतिज्ञा की सोने के आभूषण
1	31338730013427	पूजा देवी	6.33
2	31338730013430	स्वीटी कुमारी	11.33
3	31338730014953	पूनम देवी	72.53
4	31338740000406	आशीष कुमार	60.43
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, प्रथम तल श्री रतन सरदा सदन, मेन रोड, गोला रोड, दानापुर पटना -801503			
5	31348730025769	फरजानुल हक	11.06
6	31348730026032	फरजानुल हक	24.96
7	31348730026108	चुन्नू कुमार	11.5
8	31348730026236	गुंजा कुमारी	4.88
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, पहली मंजिल, मदर्स बिल्डिंग, विपक्ष। यूनियन बैंक, मचुआतोली, पटना-800004, भारत।			
9	31368730005298	बुलाकी ठाकुर	5.3
10	31368730005822	सुजीत झा	14
11	31368730005934	सोनू कुमार	11.7
12	31368730005960	प्रियंका कुमारी	9.5
जना स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड, ग्राउंड फ्लोर, इंदु मोहन स्मृति?, आरबीएसएस सहाय रोड, भागलपुर-812001, भारत।			
13	31378730015543	रिजवाना खातून	13.85
14	31378730015875	कसीदा खातून	7.01
15	31378730015888	बालेंद्र कुमार	8.56
16	31378730015912	सुषमा देवी	5.22
17	31378730015977	गुड्डू कुमार	5.15
18	31378730017230	पंकज कुमार	11.87
19	31378730017473	रंजन रत्नाकर	8.95
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, पहली मंजिल, वार्ड नंबर 49, थाना नंबर 410, शिव मंदिर के सामने, बेला रोड, मिठनपुर मुजफ्फरपुर पीओ, थाना और जिला। बिहार-842002, भारत			
20	32218730008702	रामसेवक राय	7.81
21	32218730008767	मोहम्मद वसीम	6.71
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, पहली मंजिल, उमा के सामने रंगमंच, खनका चौक, दरभंगा-846004, भारत			
22	33008730007850	मंजू देवी	10.87
23	33008730007900	बबीता देवी	7.8
24	33008730007936	अशोक कुमार	84.8
25	33008730008050	राहुल कुमार	5.132
26	33008730009356	गुरिया देवी	5.91
27	33008730009599	रोहित कुमार	6.56
28	33008730009600	रीता देवी	13.7
29	33008730009636	सोनी कुमारी	7.338
जना स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड, ग्राउंड फ्लोर, एन लाल टावर, बड़ी बादलपुर, लखपार, खौगल, फुलवारीसरीफ मेन रोड, थाना फुलवारी, खगौल, पटना, बिहार-801105, भारत।			
30	33318730002307	रजनीश चौधरी	8.6
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, भारत टावर्स, एनएच - 31, जेल चौक, पूर्णिया पीओ, पूर्णिया - 854301, बिहार, भारत			
31	45018730003373	अली अहमद	12.17
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, पहली मंजिल, अरुणोदय पथ, क्रिश्चियन बस्ती, जीएसआरओड, गुवाहाटी-781007 भारत			
32	45038730002743	सोनू कुमार	15.42
33	45038730002947	अनंत आनंद	22.44
34	45038730002950	राजेश चौधरी	11.1
जना स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड, ग्राउंड फ्लोर, एमए सुमम प्लाजा, प्लॉट नंबर 378, नेताजी सुभाष चंद्र बोस मार्ग, मौजा हाजीपुर, भागलपुर-812001, भारत			
35	45048730003712	अजीत कुमार	16.14
36	45048730003722	सनी कुमार	20.37
37	45048730003735	सनी कुमार	15.28
38	45048730003748	अनिल कुमार	14.1
39	45048730003978	श्रीनिवास गुप्ता	27.2
जना स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड, ग्राउंड फ्लोर, प्लॉट नंबर 150 और 151, ब्लॉक ए, टाइप बी, आर्य कुमार रोड, कदमकौन पीएस, कदमकौं, पटना जिला, बिहार-800016, पटना, भारत			
40	45058730006937	नवनीत सुमन	4.81
41	45058730007035	राजन कुमार	14.25
जना स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड, "यमुना कॉम्प्लेक्स", ग्राउंड फ्लोर, मिठनपुरा, चौक, मुजफ्फरपुर-842002, भारत			
42	45068730010350	राजकुमार कुमार	33.38
43	45068730010392	जमशेद अंसारी	30.29
44	45068730011596	अभिजेंद्र प्रकाश	15.34
45	45068740000097	दीपू कुमार	63.61
46	45068740000108	माधव कुमार	81.75
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, "सुशीला कॉम्प्लेक्स", कचहरी रोड, बेगूसराय, बिहार-851101, भारत			
47	45078730002228	उपेंद्र कुमार	17.26
48	45078740000340	मीना देवी	211.92
49	45078740000353	अंकिता कुमारी	562.493
50	45078740000429	मुकुल कुमार	11.22
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, ग्राउंड फ्लोर, हरिहर चेम्बर्स, बोरिग रोड चौराहा, बोरिग रोड, श्रीकृष्ण पुरी, पटना, बिहार - 800001, भारत			
51	45218730001564	विजय निर्मल	24.22
52	45218730001640	चंद्रिका साह	6.154
53	45218740000054	दीपक राज	43.768
जन स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड, रामलीला मठिया, परगना:- मांझी, थाना- भगवान बाजार, छपरा पीओ, सारण जिला, छपरा-841301, भारत।			
54	45418160000117	राकेश चौबे	63.02
55	45418160000120	रजनीश पांडे	59.48
56	45418160000130	आशीष पांडे	62.47
57	45418730005046	निर्मला पांडे	51.83
58	45418730006190	माला सिंह	36.546
59	45418730006266	अनिल कुमार	31.82
60	45418730006279	मोहम्मद आलम	10.08
61	45418730006329	संजय कुमार	52.64
62	45418730006355	बिबेक तिवारी	17.77
63	45418740000429	निर्मला पांडे	19.9
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, पहली मंजिल, प्रिया कॉम्प्लेक्स, राजा बाजार, मोतिहारी, बिहार-845401, भारत			
64	45558730001594	प्रभात उपाध्याय	19.208
65	45558730001670	दुर्गावती देवी	9.983
66	45558730001989	राहुल राम	12.042
67	45558730002009	ज्योतिष प्रकाश	8.374
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, अपूर्वा टॉवर, महाजन टोली, सदर अस्पताल रोड के पास, आरा-802301, भारत			
68

संक्षिप्त खबरें

जनहित में केंद्र सरकार घरेलू गैस की बढ़ी कीमतों को वापस ले : संजीव कुमार राय

समस्तीपुर। राजद पर्यावरण प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष संजीव कुमार राय ने एलपीजी घरेलू सिलेंडरों की कीमतों में बढ़ोतरी को लेकर भाजपा नीत केंद्र सरकार पर निशाना साधा है। कहा कि केंद्र सरकार ने घरेलू एलपीजी की कीमत 50 रुपये प्रति सिलेंडर बढ़ा दी है। आगे कहा कि एलपीजी रसोई गैस की कीमतों में तेजी से बढ़ोतरी ने न केवल देश की माताओं और बहनों की आंखों में आंसू ला दिए हैं, बल्कि आज देश के घरों की रसोई भी आंसू बहा रही है, जिससे उन्हें बड़ी पीड़ा और कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। राजद नेता ने कहा कि मार्च 2014 में एक घरेलू रसोई गैस सिलेंडर की कीमत लगभग 450 रुपये थी जो अब 1 मार्च 2023 को लगभग 1200 रुपये हो गई है। केंद्र द्वारा पिछले 9 वर्षों में एक रसोई गैस सिलेंडर की कीमत लगभग 3 गुना बढ़ा दी गई है। जो न्यायसंगत नहीं है। जनहित में केन्द्र सरकार को घरेलू गैस सिलेंडर में किये गए मूल्य वृद्धि को वापस लेना चाहिए।

वारंटी को गिरफ्तार कर भेजा जेल

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के मिल्की गांव में मारपीट के मामले में एक वारंटी को गुरुवार की रात पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार व्यक्ति की पहचान मिल्की गांव निवासी सत्य नारायण सिंह के रूप में हुआ है। वहीं इस संबंध में थाना अध्यक्ष गौतम कुमार ने बताया कि गिरफ्तार कर समस्तीपुर भेजा गया है।

शराब मामले के आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

कल्याणपुर, समस्तीपुर। चकमेहसी थाना क्षेत्र के सहुरी गांव से पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर एक शराब कारोबारी के को गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार कारोबारी की पहचान सहुरी गांव निवासी ब्रजनंदन दास के पुत्र दिलीप कुमार के रूप में हुई है। वहीं थानाध्यक्ष चन्द्र किशोर टुडू ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

शराब के साथ दो कारोबारी गिरफ्तार

सरायरंजन, समस्तीपुर। मुसरीघरारी थाना क्षेत्र के गंगापुर स्थित एक होटल से गुरुवार की शाम पुलिस ने गुप्त सूचना पर 12 बोतल शराब के साथ दो कारोबारी को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार कारोबारी की पहचान मधुबनी जिले के राजनगर थाना निवासी दिनेश मंडल के पुत्र पंकज कुमार (24) एवं ताजपुर थाना क्षेत्र के लश्कारा निवासी रामलाल चौधरी के पुत्र राजकुमार चौधरी (32) के रूप में की गई है। गिरफ्तार दोनों शराब कारोबारियों को पूछताछ के बाद शुक्रवार की दोपहर न्यायिक हिरासत में समस्तीपुर भेज दिया गया। इस संबंध में पुलिस सूत्रों ने बताया कि उन्हें गुप्त सूचना मिली थी कि गंगापुर स्थित एक होटल में दो कारोबारी शराब की बिक्री कर रहा है। सूचना पाकर पुलिस उक्त होटल में छापेमारी को पहुंची तो दो कारोबारी समेत बड़ा 12 बोतल अंग्रेजी शराब बरामद हुई।

विकास मित्र का एक दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

विभूतिपुर। विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति समुदाय के प्रभावी विकास एवं कल्याण हेतु बिहार महादलित विकास मिशन द्वारा संचालित विकास रजिस्टर वर्जन 2.0 का एक दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न हुआ। यह प्रशिक्षण मास्टर ट्रेनर पंकज कुमार महतो एवं अजय कुमार रमन के द्वारा दिया गया। जिसमें सरकार के द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएं जैसे सात निश्चय योजना, शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज कल्याण, नल जल, स्वच्छता, आपदा, भूमिहीन परिवार हेतु भूमि एवं आवास से संबंधित प्रशिक्षण दिया गया।

लूटे गए मोबाइल के साथ किशोर हिरासत में, भेजा गया न्यास बोर्ड

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर थाना कांड संख्या 50/23 के तहत लूटे गए मोबाइल के साथ एक किशोर को पुलिस ने हिरासत में लेकर न्यास बोर्ड भेज दिया है। बता दें कि आलमपुर डीह निवासी अवधेश कुमार सिंह 6 फरवरी को भोज खाकर घर लौट रहे थे। इसी दौरान साख मोहन वीरेंद्र स्मारक के निकट बाइक सवार तीन अपराधियों द्वारा ओवरटेक कर गाड़ी रोक कर जेब से पैसा, मोबाइल, एवं मोटरसाइकिल छीनकर फरार हो गया था। मामले को लेकर पीड़ित द्वारा विभूतिपुर थाना कांड संख्या 50/23 दर्ज करवाई गई थी।

रसोई गैस की बढ़ी हुई कीमतों को सरकार अविलंब वापस ले : रौशन यादव

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

घरेलू रसोई गैस की कीमत में 50 रुपए और कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमत में 350 रुपए की अप्रत्याशित वृद्धि पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए इंकलाबी नौजवान सभा (आरवाईए) समस्तीपुर जिला सचिव सह भाकपा-माले जिला कमिटी सदस्य रौशन कुमार यादव ने कहा कि इस रसोई गैस में अप्रत्याशित वृद्धि केंद्र सरकार के द्वारा त्योहार के समय में पूंजीपतियों के लिए सौगात और निम्न मध्यम वर्ग के लिए ठेंगा करार दिया है। इस मूल्य वृद्धि से मध्यमवर्गीय परिवार भी अब चूल्हा युग कि ओर लौटने पर मजबूर होगा क्योंकि मूल्यवृद्धि और महंगाई से त्रस्त निम्नवर्गीय परिवार पहले से ही रसोई गैस का इस्तेमाल बंद कर चुका है। लगातार बढ़ती महंगाई लोगों की घट रही कमाई से आम आवाम की आर्थिक हालत दिनों-दिन खराब होती जा रही है, केंद्र सरकार इस पर तनिक भी नहीं सोच रही है। इस मूल्य वृद्धि के जिम्मेवार मोदी सरकार नीरव मोदी, विजय माल्या, अडानी जैसे कॉरपोरेट घराने जो देश के रुपए ले कर भाग रहे हैं उसे छोड़ देश में कभी खाद्य पदार्थ तो कभी तेल तो कभी रसोई गैस सिलेंडर पर दाम और महंगाई बढ़ाकर वो कॉरपोरेट का पैसा जनता से वसूल रही है। मोदी सरकार देश में उज्जवला योजना का मतलब रसोई गैस मूल्य वृद्धि योजना करार दिया है, सरकार इस मूल्य वृद्धि को वापस ले।

शब-ए-बारात एवं होली को लेकर शांति समिति की बैठक संपन्न

सरायरंजन, प्रात : किरण संवाददाता

सरायरंजन थाना परिसर में शुक्रवार को शब-ए-बारात एवं होली को लेकर शांति समिति की बैठक आयोजित की गई बैठक कि अध्यक्षता प्रमुख वीणा कुमारी बीडीओ नीतू प्रियदर्शनी गुप्ता, सीओ पंकज कुमार झा एवं थानाध्यक्ष रामचंद्र चौपाल ने संयुक्त रूप से की। बैठक में क्षेत्र के जनप्रतिनिधि के साथ-साथ आम जनता ने भी भाग लिया। वक्ताओं द्वारा 07, 08, एवं 09 मार्च को होने वाले पर्व शबे बरात एवं होली पर्व शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो इसको लेकर स्थानीय जनप्रतिनिधियों बुद्धिजीवियों से अपील करते हुए कहा गया कि क्षेत्र में शांति व्यवस्था कायम रखें इसके लिए स्थानीय पुलिस प्रशासन को सहयोग करने का भी अपील किया गया वहीं पर्व के दौरान किसी तरह का उपद्रव फैलाने का प्रयास किया गया तो वैसे लोगों को चिन्हित कर उनके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी। साथ ही नशीले पदार्थ बेचने वालों पर भी सख्ती से कार्रवाई की जा रही है। वहीं हर चौक-चौराहे पर महिला एवं पुरुष पुलिस बल को तैनात किया जाएगा। मौके पर कुमार विश्वनाथ, संजीव कुमार राय, दीनदयाल साह, अनवारुल हक, तंजील इमाम दयानंद दास, लाल बाबू महतो, संजय कुमार समेत दर्जनों लोग मौजूद थे।

दुकान के अंदर संदिग्ध अवस्था में फंदे से झूलता मिला युवक का शव, ग्रामीण बता रहे आत्महत्या

प्रात : किरण संवाददाता

सरायरंजन। घटहो ओपी क्षेत्र के खजूरी चौक स्थित एक दुकानदार का शव उसी के दुकान से फांसी के फंदा में झूलता हुआ शुक्रवार को पुलिस ने बरामद की है। मृतक की पहचान मनिकपुर पंचायत के जगदीशपुर गांव के वार्ड 6 निवासी चंदेश्वर साह के पुत्र मिथिलेश कुमार (27) के रूप में की गई है। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने बताया कि उक्त युवक खजूरी चौक पर सीएसपी एवं ऑनलाइन का दुकान चलाता था।

अन्य दिनों की भांति शुक्रवार की सुबह खजूरी चौक स्थित अपना दुकान खोला था। कुछ घंटों बाद अचानक युवक शव दुकान के अंदर पंखा में झूलता हुआ मिला। घटना की जानकारी मिलते ही स्थानीय लोगों की भीड़ जमा हो गई। उसके बाद घटहो पुलिस को इसकी जानकारी दी गई। घटना की जानकारी मिलते ही घटहो पुलिस घटनास्थल पहुंचकर घटना की छानबीन करते हुए स्थानीय ग्रामीणों के सहयोग से मृतक के शव को नीचे उतारा। इस घटना को लेकर बताया जा रहा है कि युवक के कान में ब्लूटूथ लगा हुआ था एवं मोबाइल पर वीडियो कॉल पर किसी से बात हो रही थी। इस घटना को लेकर लोग प्रेम प्रसंग से भी जोड़ रहे हैं। वहीं मृतक के परिजन द्वारा हत्या की आशंका जताई जा रही है। हालांकि घटना को लेकर क्षेत्र में कई तरह की चचाएं भी है। वहीं पुलिस इस घटना को लेकर प्रथम दृष्टया प्रेम प्रसंग का मामला बता रही है। ऐसे आवेदन मिलने एवं पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही घटना का कारण स्पष्ट हो पाएगा। पुलिस जांच में जुटी हुई है। पुलिस द्वारा मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए समस्तीपुर सदर अस्पताल भेज दिया गया है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल था। गांव में मातमी सन्नाटा पसर गया।

घरेलू गैस के कीमतों में बढ़ोतरी की राजद ने की आलोचना

, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर। राजद मीडिया प्रभारी राज दीपक ने घरेलू एलपीजी सिलेंडर की कीमत में 50 रुपये और वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर में 350 रुपये की बढ़ोतरी पर केंद्र सरकार की आलोचना की। श्री दीपक ने बताया कि यूपीए शासन के दौरान घरेलू एलपीजी सिलेंडर की कीमत 400 रुपये थी और अब बड़े पैमाने पर बढ़कर 1, 112.50 रुपये हो गई है। बढ़ोतरी को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि पिछले दो साल में ही नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने घरेलू एलपीजी सिलेंडर की कीमत में 409 रुपये की बढ़ोतरी की है। 100 दिनों में महंगाई कम करने का वादा करके पीएम सत्ता में आए, लेकिन बुरी तरह विफल रहे। अर्थात नरेंद्र मोदी का अमृतकाल और आजादी का अमृत मोहत्सव यह शीर्षक व्यंग्य से भरा हुआ है।

यज्ञ घूमने पहुंची वृद्धा महिला के साथ बदमाश महिला ने किया स्वर्ण के चेन की छिनतई

प्रात : किरण संवाददाता

नाथनगर (भागलपुर)। मिजार्पुर गांव स्थित विष्णु महायज्ञ देखने पहुंची सुल्तानगंज जहांगीरा की एक वृद्ध महिला के गले से एक बदमाश महिला ने चेन स्नैचिंग की वारदात को अंजाम दिया है। वही मेले में शामिल लोगों की भीड़ ने आरोपी महिला को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया है। मामले को लेकर पीड़िता देवकी देवी ने बताया कि यज्ञ देखने के दौरान एक महिला ने उनके गले से सोने की चेन खींचकर दूसरी महिला को दे दी। तभी उनकी नजर आरोपी महिला पर गई तो आरोपी महिला भागने में सफल रही लेकिन चैन रखने वाली अन्य महिला को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया गया।

मारपीट की घटना में आधा दर्जन लोग जख्मी

कल्याणपुर, प्रात : किरण संवाददाता

कल्याणपुर थाना क्षेत्र के विभिन्न जगहों पर हुए दो पक्षों में मार पीट की घटना में छह लोग जख्मी हो गए। जिन्हें परिजनों के द्वारा ईलाज के लिए सीएचसी में भर्ती कराया गया। जिसमें बरहेता पंचायत के भगवानपुर गांव में एक शादी समारोह में हुई विवाद में दो पक्षों में हुई मारपीट हो गया। जिसमें एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। जिस जख्मी की पहचान भगवानपुर बरहेता गांव निवासी स्वर्गीय मुनिलाल ठाकुर के पुत्र रामस्वरूप ठाकुर के रूप में हुई है। वहीं दूसरी ओर गोविंदपुर खजूरी में दो पक्षों में हुई मारपीट की धटना में तीन महिलाएं गंभीर रूप से जख्मी हो गई। जिसमें लझमी कुमारी, अजनाश देवी, सुनीता देवी जख्मी है। जिसमें लदौरा गांव निवासी धर्मेंद्र कुमार झा, दिनेश कुमार झा के रूप में हो गया। वहीं इस संबंध में पीएचसी चिकित्सा प्रभारी डॉ बीके ठाकुर ने बताया कि दो लोगों की गंभीर स्थिति देखते हुए बेहतर इलाज के लिए सदर हॉस्पिटल समस्तीपुर रेफर कर दिया गया है। वहीं थानाध्यक्ष गौतम कुमार ने बताया कि जख्मी के परिजन के आवेदन मिलने पर आगे की करवाई की जाएगी।

दहेज के कारण नवविवाहिता की हत्या, मृतक के भाई ने दर्ज करवायी प्राथमिकी

प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर। विभूतिपुर थाना क्षेत्र के कल्याणपुर उत्तर पंचायत वार्ड 10 में गुरुवार को फंदे से लटकते हुए एक नवविवाहिता की शव मिलने के बाद पुलिस कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल समस्तीपुर भेज दिया था। मामले को लेकर मुफस्सिल थाना क्षेत्र के केवस निजामत निवासी स्वर्गीय फेकन शर्मा का पुत्र शिवकुमार शर्मा ने दहेज के कारण अपनी बहन की हत्या का मामला बताते हुए विभूतिपुर थाने में प्राथमिकी दर्ज करवाई है। दर्ज प्राथमिकी के माध्यम से मृतक के भाई ने बताया कि डेढ़ वर्ष पूर्व मैं अपनी 22 वर्षीय बहन काजल कुमारी की शादी विभूतिपुर थाना क्षेत्र के कल्याणपुर वार्ड 10 निवासी महेश्वर शर्मा के पुत्र रामकुमार शर्मा के साथ हिंदू रीति रिवाज के अनुसार अपने सामर्थ्य के अनुसार उपहार स्वरूप दान देकर किया था। शादी के कुछ दिन बाद उनके पति एवं परिवार के अन्य सदस्य दहेज में सोना का चैन अंगूठी एवं एक लाख रुपए लाने को कहा। मना करने पर मेरी बहन को प्रताड़ित करने लगा। ईधर हाल फिलहाल मेरी बहन समस्तीपुर जाने के क्रम में मेरे घर आई एवं अपने पति रामकुमार शर्मा, ससुर महेश्वर शर्मा एवं सास मीना देवी के बारे में बताएं कि वे लोग मेरे साथ रूपया, चैन एवं अंगूठी के लिए मारपीट करते हैं। किसी तरह समझा-बुझाकर अपनी बहन को वहां से विदा किया। 2 मार्च के दिन में पता चला कि मेरी बहन को उसका ससुर महेश्वर शर्मा एवं सास मीना देवी हत्या कर लाश गायब करने के फिराक में है। पता चलते ही मैं स्थानीय थाना को सूचित करते हुए सहयोगियों के साथ वहां पहुंचा तो पता चला कि मेरी बहन की हत्या गला दबाकर कर दी गई। तथा आत्महत्या के रूप देने के लिए फंदे से लटका दिया। वहीं विभूतिपुर थाना मामले की प्राथमिकी दर्ज कर जांच में जुट गई है।

तीन दिवसीय ऑथोर्पेडिक कॉन्फ्रेंस की हुई शुरूआत

ऑथोर्पेडिक चिकित्सक द्वारा कार्यक्रम के माध्यम से जानकारी के श्रोत का किया गया साझा

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जवाहरलाल नेहरू चिकित्सा महाविद्यालय के प्रांगण में तीन दिवसीय ऑथोर्पेडिक कॉन्फ्रेंस बीओएसीओएन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत मेडिकल कॉलेज प्रशाल में विधिवत रूप से किया गया है, कार्यक्रम में उपस्थित सभी चिकित्सकों का पहले पंजीयन हुआ उसके बाद दो पाली में वर्कशॉप की शुरूआत की गई। पहला वर्कशॉप कोलकाता से आए हुए प्रख्यात ऑथोर्पेडिक सर्जन डॉ. बीडी चटर्जी के नेतृत्व में शुरू किया गया। इस वर्कशॉप में उपस्थित सभी ऑथोर्पेडिक सर्जन तथा पोस्ट ग्रेजुएशन के सभी ऑथोर्पेडिक्स स्टूडेंट , बिहार एवं भारत के विभिन्न राज्यों से आये हुए सभी ऑथोर्पेडिक सर्जन मौजूद थे। इस वर्कशॉप के माध्यम से हड्डियों के जोड़ व कुल्ले का प्रत्यारोपण की दिशा में जिसे हम टोटल हिप रिप्लेसमेंट कहते हैं वह सरल तरीके से कैसे किया जाय उक्त मामले को लेकर डॉ. बीडी ने विस्तृत जानकारी दी। वहीं दूसरी पाली मे एमआईआरओ नयी तकनीकी को लेकर टेक्निक विधि पर आधारित कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस क्रम में उपस्थित चिकित्सक को यह बताया गया है कि कोई भी ऑपरेशन कम से कम चीर फाड़ के द्वारा कैसे किया जाय, यह कार्यशाला के दौरान उपस्थित चेन्नई के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. एल प्रकाश के नेतृत्व में वर्कशॉप के माध्यम से बताया गया है।

आयोजित तीन दिवसीय कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए कार्यक्रम आयोजन के अध्यक्ष डॉ. शोमैन कुमार चटर्जी और सचिव डॉ. अमिताभ सिंह के अलावे कई चिकित्सक लगे हुए हैं गौरतलब हो कि 4 मार्च को इस आयोजन का इनॉग्रेशन किया जाएगा। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉक्टर नवीन ठक्कर जो इंडियन ऑथोर्पेडिक एसोसिएशन के जनरल सेक्रेटरी हैं, तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पद्मश्री डॉ बी के संजय, प्रोफेसर डॉ. उमाशंकर सिंह एवं भागलपुर की मेयर डॉक्टर बसुंधरा लाल शामिल होंगी। वहीं कार्यक्रम का समापन समारोह आगामी 5 मार्च को जे बी मीटिंग के साथ संपन्न किया जाना सुनिश्चित किया गया है।

लावारिस बाइक पुलिस ने जब्त कर छानबीन की शुरू

मोरवा, समस्तीपुर। ताजपुर हलई मुख्य मार्ग पर दर्जिनिया पुल के समीप से लावारिस बाइक को ताजपुर थाने की पुलिस ने जप्त कर छानबीन शुरू कर दी है। वहीं पूछे जाने पर थाना अध्यक्ष ब्रजकिशोर सिंह ने बताया कि बाइक को जप्त कर मामले की छानबीन की जा रही है। वहीं बताया जाता है ग्लैमर बाइक हरे रंग की है। वहीं लोगों के द्वारा तरह-तरह की चचाएं की जा रहीं है। वहीं शंका है कि यह गाड़ी चोरी की हो सकती है। फिलहाल मामले की छानबीन पुलिस कर रही है उसके बाद मामले का खुलासा किया जाएगा।

महंगाई के खिलाफ महिलाओं ने खोला मोर्चा, सरकार को दी चेतावनी

प्रदर्शन कर रही महिलाओं ने कहां-महिलाएं अगर काली का रूप धारण कर लिया तो होगा प्रलय

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। देश में बढ़ती महंगाई को लेकर जनता के घरेलू व आर्थिक रूप को सरकार ठगने का काम कर रही है, उक्त मामले को लेकर भागलपुर के कई संस्थानों की महिला एकत्रित हो अब सड़क पर निकलकर आयी है। महिलाओं ने सरकार के विरुद्ध हल्ला बोल प्रदर्शन शुरू कर दिया है।

मामले को लेकर बताया जा रहा है कि केंद्रीय सरकार समय-समय पर घरेलू गैस सिलेंडर से लेकर खाद्य पदार्थों के दामों लगातार दिन प्रतिदिन बढ़ाते चली जा रही है। जिससे रसोई में काफी जद्दोजहद करने का सामना करना पड़ रहा है। वहीं महिलाओं का कहना है लोगों के जनजीवन पर सरकार डाका डालने का काम कर रही है, यह कहीं से सही नहीं है अब महिलाएं शांत नहीं रहेगी, अगर महिलाएं काली का रूप धारण कर लेंगे तो सरकार को भी हिलना पड़ जाएगा। चाहे व राज्य सरकार हो या फिर केंद्र की सरकार हो वह घरेलू सामान में बढ़ोतरी के वजह से परिवारिक स्तर पर आर्थिक रूप से मार झेलनी पड़ रही हैं, साथ ही साथ प्रदर्शनकारी महिलाओं का यह भी कहना हुआ कि चाहे केंद्र सरकार हो या फिर राज्य सरकार योजनाएं या बजट जो बनाती है उसमें आम लोगों के टैक्स से ही वह बजट बनाती है, फिर आम लोगों को इतनी परेशानी क्यों सहनी पड़े। इसको लेकर घंटों जिलाधिकारी कार्यालय के सामने महिलाओं ने जमकर हंगामा कर हल्ला बोल प्रदर्शन किया है।

4 लीटर देसी शराब बरामद, महिला तस्कर फरार

शिवाजीनगर, समस्तीपुर। हथौडी थाना के द्वारा आगामी होली पर्व को लेकर शराब माफियाओं के विरुद्ध विशेष अभियान चला रही है। इसी क्रम में थाना क्षेत्र के बल्लीपुर से पुलिस ने गुरुवार को देर शाम 4 लीटर देसी शराब बरामद किया है। हालांकि, पुलिस के आने की भनक लगते ही तस्कर वहां से फरार हो गए। जानकारी देते हुए थाना अध्यक्ष विशाल कुमार सिंह ने बताया कि बल्लीपुर से 4 लीटर देसी शराब बरामद किया गया है। पुलिस को गुप्त सूचना मिलने के बाद जब पुलिस ने बल्लीपुर निवासी महिला शराब तस्कर के के यहां छापामारी की तो 4 लीटर देसी शराब बरामद किया गया, वहीं तस्कर मौके से फरार हो गई। पुलिस अग्रतर कार्रवाई में जुटी है। मौके पर थाना अध्यक्ष विशाल कुमार सिंह, एसआई कुंदन पासवान, सहित अन्य पुलिस पदाधिकारी मौजूद थे।

त्रिपुरा नगालैंड एवं मेघालय विधानसभा चुनाव के परिणाम में भारतीय जनता पार्टी को बड़ी जीत को लेकर कार्यकर्ताओं ने मनाई जीत की होली

प्रात : किरण संवाददाता

जगदीशपुर (भागलपुर)। त्रिपुरा नगालैंड एवं मेघालय विधानसभा चुनाव के परिणाम में भारतीय जनता पार्टी को बड़ी जीत मिली। यह पूर्वोत्तर के लिए एक ऐतिहासिक दिन है। इस जीत के साथ ही पूर्वोत्तर के 8 में से 7 राज्यों में भाजपा गठबंधन की सरकारें हो गई। मामले को लेकर जगदीशपुर प्रखंड के बैजानी ग्राम में भाजपा जगदीशपुर मंडल के अध्यक्ष नरेंद्र कुमार झा के आवास पर जगदीशपुर मंडल के भाजपा कार्यकर्ता एवं ग्रामीणों ने एक दूसरे को मिठाई खिला कर अपनी खुशी का इजहार किया।वही भाजपा अध्यक्ष नरेंद्र झा ने कहा की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के समृद्धि, देश सेवा, विदेश नीति, गरीबों की चिंता, विकास की गंगा जन धन योजना, उज्जवला योजना, किसान सम्मान, आयुष्मान जैसी अनेकों योजना नेतृत्व वाली भाजपा सरकार लोगों की पसंद है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अमित शाह, राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा एवं तीनों राज्यों के जनता जनार्दन को जीत दिलाने के लिए धन्यवाद दिया है। मौके पर जगदीशपुर मंडल के महामंत्री वेदनाथ मंडल, मंडल उपाध्यक्ष विकास कुमार, सोनूचक शक्ति केंद्र प्रभारी राकेश रमन,, मोहित मंडल, बजरंगी मंडल, भोला मंडल, विश्वकर्मा शर्मा, निलभ कश्यप, वीरेंद्र झा सहित दर्जनों भाजपा कार्यकर्ता व ग्रामीण उपस्थित थे।

तमिलनाडु में बिहारियों को पीटे जाने पर अभाविप द्वारा मुख्यमंत्री का किया पुतला दहन

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद भागलपुर इकाई द्वारा तमिलनाडु में बिहारियों को पीटे जाने एवं हत्या किए जाने के विरोध में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एवं तमिलनाडु के मुख्यमंत्री स्टालिन का पुतला दहन किया गया। इस दौरान कार्यकताओं ने मुख्यमंत्री के विरोध में जमकर नारेबाजी की। वही कार्यकताओं ने हुई घटना को लेकर बिहारियों के लिए अपमानजनक बताया है। वही विश्वविद्यालय संयोजक आशुतोष सिंह तोमर ने प्रश्न करते हुए कहा कि उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव इस घटना पर ट्वीट करते हुए लिखते हैं की ये सब अफवाह है जबकि दूसरी और बिहार के मजदूर चीख चीखकर अपने ऊपर हुए अत्याचार की गवाही दे रहे हैं, एवं सुरक्षा की मांग कर रहे हैं। आश्चर्य है की उन्हें बिहारियों, मजदूरों पर विश्वास नहीं है और वो तमिलनाडु सरकार के पक्ष में खड़े हैं।

वे जवाब दें की वो तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री हैं या बिहार के, वहीं कुणाल पांडे एवं रोहित राज ने कहा की इससे पूर्व महाराष्ट्र में भी इस प्रकार की घटना घटीत हुई है और पुनः इसका दोहराव हो रहा है, बिहार वासी अपमानित महसूस कर रहे हैं। पुतला दहन कार्यक्रम के दौरान नगर मंत्री कपिस शर्मा, पियूष, हर्ष, सौरभ सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

पटना में काम करने के दौरान छत से गिरकर मथुरापुर के युवक की मौत, परिजनों में मचा कोहराम

मोरवा। ताजपुर थाना क्षेत्र के मथुरापुर गांव के निवासी एक युवक की काम करने के दौरान पटना में छत से गिरने से मौत हो गई। वहीं उक्त युवक की पहचान मथुरापुर गांव निवासी प्रमोद सहनी के पुत्र चंदन कुमार 19 वर्षीय के रूप में की गई। वहीं मृत युवक का शव घर पहुंचते हैं परिजनों में कोहराम मच गया है। शव को देखने के लिए लोगों की भीड़ जुट गई है। वहीं मृतक के परिजन हरेंद्र कुमार सहनी ने बताया कि युवक ठेकेदार के मार्फत पटना में मजदूरी का काम करता था। वहीं काम करने के दरमियान छत से गिरकर दर्दनाक मौत हो गई। उसके बाद ठेकेदार के द्वारा मुआवजा देने की बात कही गई तब पटना से सब मथुरापुर गांव लाकर अंतिम संस्कार कर दिया गया। परिजनों के द्वारा पोस्टमार्टम नहीं कराया गया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि उक्त युवक अत्यंत गरीब था। जिसके कारण पटना में मजदूरी का काम करने गया हुआ था वहीं युवक की मौत से परिजनों में मातमी सन्नाटा छा गया है वहीं क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ पड़ी है।

संक्षिप्त खबरें

पत्रकार वर वधू को आशिर्वाद दिए सांसद विजय मांझी

गया। आज डोभी प्रखंड अनंतर्गत ग्राम - कंजीयार में जिला परिषद सदस्य संतोष चौधरी जिला परिषद सदस्य सह राजद प्रखंड अध्यक्ष संतोष चौधरी के भाई तिलक सामारोह में एवं ग्राम - अमारूत में विकाश कुमार पत्रकार दैनिक भास्कर के वर -वधु स्वागत समारोह एवं प्रखंड आमस के जद(यू ङ्ग) प्रखंड अध्यक्ष डॉ0 रामवृक्ष प्रसाद के पुत्र के तिलक सामारोह और ग्राम - सावकला वृन्दावन में संजय यादव के गृह प्रवेश में शामिल हुए सांसद विजय कुमार मांझी इसी मॉके पर जद(यू ङ्ग) जिला अध्यक्ष अभय कुशवाहा, पूर्व मंत्री विनोद यादव, जद(यू0) वरीय नेता वारिश अलीखान जी, जद(यूङ्ग) डोभी प्रखंड अध्यक्ष सुरेंद्र यादव, जद(यूङ्ग) शेरघाटी प्रखंड अध्यक्ष प्रोङ्ग अरविन्द प्रसाद, जद(युङ्ग) वरिष्ठ नेता कुण्डल वर्मा जी, दिलीप यादव जी, मिथलेश यादव जी एवं अन्य जद(यू ङ्ग) नेता गण उपस्थिति हुए।

नागालैंड मे चुनाव परिणाम से बिहार के सीएम व डिप्टी सीएम पर चिराग पड़े भारी: रामाज्ञा यादव

अरवल। नागालैंड मे चुनाव परिणाम घोषित हुए है जिसमें लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास की दो विधान सभा सीट पर जीत हुई, इस पर प्रतिक्रिया देते हुए लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास किसान प्रकोष्ठ के प्रदेश उपाध्यक्ष सह वरिष्ठ समाजसेवी रामाज्ञा यादव ने कहा कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव दोनो पर आदरणीय चिराग पासवान जी भारी पड़े। आगे उन्होंने कहा कि नागालैंड मे लोजपा रामविलास ने दो विधान सभा की सीट पर अपनी जीत दर्ज की है और नौ विधान सभा सीट पर लोजपा रामविलास पार्टी की बहुत कम मतो के अंतर से दुसरे स्थान पर रही ।नागालैंड विधान सभा चुनाव परिणाम के अनुसार लोजपा रामविलास को 8:65 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। लोजपा रामविलास के लिए ख़ुशी का दिन है ।इस ख़ुशी के लिए लोजपा रामविलास पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह जमुई लोकसभा के लोकप्रिय युवा संसद चिराग पासवान को बधाई दिया।

डीएम ने 25 दिव्यांगजन लाभार्थियों को बैट्री चालित ट्राईसाइकिल का वितरण किया

अरवल। मुख्यमंत्री दिव्यांगजन छात्र योजना अंतर्गत 25 लाभार्थियों के बीच में बैटरी चालित ट्राई साइकिल का समाहरणालय परिसर में वितरण अरवल जिला अधिकारी जे प्रियदर्शन के द्वारा किया गया, अरवल जिले के लिए निर्धारित लक्ष्य 78 है जिसके विरुद्ध अब तक 48 बैटरी चालित ट्राई साइकिल का वितरण किया जा चुका है अवशेष 30 का लक्ष्य वित्तीय वर्ष में पूरा कर लिया जाएगा, इस मौके पर अपर समाहर्ता ज्योति कुमार उप विकास आयुक्त रविंदर कुमार, अनुमंडल पदाधिकारी दुर्गेश कुमार, विशेष कार्य पदाधिकारी मृत्युंजय कुमार, सहायक निर्देशक जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण कोषांग दिलीप कुमार व अन्य उपस्थित रहे।

ग्रामीणों ने की शुद्ध पेयजल आपूर्ति की मांग

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)।बिहार सरकार की शुद्ध पेयजल आपूर्ति योजना रखरखाव के अभाव में आज भी लाखों खर्च करने के बावजूद ग्रामीणों को शुद्ध पेयजल की आपूर्ति नहीं की जा रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार बरूई पंचायत के कैथी गांव वार्ड नंबर 10 के ग्रामीण वासुदेव सिंह लड्डू लाल सिंह वार्ड सदस्य सीटू कुमार और जवाहरलल सिंह ने बताया कि वार्ड नंबर 10 में करीब एक साल से ग्रामीणों को शुद्ध जल आपूर्ति नहीं किया जा रहा है। जबकि इस संबंध में लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग खड़गपुर और मुंगेर को इस संबंध में सूचना दी गई है नल जल योजना के तहत ग्रामीणों को शुद्ध जल की आपूर्ति नहीं की जा रही है। ग्रामीण परेशान है और विभाग सुस्त है।

विज्ञान प्रदर्शनी में छात्र- छात्राओं ने दिखाया आकर्षक मॉडल

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। खड़गपर थाना क्षेत्र के रमनकावाद स्थित राजकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालय में पांचवे सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने विज्ञान प्रदर्शनी लगाया। जहां विज्ञान से संबंधित आकर्षक मॉडल को छात्र छात्राओं ने प्रदर्शित किए। महाविद्यालय के इलेक्ट्रिकल विभाग के विभाग अध्यक्ष चंदन साह के संयोजन में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के छात्र छात्राओं ने इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग ,अइयूनो का उपयोग कर स्मार्ट ब्लाइंड स्टिक पर प्रोजेक्ट सबमिशन अल्ट्रासोनिक सेंसर आधारित सुरक्षा प्रणाली होम ऑटोमेशन स्वचालित स्ट्रीट लाइट के साथ सिंगल एक्सिस सोलर ट्रैकर मॉडल प्रदर्शन किया गया इसकी उपयोगिता के विषय में छात्राओं को जानकारी दिया गया।

होली पर्व में हुड़दंग करने वाले की खैर नहीं

डीएम-एसएसपी ने पदाधिकारियों के साथ बैठक कर दिए आवश्यक दिशा निर्देश

प्रात: किरण संवाददाता

गया। समाहरणालय सभाकक्ष में होली एवं शब ए बारात पर्व के अवसर पर विधि व्यवस्था एवं शांति व्यवस्था, भूमि विवाद के मामलों का निपटारा, जिले के सरकारी भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराने हेतु जिलाधिकारी डॉक्टर त्यागराजन एसएम एवं वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी अनुमंडल पदाधिकारी, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, प्रखंड स्तरीय पदाधिकारी, थानाध्यक्ष तथा जिला स्तरीय पदाधिकारियों के साथ विस्तार से समीक्षा बैठक करते हुए एक-एक कर सभी बिंदु पर जानकारी प्राप्त करते हुए कई आवश्यक निर्देश दिए गए हैं।

आज के बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि होलिका दहन के साथ ही होली पर्व 07 मार्च 2023, 07 मार्च के रात्रि में मुस्लिम समुदाय का पर्व शब ए बारात, 08 मार्च होली तथा 09 मार्च 2023 मटका फोड़ होली मनाई जाएगी। सभी अनुमंडल पदाधिकारी एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी को होलिका दहन पर विशेष निगरानी रखने का निर्देश दिया गया है। किसी भी विवादित जमीन पर होलिका दहन का आयोजन ना हो, इसे ध्यान रखें। पूर्व वर्षों में जिला के विभिन्न स्थलों पर होली पर्व के अवसर पर घटित घटनाओं के कारण पूर्व वर्ष के प्रतिशोध में असामाजिक एवं शरारती तत्वों द्वारा हिंसक घटनाओं के अंजाम दिए जाने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता हू। इस पर्व की संवेदनशीलता को देखते हुए सभी अनुमंडल पदाधिकारी, सभी अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी, सभी अंचलाधिकारी एवं थानाध्यक्षों का कर्तव्य होगा कि अपने-अपने क्षेत्र में होली के अवसर पर शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए दोनों समुदाय के लोगों से मिलकर सौहार्दपूर्ण वातावरण में इस पर्व को संपन्न कराएं।

मटका फोड़ या होली के दिन भीड़ लगाकर मस्जिद के निकट से गुजरते समय कीचड़ और रंग रास्ते से चलने वाले व्यक्तियों पर फेंक देते हैं जिसके कारण तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जिलाधिकारी ने इस तरह की घटनाओं को विशेष रूप से ध्यान देने का निर्देश दिया गया है। वैसे संबंधित स्थल पर पर्याप्त दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी को प्रतिनियुक्त करने का निर्देश दिया गया है जिससे कोई भी विधि

व्यवस्था की समस्या उत्पन्न ना हो पाए। संवेदनशील स्थानों पर अनुमंडल पदाधिकारी एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी संयुक्त रूप से भ्रमण करते हुए आसपास के समुदाय के लोगों से बातचीत अनिवार्य रूप से करेंगे। साथ ही पूर्व में कभी भी घटे हुए घटनाओं वाले स्थलों पर निश्चित तौर से अनुमंडल पदाधिकारी एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी संयुक्त रूप से निरीक्षण करते हुए स्थानीय लोगो से वर्तमान स्थिति की जानकारी लेते हुए शांति व्यवस्था कायम रखना सुनिश्चित कराएंगे। सभी पदाधिकारियों एवं पुलिस पदाधिकारी को निर्देश दिया कि होली पर्व के अवसर पर गाए जाने वाले लोकगीतों में अश्लील गीत गाए जाने और डीजे पर बजने वाले संगीत में अश्लील गीतों के बजने पर पूर्णता रोक लगाएं।

डीजे पर पूर्णता रोक लगाने का निर्देश दिया है इसके साथ ही कहा कि डीजे संचालकों के विरुद्ध धारा 107 के तहत निरोधात्मक कार्रवाई करें। किसी भी हाल में किसी भी क्षेत्र में डीजे का प्रयोग नहीं किया जाएगा इससे सुनिश्चित कराएं, आगे पुलिस पदाधिकारी को निर्देश दिया कि बिहार राज्य में पूर्णता शराबबंदी है। चोरी-छिपे शराब बेचने वालों पर कार्रवाई करते हुए और मादक द्रव्यों का प्रयोग करने वाले लोगों पर निगरानी एवं विधि सम्मत कार्रवाई अपेक्षित है। सभी थाना अंतर्गत शराब चेकिंग अभियान चलाने का निर्देश दिया गया है। शराब को पकड़ने हेतु सहायक आयुक्त उत्पाद से समन्वय स्थापित कर चिन्हित स्थानों पर ड्रोन के माध्यम से निगरानी करें साथ ही यह भी कहा कि गया जिला के सीमावर्ती वोटरों पर विशेष चौकसी बढ़ते हुए प्रत्येक दिन अलग-अलग समय तय करते हुए बॉर्डर पर गुजरने वाले वाहनों की जांच करें। आगे निर्देश दिया कि विशेषकर शेरघाटी के गुरुआ एवं आमस के गांव में पूर्व में घटित स्प्रीट की घटनाओं को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। मूवमेंट पर पूरी निगरानी रखने की आवश्यकता है। होली के त्यौहार में विदेशी, देसी शराब तथा स्प्रिट पर पूरी तरह अंकुश लगाना सभी पदाधिकारियों का दायित्व है। होली पर्व के सौहार्द को बिगाड़ने के लिए सोशल मीडिया पर फैलाए जाने वाले अफवाहों पर निगरानी रखी जाएगी।

जिलाधिकारी ने सभी अनुमंडल पदाधिकारी तथा थाना प्रभारी को सख्त हिदायत दिया कि क्रिमिनल एलिमेंट्स पर 107 धारा की कार्रवाई प्रभावी रूप से करें। बड़े रकम के साथ बाउंड डॉन कराएं तथा वैसे क्रिमिनल जो धारा 107 का बाउंड डाउन हुआ है तथा क्षेत्र में अशांति या बाउंड डाउन का उल्लंघन करते हैं तो उन पर बाउंड डाउन की राशि रिकवरी की कार्रवाई सख्ती से करें। इसके साथ ही अब तक क्रिमिनल एलिमेंट्स के विरुद्ध 58 लोगों के सीसीए का प्रस्ताव प्राप्त हुआ है जिनमें कुछ लोगों का का मेला प्रतिवेदन लंबित है उन्होंने निर्देश दिया कि अपने क्षेत्रों में प्रीवेंटिव एक्शन लेने में कोई कोताही ना बरतें। गुरूवार के बैठक में वरीय पुलिस अधीक्षक ने सभी अनुमंडल पदाधिकारी, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, पुलिस उपाधीक्षक गया को निर्देश दिया कि अपने-अपने क्षेत्र अंतर्गत खासकर संवेदनशील स्थानों पर 24 घंटे पेट्रोलिंग की व्यवस्था रखेंगे। इसके साथ ही वाहनों की चेकिंग निरंतर रूप से करते रहें। सभी पुलिस पदाधिकारी अपने-अपने ड्यूटी स्थान पर बने रहें।

खजौली के मटीनरवा पुल के पास अवैध रूप से हरा लकड़ी को लोडिंग कर बाहर भेजते लकड़ी तस्कर

प्रात: किरण संवाददाता

मधुबनी/खजौली। खजौली प्रखंड़ क्षेत्र के भकुआ पंचायत के मटीनरवा पुल के पास स्थानीय प्रशासन की मिली भगत से ट्रक पर अवैध रूप से हरा लकड़ी को लोडिंग कर तस्करी के लिए हरियाणा राज्य भेजी जा रही है।

बिहार सरकार एक ओर जल जीवन हरियाली के तहत वृक्षा रोपण के लिए योजना चला रही है वही दूसरी ओर दूसरे राज्य से आये लकड़ी तस्कर द्वारा हरा जंगली लकड़ी को काटकर तस्करी की जा रही है। खजौली के मटीनरवा पुल के पास अवैध रूप से हरा लकड़ी को लोडिंग करते लकड़ी तस्कर। बिहार सरकार की महत्वाकांक्षी योजना जल जीवन हरियाही के तहत वृषा रोपण

का योजना चला रही है.वही दूसरी ओर खजौली प्रखंड़ के विभिन्न पंचायत से जंगली हरा लकड़ी को अवैध रूप से कटाई करके बिहार से दूसरे राज्य में तस्करी की जा रही है. बताते दे खजौली प्रखंड़ के भकुआ पंचायत के मटीनरवा पुल के पास हरियाणा राज्य के यमुनानगर के लकड़ी तस्करों द्वारा स्थानीय लोगो के साथ गांठ से हरा लकड़ी को कराई कर उस लकड़ी को ट्रक पर लादकर धड़ल्ले से तस्करी की जा रही है. इस अवैध लकड़ी को तस्करी रोकने में वन विभाग एव स्थानीय प्रशासन विफल साबित हो रही है.इस अवैध लकड़ी कटाई की रोकथाम वन विभाग द्वारा नही करके उसी लकड़ी तस्कर से मिलीभगत कर तस्करी करवा रही है।

वही अवैध रूप से की जा रही लकड़ी तस्करी को जिला पदाधिकारी मधुबनी द्वारा शख्त कदम नही उठाते है तो आने वाले समय मे प्रखंड़ क्षेत्र में जलवायु पर भारी असर दिखेगा।इस बाबत सदर एसडीओ अश्वनी कुमार ने कहा कि ट्रक पर लोड लकड़ी को जप्त कर तस्कर को गिरप्तार किया गया है।

तमिलनाडु में बिहारी को पिटवा रहे हैं बिहार सरकार : प्रदेश प्रवक्ता

प्रात: किरण संवाददाता

गया। भाजपा गया जिला की बैठक भाजपा जिला अध्यक्ष धनराज शर्मा की अध्यक्षता में भाजपा जिला कार्यालय पं दीनदयाल उपाध्याय नगर रसलपूर में संपन्न हुआ है। इस बैठक की शुरूआत पं दीनदयाल उपाध्याय, डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी और कैलाशपति मिश्र के चित्रों पर माल्यार्पण कर राष्ट्रीय गीत से हुआ है।

इस बैठक में मुख्य अतिथि के रूप भाजपा के पूर्व विधायक सह प्रदेश प्रवक्ता मनोज शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा ही देश और राज्य का विकास कर सकती है और केंद्र की सरकार उतरोतर विकास कर भी रही है। बाकी दलों का काम केवल आपस में उलक्षा कर सकता प्राप्ति करना रहा है। आज तमिलनाडु में बिहारी पीटे जा रहे हैं । तमिलनाडु में सरकार द्रमुक पार्टी की है और द्रमुक पार्टी महागठबंधन का हिस्सा है। बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव तमिलनाडु के मुख्यमंत्री से गलबहियां कर रहे हैं और इधर बिहारियों को पीटवाने का काम कर रहे हैं ।किस मुंह से तेजस्वी यादव और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बिहारियों से वोट मांगेंगे।

भाजपा जिला अध्यक्ष धनराज शर्मा ने कहा कि भाजपा संगठन की मजबूती के लिए लगातार बुथ स्तरीय समीक्षा की जा रही है ।बचे हुए बुथो पर पन्ना प्रमुख का सत्यापन कार्य 20 मार्च तक अवश्य कर लें ।14 मार्च से 20मार्च तक अल्पकालिक विस्तारक के रूप में कार्य कर बुथ स्तरीय कमिटी और पन्ना प्रमुख का कार्य संपन्न करना है।

आज पूर्वोत्तर के राज्यों में भाजपा की जीत पर भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी, गृह मंत्री अमित शाह भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा सहित संबंधित राज्यों के कार्यकर्ता को बधाई दिया है। इस अवसर भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य अनिल कुमार सिंह, संजय कुमार सिंह उर्फ चुनु वाबू, शंभू केसरी, भाजपा जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र राम, प्रेम प्रकाश राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता, अजय कुमार, कंचन सिन्हा, नरेन्द्र सिंह दांगी, , कौशल शर्मा,हरे राम सिंह,सहित सभी मंडल अध्यक्ष उपस्थित थे।

किडनी कांड मामले में बिहार मानवाधिकार आयोग ने एसएसपी और डीएम से माँगी रिपोर्ट

प्रात: किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर । जिले के चर्चित किडनी कांड मामले में बिहार मानवाधिकार आयोग ने जिलाधिकारी व एसएसपी से रिपोर्ट की माँग की है तथा मानवाधिकार अधिवक्ता एस. के. झा से 14 मार्च तक प्रतिवेदन समर्पित करने को कहा है।

विदित हो कि पीड़ित महिला सुनीता देवी के ओवरी के ऑपरेशन के दौरान दोनों किडनी निकालने का मामला प्रकाश में आने के बाद मानवाधिकार अधिवक्ता एस. के. झा ने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग एवं राज्य मानवाधिकार आयोग में याचिका दाखिल की थी, जिसपर राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग नई दिल्ली एवं राज्य मानवाधिकार आयोग पटना में सुनवाई चल रही है। बताते चले कि जिले के सकरा थाने के मथुरापुर गाँव की निवासी सुनीता देवी को पेट में दर्द था, जिसका ईलाज वहीं पर बरियारपुर के शुभकान्त क्लिनिक में एक झोलाछाप चिकित्सक डॉक्टर पवन कुमार के द्वारा किया गया। डॉक्टर पवन कुमार ने महिला के गर्भाशय में ट्यूमर होने की बात कही और 3 सितम्बर को महिला का ऑपरेशन किया। ऑपरेशन के बाद सुनीता की तबियत बिगड़ने लगी, शरीर में सूजन होने लगा। तब जाकर महिला के परिजनों के द्वारा मुजफ्फरपुर के एस.के.एम.सी.एच. में सुनीता का सी.टी. स्कैन कराया गया, जिसकी रिपोर्ट में दोनों किडनी दृश्यमान नहीं हैं, ऐसा रिपोर्ट आया। ओवरी ऑपरेशन के दौरान किडनी गायब होने की एफ.आई.आर. के बाद प्रशासनिक अधिकारी सकते में आये और जाँच शुरू हुई, तब मालूम चला कि उक्त क्लिनिक सरकार के मानदंड के अंतर्गत कार्य नहीं कर रही हैं।

मामले के सम्बन्ध में सकरा (बरियारपुर ओपी) थाना कांड संख्या - 461/22 अभियुक्तों के विरुद्ध दर्ज किया गया, जिसमें नामजद अभियुक्त डॉ. पवन कुमार, आर. के. सिंह, संगीता देवी एवं अन्य दो अज्ञात के विरुद्ध मामला सत्य पाया गया है तथा प्राथमिक अभियुक्त डॉ. पवन कुमार को न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजा गया है। आयोग ने मामले की सुनवाई करते हुए जिलाधिकारी मुजफ्फरपुर से पीड़िता के ईलाज हेतु वित्तीय सहायता दिए जाने तथा इस घटना हेतु पीड़िता को मिलने वाली क्षतिपूर्ति अनुदान के सम्बन्ध में रिपोर्ट की माँग की है तथा अन्य अभियुक्तों की गिरफ़्तारी के सम्बन्ध में पुरे ब्यौरे को एसएसपी से माँग की है। *आयोग के आदेशानुसार जो जाँच चल रही हैं, उसमें यह बात प्रकाश में आयी है कि चिकित्सकों की तीन सदस्यीय टीम द्वारा आयोग को जो रिपोर्ट भेजा गया हैं, उसमें स्पष्ट अंकित हैं कि जल्द-से-जल्द मरीज के किडनी डोनर की व्यवस्था कर उच्च संस्थान में रेफर करते हुए किडनी ट्रांसप्लांट की व्यवस्था किया जाए, ताकि मरीज की जान बचाई जा सके।

मामले के सम्बन्ध में मानवाधिकार अधिवक्ता एस. के. झा ने कहा कि संयुक्त समिति द्वारा जो अनुरोध किया गया है, उसपर सरकार को अविलम्ब ध्यान देते हुए मरीज की जान बचाने की दिशा में ठोस पहल करने की आवश्यकता है।

एमडीएम में गड़बड़ी को लेकर डीपीओ को दिया कार्रवाई करने का निर्देश

प्रात: किरण संवाददाता

मधुबनी/खजौली। जन अधिकार पार्टी लोकतांत्रिक मधुबनी ने प्रखंड के खजौली गांव के वार्ड 2 में स्थित राजकीय उत्क्रमित विद्यालय खजौली में बच्चों को मध्यान्ह भोजन मेनू के अनुसार नहीं देने, बच्चों की वर्तमान उपस्थिति से अधिक बच्चों की उपस्थिति दर्ज कर मध्यान्ह भोजन की राशि का दुरूपयोग करने एवं विद्यालय में शिक्षक का समय ने नहीं आने से पठन पाठन प्रभावित होने से संबंधित मामला अनुमंडलीय लोक शिकायत में दर्ज किया था। अनुमंडलीय लोक शिकायत पदाधिकारी ने उक्त मामले की जांच लोक प्राधिकार-सह-प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी खजौली से कराया। विद्यालय में कुल नामांकित छात्र छात्राओं कि संख्या 482 में 382 बच्चो का उपस्थिति, उपस्थिति पंजी में दर्ज पाया। मध्याहन भोजन के बाद भौतिक सत्यापन के समय कुल 77 बच्चे उपस्थित थे। विद्यालय की शिक्षिका ज्योति कुमारी के अनुसार शिक्षक के अभाव में अधिकतर बच्चे मध्याहन भोजन के बाद घर चले जाते है। बीईओ खजौली से प्राप्त जांच प्रतिवेदन के अनुसार विद्यालय का पठन-पाठन एवं मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था सुदृढ़ नहीं पाया गया। बतादें कि मध्यान्ह भोजन योजना सरकार की एक महत्वपूर्ण एवं महत्वाकांक्षी योजना है जिसका उदेश्य सरकारी विद्यालयों में बच्चों नामांकन बढाने, पोषण स्तर बढ़ाने, तथा विद्यालय में बच्चों के ठहराव को सुनिश्चित करना है। किन्तु लोक प्राधिकार के प्रतिवेदन के अवलोकन से स्पष्ट हो रहा है कि उक्त विद्यालय में पठन पाठन एवं मध्याह्न भोजन की व्यवस्था सुदृढ़ नहीं है। साथ ही प्रधानध्यापक द्वारा छात्रों की उपस्थिति बढ़ाकर दर्ज की जा रही है। लोक प्राधिकार के द्वारा संबंधित प्रधानध्यापक के विरुद्ध कार्रवाई के लिए जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, मध्याहन भोजन को भी प्रतिवेदित किया गया है। जिसकी सूचना जिला शिक्षा पदाधिकारी को भी दिया गया है।

होली एवं शब- ए-बारात-पर्व को लेकर प्रमंडलीय आयुक्त ने वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से सभी जिला पदाधिकारी को शांति व्यवस्था बनाए रखने का दिए निर्देश

प्रात: किरण संवाददाता

मुंगेर। प्रमंडलीय आयुक्त श्री संजय कुमार सिंह ने वीडियो कांफ्रेसिंग के माध्यम से मुंगेर प्रमंडल के सभी जिलों के जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक के साथ होली एवं शब-ए-बारात पर्व के अवसर पर विधि व्यवस्था तथा आगामी रविवार को आयोजित तृतीय स्नातक स्तरीय संयुक्त (प्रारंभिक) प्रतियोगिता परीक्षा 2022 के प्रथम चरण की पुर्नपरीक्षा के सफल संचालन को लेकर समीक्षा बैठक की ।साथ राष्ट्रीय अनुसूचित जाति जनजाति आयोग के आगामी 16 मार्च को बिहार के कार्यक्रम के संदर्भ में जिला स्तर पर प्रतिवेदनों एवं लंबित मामले की भी समीक्षा की गयी।

प्रमंडलीय आयुक्त ने होली पर्व के अवसर पर विधि व्यवस्था के संदर्भ में निर्देश देते हुए कहा कि मुंगेर प्रमंडल अंतर्गत शांति रही है लेकिन पूर्व कुछ छिटपुट घटनाएं प्रतिवेदित हैं। इसके मद्देनजर ऐहतियात आवश्यक है। उन्होंने निर्देश दिया कि थाना स्तर, अनुमंडल स्तर एवं जिला स्तर पर शांति समिति की बैठक सुनिश्चित करें। होलिका दहन किसी भी विवादित स्थल पर न हो, इसका थाना स्तर पर जांच कराकर सुनिश्चित कराएं। होली के अवसर पर भड़काउ एवं अश्लील गीत-संगीत तथा डीजे पर रोक लगायी जाए। जाति एवं धर्म संबंधी गीतों पर भी सख्ती से रोक लगाएं। साइबर सेनानी ग्रुको एक्टिव रखें और सोशल मीडिया पर किसी प्रकार का विवादित अथवा अफवाह संबंधित पोस्ट पर निगरानी रखते हुए चैकसी बरती जाए। धार्मिक स्थलों पर ज्यादा सर्तकता एवं निगरानी रखें। होलिका दहन के समय पुलिस बल की भी तैनाती सुनिश्चित की जाए। होलिका दहन विवादित स्थलों पर न हो इसके लिए शनिवार को थाना स्तर पर अंचलाधिकारी द्वारा भूमि विवादों का निपटारा करा ली जाए। संवेदनशील स्थलों, रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड आदि भीड़ भाड़ वाले स्थानों पर पुलिस बल की प्रतिनियुक्ति की जाए। आगामी 7 और 8 मार्च को शब-ए-बारात पर्व भी है। अतएव दोनों पर्वों को लेकर विधि व्यवस्था के संदर्भ में जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक चैकस रहें। जहां आवश्यकता हो, निरोधात्मक कार्रवाई के तहत बॉण्ड डाउन एवं अन्य कार्रवाई इसके अंतर्गत की जाए। ट्रेनों और वाहनों पर पत्थरबाजी की घटना न हो, इस संदर्भ में ध्यान रखें। प्रमंडलीय आयुक्त ने शराब एवं अन्य नशा के उपयोग पर सख्ती से कार्रवाई करने का निर्देश दिया। अभियान चलाकर नशामुक्ति के संदर्भ में कार्रवाई को कहा गया। उन्होंने कहा कि होली के अवसर पर ट्रेनों के माध्यम से काफी संख्या में लोग घर आते हैं और नशाखुरानी गिरोह की सक्रियता बढ़ जाती है, इस संदर्भ में कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। सघन वाहन चेकिंग अभियान चलाएं।

प्रमंडलीय आयुक्त ने आगामी रविवार को आयोजित तृतीय स्नातक स्तरीय संयुक्त (प्रारंभिक) प्रतियोगिता परीक्षा 2022 के प्रथम चरण की पुर्नपरीक्षा के कदाचाररहित एवं सफल संचालन को लेकर सभी जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक को निर्देश देते हुए कहा कि स्वयं हर बिंदुओं की गहन समीक्षा बैठक कर सफल परीक्षा आयोजन सुनिश्चित कराएं। उन्होंने कहा कि यह आवश्यक है कि केंद्राधीक्षक के स्तर से वीक्षकों को भी समुचित ब्रिफिंग सुनिश्चित कराएं। इसके लिए उन्हें सख्त निर्देश दें। परीक्षा में संलग्न सभी पदाधिकारी एवं कर्मी समय पर उपस्थित हों। सभी परीक्षार्थियों की फ्रिसकिंग अच्छी तरह की जाए ताकि किसी प्रकार के कदाचार की गुंजाइश न रहे। परीक्षा के समय सभी वीक्षक क्लास रूम में चैकस एवं सतत निगरानी मोड में रहें। साथ ही अन्य सभी मानकों एवं दिशा निदेर्शों का सत प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करायी जाए।

प्रमंडलीय आयुक्त ने कहा कि राष्ट्रीय अनुसूचित जाति जनजाति आयोग आगामी 16 मार्च को बिहार आएगी। इसके पूर्व तैयारी को लेकर 13 मार्च को वीडिया कांफ्रेंसिंग के माध्यम से राज्य स्तर से बैठक आयोजित है। विहित प्रपत्र में प्रतिवेदन की मांग की गयी है। 60 दिनों से अधिक अनुसूचित जाति/जन जाति के लंबित मामलों की समीक्षा किया जाना है। प्रमंडल अंतर्गत बेगूसराय जिला में अधिक मामले लंबित हैं। सभी पुलिस अधीक्षक अपने स्तर से यथाशीघ्र ऐसे मामलों का निष्पादन सुनिश्चित करेंगे। पुलिस महानिदेशक द्वारा मार्च के अंत तक अनुसूचित जाति जनजाति के मामलों का अधिक से अधिक निष्पादन का निर्देश है।

जिलों से उपरोक्त विषयक की जा रही तैयारियों के संबंध में जानकारी लेने पर मुंगेर जिलाधिकारी द्वारा बताया गया कि आयोजित तृतीय स्नातक स्तरीय संयुक्त (प्रारंभिक) प्रतियोगिता परीक्षा 2022 के प्रथम चरण की पुर्नपरीक्षा के संदर्भ में ब्रिफिंग की गयी है। सभी केंद्रों पर एक एक दण्डाधिकारी प्रतिनियुक्त किया गया है। इस संबंध में सभी तैयारियां कर ली गयी है। होली के अवसर पर जिला शांति समिति की बैठक की गयी है। होली के बाद नदी में स्नान को लेकर गंगा घाटों पर दण्डाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की गयी है। शब-ए-बरात को लेकर सभी मस्जिदों एवं कब्रिस्तान आदि स्थलों पर दण्डाधिकारी के साथ पुलिस बल की प्रतिनियुक्ति की गयी है। होली को लेकर नगर क्षेत्र में ट्रैफिक प्लान तैयार किया गया है। सभी संवेदनशील स्थलों पर पुलिस बल की तैनाती रहेगी। क्यूआरटी टीम भी तैनात रहेगी। जमुई, बेगूसरासय, शेखपुरा, लखीसराय, खगड़िया जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक द्वारा होली एवं शब-ए-बारात, सफल परीक्षा संचालन को लेकर अपनी अपनी तैयारियों के संदर्भ में प्रमंडलीय आयुक्त महोदय को अवगत कराया।

होली में रंग लगाने के बहाने छेड़खानी बंद करने पर केन्द्रित नुक्कड़ नाटक प्रदर्शित

प्रात: किरण संवाददाता

बोचहा ।भारत महिला जीविका स्वालंबी सहकारी समिति के अंर्तगत प्रखंड क्षेत्र मीनापुर के पानापुर पंचायत में शुक्रवार को जीविका व सेंटर फॉर कैटालाइजिंग चेंज के संयुक्त तत्वावधान में होली के अवसर पर रंग लगाने के क्रम में महिलाओं के साथ होने वाली छेड़खानी, घरेलू हिंसा के मुद्दे पर भस्मी ग्राम संघठन की दीदियों द्वारा नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति की गई। इसका मुख्य उद्देश्य समाज में महिलाओं के प्रति हो रही हिंसा के खिलाफ जागरूकता फैलाना और उन्हे साझा शक्ति केंद्र के माध्यम से उचित सहयोग व परामर्श दिलाना है। सी थ्री की तरफ से प्रखंड परियोजना अधिकारी आयुष राज ने बताया कि महिलाओं की समाजिक स्थिति में सुधार लाकर ही लिंग भेद एवम् घरेलू हिंसा जैसी कुरीतियों को समाप्त किया जा सकता है. नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जीविका दीदियों ने समझाया कि कैसे होली के समय पर समाजिक दबाव में आकर महिलायें हिंसा का शिकार हो जाती हैं। इन्हीं कुरीतियों पर आवाज उठाने के लिए वे साझा शक्ति केंद्र में जाकर उचित मदद प्राप्त कर सकती हैं । मौके पर साझा शक्ति केंद्र समन्यवक नगीना कुमारी ने सभी को महिला हिंसा न सहेंगे न सहने देंगे की शपथ भी दिलाई और बताया की समाज में महिला को सशक्त बनाने के लिए जीविका एक मजबूत तंत्र है और सभी उनकी महत्ता, अधिकार और भावनाओं को समझें तो महिलायें समाजिक रूप से भी सशक्त हो सकेंगी।

अब आंगनबाड़ी भवन निर्माण में खानापूर्ति का आया मामला,वार्ड सदस्यों ने डीएम से की शिकायत

मुजु ।जिले के बंदरा प्रखंड अंतर्गत मुन्नी-बैंगरी पंचायत के सकरी मन एपीएचसी परिसर में स्थित आंगनबाड़ी केंद्र की मरम्मती के नाम पर मुखिया और पंचायत सचिव की मिलीभगत से लाखों रुपए की खानापूर्ति करने और लूट-खसोट करने से संबंधित शिकायत जिलाधिकारी से की गई है। इस संबंध में पंचायत के उप मुखिया शिवनाथ कुमार सहनी के नेतृत्व में पंचायत के वार्ड विभिन्न वार्डो के वार्ड सदस्यों ने जिलाधिकारी, उप विकास आयुक्त, प्रखंड विकास पदाधिकारी तथा विधान पार्षद को आवेदन देकर कार्रवाई की मांग की है। दिए गए आवेदन में कहा गया है कि मुन्नी बैंगरी पंचायत के वार्ड संख्या 9 में आंगनवाड़ी केंद्र के मरम्मती का कार्य पंचायत के द्वारा कराया गया था। जिसमें योजना का सही अनुपालन नहीं करते हुए मुखिया और पंचायत सचिव के मिलीभगत से मनमाने ढंग से काम किया गया है। इस योजना में नया चापाकल गरवाने की जगह पुराने पाइप में ही नया हेड लगा दिया गया है। आंगनवा

सम्पादकीय

लुढकती विकास दर

वित्त वर्ष 2022-23 की तीसरी तिमाही, अक्तूबर-दिसंबर, में हमारी जीडीपी की विकास दर लुढक कर 4.4 फीसदी दर्ज की गई है। पहली तिमाही, अप्रैल-जून, में विकास दर 13.2 फीसदी तक उछली थी और दूसरी तिमाही, जुलाई-सितंबर, में भी 6.3 फीसदी रही थी। उन्हीं के आधार पर अनुमान लगाए गए थे कि मौजूदा वित्त वर्ष के दौरान औसत विकास दर 7 फीसदी के करीब रह सकती है, लेकिन अब उस स्तर को छूना है, तो अंतिम तिमाही, जनवरी-मार्च, में यह दर कमोबेश 5.1 फीसदी होनी चाहिए। लाल संकेत ये हैं कि अर्थशास्त्रियों के आकलन हैं कि अंतिम तिमाही में विकास दर 4 फीसदी के करीब हो सकती है। इसके मायने ये नहीं हैं कि हमारी अर्थव्यवस्था उबरने के बाद फिर गोता खाने की स्थिति में पहुंच गई है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अब भी भारत की विकास दर अमरीका, जर्मनी, फ्रांस, जापान आदि देशों से बहुत बेहतर स्थिति में है। हम चीन के लगभग बराबर ही हैं, लेकिन तीसरी तिमाही के दौरान निजी खपत की मांग, सरकारी व्यय, निर्यात और मैन्यूफैक्चरिंग के क्षेत्र में गिरावट दर्ज की गई है, नतीजतन विकास दर भी प्रभावित हुई है।

लोगों की क्रय-शक्ति कम हुई है, तो मांग घटी है। मांग और खपत परस्पर पूरक हैं। मांग कम होगी, तो कारखाने उत्पादन भी कम करेंगे। नतीजतन रोजगार भी प्रभावित होगा। मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र में 1.1 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है, जबकि बीते वर्ष इसी तिमाही में यह दर 11.2 फीसदी थी। मैन्यूफैक्चरिंग जीडीपी का बेहद महत्वपूर्ण घटक है, क्योंकि सबसे अधिक रोजगार देने वाले क्षेत्रों में एक है। लोगों की निजी खपत 2.1 फीसदी कम हुई है, तो सरकारी उपभोग व्यय भी 1.0 फीसदी घटा है और नेट निर्यात भी 6.7 फीसदी कम किया गया है। राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग की रपट है कि औसत महंगाई दर 7.2 फीसदी है, जो तय लक्ष्य से ज्यादा है। जुलाई-सितंबर की तिमाही में महंगाई दर 6.3 फीसदी थी। उपभोक्ता को सीधे प्रभावित करने वाली महंगाई को इस तरह समझा जा सकता है कि रसोई गैस के दाम 50 रुपए प्रति सिलेंडर बढ़ा दिए गए हैं। अब राजधानी दिल्ली में यह सिलेंडर 1103 रुपए में मिलेगा, जबकि अन्य महानगरों में ज्यादा महंगा कर दिया गया है। कमर्शियल सिलेंडर भी 350 रुपए महंगा किया गया है। अनाज की कीमतें 15 फीसदी तक बढ़ी हैं, जबकि आटा 40 फीसदी महंगा हो गया है। दूध भी कई गुना महंगा हुआ है।

इसका संपूर्ण विश्लेषण हम पहले ही कर चुके हैं। अब आसार ऐसे हैं कि कमोबेश इस साल खाने-पीने की महंगाई से कोई भी राहत मिलने वाली नहीं है। बेशक हम विश्व में सबसे तेज उभरने वाली अर्थव्यवस्था हैं, लेकिन जी-20 समूह के देशों में हम सबसे गरीब देश हैं, क्योंकि हम निम्न मध्य वर्ग की अर्थव्यवस्था हैं। भारत आने वाले वर्षों में जर्मनी और जापान सरीखे देशों को पीछे कर तीसरे स्थान की अर्थव्यवस्था भी बन सकता है, लेकिन हमारी अर्थव्यवस्था और आर्थिक असमानताओं के कारण हमारी विकास दर भी प्रभावित होती रहेगी। मुद्रास्फीति जैसे मुद्दों पर केंद्र और राज्य सरकारें आपस में मिल-बैठ कर विमर्श कर सकती हैं। कृषि पर भी कोई सर्वमान्य रास्ता निकाला जा सकता है, लेकिन हमारे देश में गैर-जिम्मेदाराना राजनीति बहुत है। कृषि को भारत में राजनीतिक गतिविधि मान रखा है। कृषि को आर्थिक गतिविधि नहीं माना गया है, जबकि उसकी विकास दर कोरोना-काल में भी सकारात्मक थी। बेशक सरकार दलीलें देती रहे कि हमारा जीएसटी संग्रह बढ़ रहा है, विदेशी मुद्रा कोष और निवेश भी बढ़ते रहे हैं, लेकिन आम नागरिक का चिंतित सरोकार महंगाई से है। वह अर्थव्यवस्था के साथ-साथ विकास दर को भी प्रभावित करती है। अर्थशास्त्री मान रहे हैं कि जो आंकड़े राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग ने जारी किए हैं, उनके मद्देनजर कहा जा सकता है कि भारत अपने विकास की गति तेजी से खो रहा है, लिहाजा इस वित्त वर्ष में विकास दर को 7 फीसदी तक पहुंचना संभव नहीं होगा। महंगाई के कारण गरीब और मध्यम वर्ग परेशान हो चुका है। इस समस्या से बाहर निकलने का कोई समाधान भी नहीं दिख रहा है।

आधी आबादी और समानता की आस

डॉ. निवेदिता शर्मा

संयुक्त राष्ट्र महासचिव गुटेरेश ने हाल ही में विज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को हरसम्भव समर्थन देने की की घोषणा की है। निसंदेह इससे इस क्षेत्र में महिलाओं की संख्या बढ़ेगी। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन के अनुसार, स्कूलों में लड़कियों की संख्या पहले की तुलना में कहीं अधिक है, लेकिन विज्ञान, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, और गणित विषयों में उनका प्रतिनिधित्व अब भी कम है। हर तीन में से केवल एक शोधकर्ता महिला है। कृत्रिम बुद्धिमता जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों में इनकी संख्या और भी कम है। यहां हर पांच में से केवल एक महिला ही कार्यरत है। देखा जाए तो चिंता का विषय इतना भर नहीं है कि विज्ञान अथवा तकनीक के क्षेत्र में महिलाओं के साथ न्याय नहीं हो रहा। व्यवहार में सच यही है कि जो देश स्वयं को बहुत विकसित मानते हैं, वहां भी लैंगिक समानता का अभाव हर स्तर पर है। यही कारण है कि विश्व में किसी भी स्थान की महिला क्यों न हो, वह आपको अपने लिए सामाजिक, तकनीति, शोध एवं रोजगार के समस्त क्षेत्रों में संघर्ष करती और सहज रास्ता खोजती दिखाई देती है ।

इसे यदि भारत के संदर्भ में देखें तो श्रम बाजार में महिलाओं की स्थिति पुरुषों की तुलना में अब तक ठीक नहीं हो पाई है। हालांकि यह स्वीकार करना होगा कि केंद्र में मोदी सरकार के आने के बाद जरूर नवाचारों का बड़ा परिवर्तन दिखाई दिया है। राजनीतिक तौर पर जागृति आई है और सामाजिक स्तर पर इसका लाभ यह हुआ है। बावजूद इसके यह भी स्वीकारना होगा कि जो परिवर्तन होने चाहिए वह अभी बदलाव बाकी है।

विश्व आर्थिक मंच की द ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट की पिछले साल की रिपोर्ट भी महत्वपूर्ण है। वह भी यही इशारा करती है। पुरुषों और महिलाओं के बीच श्रम भागीदारी असमानता में एक से चार प्रतिशत का अंतर सामान्यतः देखा जा सकता है। एक बारगी को शासकीय नौकरियों और निजी क्षेत्र के कुछ विशेष रोजगार स्थलों को छोड़ दिया जाए तो आज भी समान कार्य का समान वेतन एक महिला होने के कारण से उसे नहीं दिया जा रहा है। एक सर्वे संपूर्ण भारत के संदर्भ मां दृष्टि स्त्री अध्ययन प्रबोधन केंद्र का भी सामने आ चुका है। यह रिपोर्ट देश के 29 राज्यों और सात केंद्र शासित प्रदेशों की 74 हजार से अधिक महिलाओं के अनुभव पर आधारित है ।

इस सर्वे में सामने आया कि पचास प्रतिशत महिलाएं ही दिन में दोबार भोजन कर पाती हैं। 3.73 प्रतिशत महिलाओं को दिन में एक बार ही भोजन मिलता है। 18 साल से कम की 64 प्रतिशत लड़कियों को माहवारी से जुड़ी समस्याएं हैं। दूसरे नंबर पर आर्थराइटिस की समस्या सामने आई । 5.28 प्रतिशत महिलाएं ब्लड प्रेशर, 3.07 प्रतिशत महिलाएं हृदय रोग, 1.62 प्रतिशथ डायबिटीज और 0.51 प्रतिशत महिलाएं कैंसर से जूझ रही हैं। सर्वे में शिक्षा का सर्वाधिक प्रतिशत ईसाई समुदाय की महिलाओं में और उसके बाद हिंदू, बौद्ध, मुस्लिम, जैन और सिख समुदाय की महिलाओं में पाया गया। सबसे अधिक जनजाति महिलाएं रोजगार से संबद्ध मिलीं। सामान्य अन्य कैटेगरी में बेरोजगारी की दर सबसे ज्यादा पाई गई । उसमें भी जिनके पास रोजगार है तो उनकी शिकायतें अधिक हैं जैसे-बच्चों के लिए क्रेच की सुविधा उपलब्ध नहीं, कैंटीन, परिवहन और कार्यस्थल पर रेस्ट रूम की सुविधा नहीं, 60% से भी अधिक को लोन सुविधा नहीं।

इस सर्वे में पाया गया कि शादी और आर्थिक तंगी के कारण लड़कियों को बीच में ही पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। आरक्षण एससी और एसटी और ओबीसी लड़कियों को उच्च शिक्षा हासिल करने में मददगार है। सर्वे में दो तिहाई महिलाएं अपने रुचि के विषयों के बारे में नहीं बता पाईं, जिससे पता चलता है कि उन पर जिम्मेदारियां इतनी अधिक हैं कि उन्हें अपनी रुचि के बारे में सोचने का मौका ही नहीं मिलता। सर्वे में शामिल एक चौथाई महिलाओं ने बताया कि वह अपने लिए फुरसत के पल नहीं निकाल पातीं। इसके साथ ही इस सर्वे में कहा गया है कि आध्यात्मिक क्षेत्र से जुड़ीं महिलाएं दूसरे क्षेत्र की महिलाओं से ज्यादा खुश हैं। लिव इन में रहने वालीं महिलाओं की तुलना में शादी कर घर बसाने वालीं महिलाएं ज्यादा खुश हैं। 90 प्रतिशत ऐसी महिलाएं, जिनके पास परिवार और रोजगार दोनों ही नहीं, वह ज्यादा खुश हैं। इस सर्वे का निचोड़ कि पैसे का खुशियों से कोई संबंध नहीं है। वास्तव में यह रिपोर्ट भारत की समस्त स्त्री जाति के समग्र अध्ययन को लेकर है। लेकिन इसमें भी जो बात निकलकर सामने आई है वह यही है कि रोजगार के स्तर पर कार्यरत अधिकांश महिलाएं खुश नहीं हैं।

नडेला से अजय बांगा तक - क्यों सफल होते भारतवंशी

आप गौर करें कि भारतवंशी सिर्फ सियासत में ही झंडे नहीं गाड़ रहे हैं। ये तो हम 1960 के दशक से सुन रहे हैं। तब पहली बार कैरिबियाई टापू देश गुयाना में छेदी जगन राष्ट्राध्यक्ष बने थे। उनके बाद न जाने कितने भारतवंशी गुयाना, त्रिनिडाड, फीजी, मारीशस, सूरीनाम में सर्वोच्च पदों पर पहुंचे। अब ब्रिटेन में भारतवंशी और इंफोसिस कंपनी के फाउंडर चेयरमेन एन .नारायणमूर्ति के दामाद श्रषि सुनक ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बन गए। अब बात सियासत से हटकर बिजनेस की करेंगे। आप जानते हैं कि बीते बीसेक सालों के दौरान इंदिरा नुई (पेप्सी), पराग अग्रवाल (ट्वीटर), विक्रम पंडित (सिटी बैंक), सुंदर पिचाई (गूगल), सत्या नेडाला (माइक्रोसाफ्ट), शांतनु नारायण (एडोब), राजीव सूरी (नोकिया) जैसी प्रख्यात कंपनियों के भारतीय सीईओ बन गए। अब बिल्कुल हाल ही में अजय बांगा को अमेरिका के राष्ट्रपति जो बीडेन ने वर्ल्ड बैंक का अध्यक्ष मनोनीत कर दिया।

आर.के. सिन्हा
लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व

भारत के सात समंदर पार से भारतवंशियों के सफलता की खबरें-कहानियां लगातार भारतीय मीडिया की सुर्खियां बनने लगी हैं। आप गौर करें कि भारतवंशी सिर्फ सियासत में ही झंडे नहीं गाड़ रहे हैं। ये तो हम 1960 के दशक से सुन रहे हैं। तब पहली बार कैरिबियाई टापू देश गुयाना में छेदी जगन राष्ट्राध्यक्ष बने थे। उनके बाद न जाने कितने भारतवंशी गुयाना, त्रिनिडाड, फीजी, मारीशस, सूरीनाम में सर्वोच्च पदों पर पहुंचे। अब ब्रिटेन में भारतवंशी और इंफोसिस कंपनी के फाउंडर चेयरमेन एन.नारायणमूर्ति के दामाद श्रषि सुनक ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बन गए। अब बात सियासत से हटकर बिजनेस की करेंगे। आप जानते हैं कि बीते बीसेक सालों के दौरान इंदिरा नुई (पेप्सी), पराग अग्रवाल (ट्वीटर), विक्रम पंडित (सिटी बैंक), सुंदर पिचाई (गूगल), सत्या नेडाला (माइक्रोसाफ्ट), शांतनु नारायण (एडोब), राजीव सूरी (नोकिया) जैसी प्रख्यात कंपनियों के भारतीय सीईओ बन गए। अब बिल्कुल हाल ही में अजय बांगा को अमेरिका के राष्ट्रपति जो बीडेन ने वर्ल्ड बैंक का अध्यक्ष मनोनीत कर दिया। बांगा की विश्व स्तर पर पहचान तब बनी थी, जब वे मास्टर कार्ड के सीईओ थे। दरअसल बिजनेस में अजय बांगा या उनके जैसे सैकड़ों भारतीय अमेरिका तथा यूरोप में अपनी इबारत इसलिए लिख रहे हैं, क्योंकि उन्हें अपने देश में बहुत ही स्तरीय शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिला। श्रेष्ठ शिक्षा ग्रहण करने के चलते ही लाखों भारतीयों की हर साल तकदीर बदल रही है। भारत में एक से बढ़कर एक विश्व स्तर के शिक्षण संस्थान हैं।

इसलिये कम से कम यह तो मत ही कहिये कि हमारे यहाँ की तमाम शिक्षण संस्थायें बकवास हैं ककुछ हो भी सकती हैं, जैसे कहीं भी हो सकती हैं, लेकिन सभी नहीं अजय बांगा को ही लें। उनका वर्ल्ड बैंक का प्रमुख बनना तय है। सबको गर्व है कि एक भारतीय मूल के शख्स को इतनी अहम जिम्मेदारी मिलने जा रही है। उन्होंने राजधानी के सेंट स्टीफंस कॉलेज तथा आईआईएम, अहमदाबाद में पढ़ाई की थी। पर जिस संस्था ने सेंट स्टीफंस कॉलेज की नींव रखी थी उसे कितने लोग जानते हैं। उसकी बात करना भी जरूरी है। इसका नाम है दिल्ली ब्रदर्स सोसायटी। इससे गांधी जी के सहयोगी और स्वाधीनता सेनानी दीन बंधु सीएफ एंड्रयूज भी जुड़े हुए थे। वे सेंट स्टीफंस कॉलेज में अंग्रेजी पढ़ाते थे। वे दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी से 1914 में मिले थे। उन्हीं के प्रयासों से ही गांधी जी और कस्तूरबा गांधी पहली बार 12 अप्रैल-15 अप्रैल, 1915 को दिल्ली आए थे। वे ब्रिटिश नागरिक होते हुए भी भारत की आजादी के प्रबल पक्षधर थे। इससे अंदाजा लग जाएगा कि सेंट स्टीफंस कॉलेज को खोलने वाली संस्था का मूल चरित्र किस तरह का है। उसकी भारत को लेकर निष्ठा निर्विवाद है। बांगा ने इंडियन इंस्टीच्यूट आफ मैनेजमेंट (आईआईएम), अहमदाबाद से भी पढ़ाई की।

भारत सरकार, गुजरात सरकार और औद्योगिक क्षेत्रों के सक्रिय सहयोग से एक स्वायत्त निकाय के रूप में 1961 में इसकी स्थापना हुई। चार दशकों में यह भारत के प्रमुख प्रबंधन संस्थान से एक उल्लेखनीय अंतरराष्ट्रीय मैनेजमेंट स्कूल के रूप में विकसित हुआ है। आईआईएम के विद्यार्थी सारी दुनिया में छाए हुए हैं। आईआईएम ने हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के साथ प्रारंभिक सहयोग किया था। इस सहयोग ने संस्थान के शिक्षा के दृष्टिकोण को काफी प्रभावित किया। धीरे-धीरे, यह पूर्वी और पश्चिमी मूल्यों के सर्वोत्तम संगम के रूप में उभरा।

आप गौर करें कि भारत या भारत से बाहर जाकर बड़ी कामयाबी हासिल करने वालों में आईआईटी में पढ़े छात्रों की तादाद बहुत अधिक है। एन. नारायणमूर्ति खुद आईआईटी कानपुर से हैं। पराग अग्रवाल पढ़े हैं आईआईटी, मुंबई में। इसने देश-दुनिया को चोटी के सीईओ से लेकर इंजीनियर दिए हैं। आप नए उद्यमियों जैसे सचिन बंसल और बिन्नी बंसल की चर्चा न करें ऐसा तो नहीं हो सकता। इन दोनों ने 2007 में फ्लिपकार्ट की स्थापना की थी। ये दोनों आईआईटी, दिल्ली में रहे। भारत में पहली आईआईटी की स्थापना कोलकाता के पास स्थित खड़गपुर में 1950 में हुई थी। भारत की संसद ने 15 सितंबर 1956 को आईआईटी एक्ट को मंजूरी देते हुए इसे ह्वराष्ट्रीय महत्व के संस्थानह्व घोषित कर दिया। इसी तर्ज.पर अन्य आईआईटी मुंबई (1958), मद्रास (1959), कानपुर (1959), तथा नई दिल्ली (1961) में स्थापित हुंई। फिर गुवाहाटी में आई आई टी की स्थापना हुई। सन 2001 में रुड़की स्थित रुड़की विश्वविद्यालय को भी आईआईटी का दर्जा दिया गया। तो बहुत साफ है कि दशकों पहले भारत से संसार के विभिन्न देशों में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री तक बन रहे हैं।

और अब भारत में ही शिक्षित नौजवान दुनिया के चोटी की कंपनियों के सीईओ बनाए जा रहे हैं। ये इसलिए हो रहा है, क्योंकि इन्हें श्रेष्ठ शिक्षा मिल रही है। पर हमें देश के तमाम कॉलेजों को सेंट स्टीफंस, आईआईटी और आईआईएम के स्तर के बनाने के बारे में विचार करना होगा। इन्हें आधुनिक सुविधाओं से लैस करना होगा। पर सबसे अहम चुनौती यह रहेगी कि इन में बेहतरीन फैक्ल्टी की नियुक्ति हो। हमें उन अध्यापकों को प्रोत्साहित करना होगा जो अपने शिष्यों के प्रति समर्पण का भाव रखते हैं। अध्यापकों को अपने को लगातार अपने विषय की आधुनिकतम जानकारी से अपडेट रखना होगा। आमतौर पर हमारे यहां बहुत से अध्यापक एक बार स्थायी पर लगने के बाद कभी कुछ नया लिखते-पढ़ते नहीं हैं। हमें अपने स्कूलों को भी निरंतर सुधार करते रहना होगा संतोष की बात कि दिल्ली ब्रदर्स सोसायटी अब दिल्ली-सोनीपत सीमा पर एक स्कूल स्थापित करने जा रही है। यानी कॉलेज खोलने के बाद अब स्कूल खोला जा रहा है। इसका भी लक्ष्य सर्वश्रेष्ठ शिक्षा ही देना होगा जहां से जैसे मेधावी छात्र पढ़कर बेहतर नागरिक बनें। जिस संस्था का संबंध दीन बंधु सीएफ एंड्रयूज से है, वह तो श्रेष्ठ स्कूल ही खोलेगी। दरअसल हमारे यहां कई धूर्त तत्वों ने स्कूलों को कमाई का धंधा बनाया हुआ है। उनको कसने की जरूरत है। इनका शिक्षा से कोई लेना-देना नहीं है। पर ये जुगाड़ करके स्कूलों के लिए जमीन हथियाने में सफल रहे। उसके बाद ये लूटपाट कर रहे हैं। इसी तरह से दिल्ली में अरविंद केजरीवाल सरकार ने स्कूलों में सुधार के नाम पर राजधानी वालों को बहुत ठगा है। हां, कुछ स्कूलों की इमारतें नई अवश्य बन गई हैं। इसके अलावा इनमें कहीं कोई सुधार नहीं हुआ। ये स्थिति बदलनी होगी।

जन जन कि आस्था के प्रतीक हैं खाटू के श्री श्याम

मंदिरों में से एक है राजस्थान में शेखावाटी क्षेत्र के सीकर जिले का विश्व विख्यात प्रसिद्ध खाटू श्याम मंदिर। यहां फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को श्याम बाबा का विशाल वार्षिक मेला भरता है। जिसमें देश-विदेशों से आये करीबन 25 से 30 लाख श्रृद्धालु शामिल होते हैं। खाटू श्याम का मेला राजस्थान के बड़े मेलों में से एक है। इस मंदिर में भीम के पौत्र और घटोत्कच के पुत्र बर्बरीक की श्याम यानी कृष्ण के रूप में पूजा की जाती है। इस मंदिर के लिए कहा जाता है कि जो भी इस मंदिर में जाता है उन्हें श्याम बाबा का नित नया रूप देखने को मिलता है। कई लोगों को तो इस विग्रह में कई बदलाव भी नजर आते है। कभी मोटा तो कभी दुबला। कभी हंसता हुआ तो कभी ऐसा तेज भरा कि नजरें भी नहीं टिक पातीं। श्याम बाबा का धड़ से अलग शीष और धनुष पर तीन वाण की छवि वाली मूर्ति यहां स्थापित की गईं। कहते हैं कि मन्दिर की स्थापना महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद स्वयं भगवान कृष्ण ने अपने हाथों की थी।

रमेश सर्राफ धमोरा
लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं

हमारे देश में बहुत से ऐसे धार्मिक स्थल हैं जो अपने चमत्कारों व वरदानों के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्हीं मंदिरों में से एक है राजस्थान में शेखावाटी क्षेत्र के सीकर जिले का विश्व विख्यात प्रसिद्ध खाटू श्याम मंदिर। यहां फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को श्याम बाबा का विशाल वार्षिक मेला भरता है। जिसमें देश-विदेशों से आये करीबन 25 से 30 लाख श्रृद्धालु शामिल होते हैं। खाटू श्याम का मेला राजस्थान के बड़े मेलों में से एक है।

इस मंदिर में भीम के पौत्र और घटोत्कच के पुत्र बर्बरीक की श्याम यानी कृष्ण के रूप में पूजा की जाती है। इस मंदिर के लिए कहा जाता है कि जो भी इस मंदिर में जाता है उन्हें श्याम बाबा का नित नया रूप देखने को मिलता है। कई लोगों को तो इस विग्रह में कई बदलाव भी नजर आते है। कभी मोटा तो कभी दुबला। कभी हंसता हुआ तो कभी ऐसा तेज भरा कि नजरें भी नहीं टिक पातीं। श्याम बाबा का धड़ से अलग शीष और धनुष पर तीन वाण की छवि वाली मूर्ति यहां स्थापित की गईं। कहते हैं कि मन्दिर की स्थापना महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद स्वयं भगवान कृष्ण ने अपने हाथों की थी।

श्याम बाबा की कहानी महाभारत काल से आरम्भ होती है। वे पहले बर्बरीक के नाम से जाने जाते थे तथा भीम के पुत्र घटोतकच और नाग कन्या अहिलवती के पुत्र थे। बाल्यकाल से ही वे बहुत वीर और महान योद्धा थे। उन्होने युद्ध कला अपनी मां से सीखी। भगवान शिव की घोर तपस्या करके उन्हें प्रसन्न किया और उनसे तीन अभेध्य बाण प्राप्त कर तीन बाणधारी के नाम से प्रसिद्ध हुये। अग्नि देव ने प्रसन्न होकर उन्हें धनुष प्रदान किया जो उन्हें तीनो लोकों में विजयी बनाने में समर्थ थे।

कौरवों और पाण्डवों के मध्य महाभारत युद्ध का समाचार बर्बरीक को प्राप्त हआ तो उनकी भी युद्ध में सम्मिलित होने की इच्छा जागृत हुयी। जब वे अपनी मां से आशीर्वाद प्राप्त करने पहुंचे तब मां को हारे हुये पक्ष का साथ देने का वचन दिया। महाभारत के युद्ध में भाग लेने के लिये वे अपने नीले रंग के घोडे पर सवार होकर धनुष व तीन बाणों के साथ कुरूक्षेत्र की रणभूमि की और अग्रसर हुये।

भगवान कृष्ण ने ब्राह्मण वेश धारण कर बर्बरीक से परिचित होने के लिये उसे रोका और यह जानकर उनकी हंसी भी उड़ायी कि वह मात्र तीन बाण से युद्ध में सम्मिलित होने आया है। ऐसा सुनने पर बर्बरीक ने उत्तर दिया कि मात्र एक बाण शत्रु सेना को ध्वस्त करने के लिये पर्याप्त है और ऐसा करने के बाद बाण वापिस तरकस में ही आयेगा। यदि उन्होने तीनो बाणों को प्रयोग में ले लिया गया तो तीनो लोकों में हाहाकार मच जायेगा। इस पर कृष्ण ने उन्हें चुनौती दी की इस पीपल के पेड के सभी पत्रों को छेद कर दिखलाओ। जिसके नीचे दोनो खड़े थे। बर्बरीक ने चुनौती स्वीकार की और अपने तुणीर से एक बाण निकाला और ईश्वर को स्मरण कर बाण पेड़ के पत्तो की और चलाया।

तीर ने क्षण भर में पेड के सभी पत्तों को भेद दिया और कृष्ण के पैर के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने लगा। क्योंकि एक पत्ता उन्होनें अपने पैर के नीचे छुपा लिया था। तब बर्बरीक ने कृष्ण से कहा कि आप अपने पैर को हटा लीजिये वर्ना ये आपके पैर को चोट पहुंचा देगा। कृष्ण ने बालक बर्बरीक से पूछा कि वह युद्ध में किस और से सम्मिलित होगा तो बर्बरीक ने अपनी मां को दिये वचन दोहराते हुये कहा कि वह युद्ध में निर्बल और हार की और अग्रसर पक्ष की तरफ से भाग लेगा। कृष्ण जानते थे कि युद्ध में हार तो कौरवों की ही निश्चित है। अगर बर्बरीक ने उनका साथ दिया तो परिणाम उनके पक्ष में ही होगा।

ब्राह्मण बने कृष्ण ने बालक बर्बरीक से दान की अभिलाषा व्यक्त की। इस पर वीर बर्बरीक ने उन्हें वचन दिया कि अगर वो उनकी अभिलाषा पूर्ण करने में समर्थ होगा तो अवश्य करेगा। कृष्ण ने उनसे शीश का दान मांगा। बालक बर्बरीक क्षण भर के लिये चकरा गया परन्तु उसने अपने वचन की दृढ़ता जतायी। बालक बर्बरीक ने ब्राह्मण से अपने वास्तिवक रूप में आने की प्रार्थना की और कृष्ण के बारे में सुन कर बालक ने उनके विराट रूप के दर्शन की अभिलाषा व्यक्त की। तब कृष्ण ने उन्हें अपना विराट रूप दिखाया।

उन्होने बर्बरीक को समझाया कि युद्ध आरम्भ होने से पहले युद्धभूमि की पूजा के लिये एक वीर क्षत्रिय के शीश के दान की आवश्यक्ता होती है। उन्होनें बर्बरीक को युद्ध में सबसे बड़े वीर की उपाधि से अलंकृत कर उनका शीश दान में मांगा। बर्बरीक ने उनसे प्रार्थना की कि वह अंत तक युद्ध देखना चाहता है। श्री कृष्ण ने उनकी यह बात स्वीकार कर ली। फाल्गुन माह की द्वादशी को उन्होनें अपने शीश का दान दिया। उनका सिर युद्धभूमि के समीप ही एक पहाड़ी पर सुशोभित किया गया जहां से बर्बरीक सम्पूर्ण युद्ध का जायजा ले सकते थे।

युद्ध की समाप्ति पर पांडवों में ही आपसी खींचाव हुआ कि युद्ध में विजय का श्रेय किसको जाता है। इस पर कृष्ण ने उन्हें सुझाव दिया कि बर्बरीक का शीश सम्पूर्ण युद्ध का साक्षी है। उससे बेहतर निर्णायक भला कौन हो सकता है। सभी इस बात से सहमत हो गये। बर्बरीक के शीश ने उत्तर दिया कि कृष्ण ही युद्ध मे विजय प्राप्त कराने में सबसे महान पात्र हैं। उनकी शिक्षा, उनकी उपस्थिति, उनकी युद्धनीति ही निर्णायक थी। उन्हें युद्धभूमि में सिर्फ उनका सुदर्शन चक्र घूमता हुआ दिखायी दे रहा था जो कि शत्रु सेना को काट रहा था। महाकाली दुर्गा कृष्ण के आदेश पर शत्रु सेना के रक्त से भरे प्यालों का सेवन कर रही थी।

कृष्ण वीर बर्बरीक के महान बलिदान से काफी प्रसन्न हुये और वरदान दिया कि कलियुग में तुम श्याम नाम से जाने जाओगे, क्योंकि कलियुग में हारे हुये का साथ देने वाला ही श्याम नाम धारण करने में समर्थ होगा। ऐसा माना जाता है कि एक बार एक गाय उस स्थान पर आकर अपने स्तनों से दुग्ध की धारा स्वतरू ही बहा रही थी बाद में खुदायी के बाद वह शीश प्रकट हुआ।

एक बार खाटू के राजा को स्वप्न में मन्दिर निर्माण के लिये और वह शीश मन्दिर में सुशोभित करने के लिये प्रेरित किया गया। तदन्तर उस स्थान पर मन्दिर का निर्माण किया गया और कार्तिक माह की एकादशी को शीश मन्दिर में सुशोभित किया गया, जिसे बाबा श्याम के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। मूल मंदिर 1027 ई. में रूपसिंह चैहान और उनकी पत्नी नर्मदा कंवर द्वारा बनाया गया था। मारवाड़ के शासक ठाकुर के दीवान अभय सिंह ने ठाकुर के निर्देश पर 1720 ई0 में मंदिर का जीर्णोद्धार कराया। मंदिर इस समय अपने वर्तमान आकार ले लिया और मूर्ति गर्भगृह में प्रतिष्ठापित किया गया था। मूर्ति दुर्लभ पत्थर से बनी है।

पिछले वर्ष अगस्त को खाटू श्याम मंदिर में दर्शन करने जा रही 3 महिलाओं की भगदड़ में मौत होने के बाद प्रशासन यहां की व्यवस्था को लेकर पूरा सख्त हो गया। जिला प्रशासन व मंदिर प्रबंध कमेटी ने मिलकर खाटू श्याम मंदिर परिक्षेत्र में कई नई सुविधाओं को प्रारंभ किया है। यहां के आम रास्तों को 40 फीट तक चौड़ा किया गया है। मंदिर में दर्शन करने की व्यवस्था में भी आमूलचूल परिवर्तन किया गया है। इससे मंदिर में दर्शन करने आने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा हो रही है।

सुप्रीम कोर्ट के फैसलों से न्यायपालिका पर विश्वास बढ़ा

सनत कुमार जैन

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को दो फैसले दिए हैं। एक फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने निर्वाचन आयोग के आयुक्त की नियुक्ति को लेकर स्पष्ट व्यवस्था दी है। जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने कहा है, कि चुनाव आयुक्त की नियुक्ति में प्रधानमंत्री, विपक्ष के नेता और सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश की समिति निर्णय करेगी। संवैधानिक पदों पर नियुक्ति को लेकर यह व्यवस्था पहले भी थी। लेकिन 2014 में मोदी सरकार बनने के बाद से तथा कांग्रेस को 10 फीसदी सीटों पर सफलता नहीं मिलने के कारण लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष का पद खाली है। उसके बाद से प्रधानमंत्री ही संवैधानिक पदों पर नियुक्त होने वाले लोगों की नियुक्तियां करते रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में स्पष्ट कर दिया है, कि भले 10 फीसदी सीटें जीतकर विपक्षी दल ना भी आया हो, तो भी जो सबसे बड़ा विपक्षी दल है। उसके नेता को समिति की बैठक में शामिल कर चुनाव आयुक्त की नियुक्ति करना होगी। संविधान पीठ की अध्यक्षता कर रहे केएम जोसफ ने अपने फैसले ने कहा कि किसी मजबूत और उदार लोकतंत्र की पहचान और ताकत नागरिकों को मिलने वाले अधिकारों पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा मतदान की ताकत लोकतंत्र में सबसे ज्यादा है। वह शक्तिशाली दल को भी सत्ता से बाहर निकालने की ताकत रखता है। निर्वाचन आयोग की स्वतंत्रता बनी रहे यह जरुरी है।

इसी तरह अडानी समूह के आरोपों की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट ने पूर्व जज एएम सप्रे की अध्यक्षता में 6 सदस्य समिति का गठन किया है। इस समिति में ओपी भट्ट, जस्टिस जे पी देवदत्त, केवी कामत, नंदन नीलेकणी और सोमशेखरण सुंदरेसन को समिति का सदस्य बनाया गया है।

उच्चतम न्यायालय द्वारा गठित इस समिति के निर्देश पर सिक्योरिटी एंड एक्सचेंज बोर्ड आफ इंडिया (सेबी) के माध्यम से 2 माह के अंदर अडानी समूह के ऊपर हिंडन बर्ग की रिपोर्ट में जो आरोप लगाए गए हैं। उनकी जांच करके सील बंद लिफाफे में सुप्रीम कोर्ट को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी। सुप्रीम कोर्ट ने सरकार के बंद लिफाफे में सरस्यों के नो नाम सौंपे गए थे। उसके आधार पर जांच कराने से इंकार कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने सेबी के नियम 19 के उल्लंघन की जॉच करने का आदेश समिति और सेबी को दिया है। इसमें हिडंनवर्ग की रिपोर्ट के आरोपों की जॉच सेबी एवं समिति के दायरे में होगी। अडानी समूह का मामला अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रभावित कर रहा है। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नियामक संस्था सेबी और भारतीय और न्यायपालिका की शाख बढ़ेगी। वहीं सरकार के डर और भय को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने सीलबंद लिफाफे में रिर्पोट 2 माह में तलब की है। इससे भारत के व्यापारिक हितों को भी सुरक्षित रखने का काम सुप्रीम कोर्ट ने किया

संक्षिप्त खबरें

उचकागांव में शराब के नशे में पांच गिरफ्तार

गोपालगंज ।जिले के उचकागांव थाना क्षेत्र के तीन अलग-अलग जगहों पर पुलिस ने सूचना के आधार पर छापेमारी कर शराब के नशे में हल्ला हंगामा करते पांच आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया। जिन्हें शुक्रवार के दिन न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। गिरफ्तार किए गए आरोपितों की पहचान थाना क्षेत्र के ब्रह्माईन गांव के धीरज कुमार, हथुआ थाना क्षेत्र के बड़ी रायभान गांव के दिनेश महतो, थावे थाना क्षेत्र के चनावे गांव के भरोसी महतो, सिपाही महतो और नगर थाना क्षेत्र के नवादा रजोखर गांव के धर्मवीर साह के रूप में की गई है।

गोपालगंज में 37 षराबी और 18 तस्कर गिरफ्तार

गोपालगंज। उत्पाद विभाग की टीम ने शराब के नशे में 37 और षराब के धंधे में संलिप्त 18 तस्करों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार तस्करों व शराबियों के खिलाफ उत्पाद अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। उत्पाद अधीक्षक राकेश कुमार ने बताया कि उत्पाद विभाग की टीम ने गुरूवार की देर रात्रि जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में छापेमारी की। छापेमारी के दौरान एक तरफ जहां 18 तस्करों को गिरफ्तार किया गया। वहीं दूसरी तरफ यूपी की ओर से आने वाले लोगों की जांच की जा रही थी। जांच के दौरान ब्रेथ एलेनाइजर मशीन से लोगों की चेकिंग की गई। जिसमें करीब 37 लोग शराब के नशे में धुत पाए गए। मामले में प्राथमिकी दर्ज कर उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। उत्पाद अधीक्षक ने बताया कि यह कार्रवाई लगातार जिलेभर में जारी रहेगी।

जदयू जिलाध्यक्ष ने किया बॉलीबॉल टूर्नामेंट का उद्घाटन

गोपालगंज ।जिले के मांझागढ़ प्रखंड के सिपाह खास पंचायत के छितौली गांव में जदयू जिलाध्यक्ष आदित्य शंकर शाही ने बॉलीवॉल टूनार्मेंट का आगाज रिबन काट कर किया। उसके उपरांत दोनो टीम के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर टॉस का सिक्का भी उछाला और कहा की खेल को हमेशा खेल की भावना से ही खेलना चाहिए। इस कार्यक्रम में बरौली विधानसभा के पुर्व प्रत्याशी सह जदयू नेता राजू कुशवाहा, डॉक्टर योगेश प्रसाद, जिला प्रवक्ता वृज किशोर सिंह, अनुसूचित जाति के जिला अध्यक्ष योगेन्द्र राम, प्रदेश उपाध्यक्ष ललन मांझी, पूर्व प्रदेश सचिव राजेश सिंह सहित दर्जनों जदयू कार्यकर्ता एवं ग्रामीण और टूनार्मेंट के संचालक और कमिटी मौजूद रही।

भोरे में अलग-अलग जगहों से 621 बोतल शराब व बाइक बरामद

गोपालगंज ।जिले के भोरे थाने की पुलिस ने होली को लेकर कार्रवाई करते हुए थाना क्षेत्र की अलग-अलग जगहों से कुल 621 बोतल शराब व बाइक बरामद की है। इस दौरान एक धंधेबाज को गिरफ्तार किया गया, जबकि दो फरार हो गये। पुलिस ने पहली कार्रवाई लामीचैर पश्चिम टोला में की, जहां एक धंधेबाज पुलिस को देखते ही शराब लदी बाइक छोड़कर फरार हो गया। बाइक पर लदे बोरे से पुलिस ने 309 पीस शराब बरामद की। फरार हुए धंधेबाज की पहचान थाना क्षेत्र के हुस्सेपुर गांव निवासी नीतीश कुमार भगत के रूप में की गयी है। दूसरी कार्रवाई थाना क्षेत्र के गढ़ी स्थान के पास की गयी। जहां पुलिस को देखकर एक धंधेबाज शराब छोड़ कर बाइक घूमा कर फरार हो गया। उसके द्वारा फेंकी शराब की गिनती करने पर 250 बोतल पायी गयी। वहीं तीसरी कार्रवाई थाना क्षेत्र के दुबे जिगना गांव में की गयी। जहां पुलिस ने दुर्गेश राम को उसके घर से 62 बोतल शराब के साथ गिरफ्तार कर लिया।

बिजली की जांच करने गये जेई और उनकी टीम ने महिला से की बदसलूकी

गोपालगंज। जिले के भोरे थाना क्षेत्र के रूदलपुर गांव में बिजली की जांच के लिए निकले स्थानीय जेई ओर उनकी पूरी टीम एक विवाद में घिर गई है। एक महिला ने स्थानीय थाने सहित पुलिस के वरीय पदाधिकारियों के पास शिकायत कर कार्रवाई की गुहार लगाई है। थाना क्षेत्र के रूदलपुर गांव निवासी दिलीप शर्मा की पत्नी संगीता देवी के नाम से बिजली का कनेक्शन उनके घर में लगा है। आरोप है कि बिजली विभाग के जेई राजीव कुमार अपनी टीम के सदस्यों के साथ महिला के घर गये और बिजली बिल के नाम पर 15 हजार रूपए की मांग की। इस पर महिला ने उनसे भुगतान के लिए विद्युत विपत्र की मांग की। विपत्र नहीं देकर जेई ने महिला के साथ बदसलूकी शुरू की दी। इसके साथ ही उसे जमीन पर पटक दिया और गले से सोने का मंगलसूत्र छीन लिया। इस दौरान महिला पति के बाहर होने का गुहार लगाते रही, पति के आने पर राशि जमा करने की बात कहती रही। लेकिन जेई ने एक न सुनी।

गोपालगंज में डीसीएम से 55 कार्टन विदेशी शराब जप्त, तस्कर गिरफ्तार

होली में खपाने को लेकर यूपी से लायी जा रही थी शराब की खेप, गया का रहने वाला है गिरफ्तार शराब तस्कर, पूछताछ जारी

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

जिले के कटेया थाने की पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर एक डीसीएम से करीब 55 कार्टन विदेशी शराब के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार तस्कर गया जिले के विष्णुपथ थाने के मंगला गौरी गांव का धीरज कुमार बताया गया है। पुलिस गिरफ्तार तस्कर से पूछताछ करने में जुटी हुयी है। इसकी जानकारी देते हुए एसपी स्वर्ण प्रभात ने बताया कि कटेया थाने की पुलिस को सूचना मिली थी कि होली में खपाने के लिए डीसीएम से शराब की बड़ी खेप यूपी से बिहार लायी जा रही है। जिसके आधार पर पुलिस ने यूपी बिहार को जोड़ने वाली सीमा पर वाहनों की सघन जांच शुरू कर दी। जांच के दौरान डीसीएम जैसे ही बिहार के सीमा में प्रवेश किया उसे पकड़ लिया गया। तालाशी के दौरान डीसीएम से करीब 55 कार्टन विदेशी शराब बरामद की गयी है। जबकि गया के तस्कर को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार तस्कर से पूछताछ की जा रही है। पूछताछ के दौरान पुलिस

को कई अहम जानकारी मिली है। जिसके आधार पर पुलिस आगे की कारवाई करने में जुट गयी है। वही इस मामले को लेकर उत्पाद अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर तस्कर को जेल भेजने की कारवाई की जा रही है। उन्होने बताया कि किसी भी हाल में शराब की तस्करी नही होने दी जाएगी। बता दे कि रंग और उमंग का पर्व होली को लेकर शराब तस्कर एक्टिव हो गए है। गाढ़ी कमाई के लिए बिहार में शराब की खेप पहुचाने के लिए तरह तरह के तरकीब अपना रहे है। वही पुलिस लगातार शराब तस्करों के मंसूबो पर पानी फेर रही है।

कटेया में बोलेरो से 1765 बोतल शराब बरामद, तस्कर गिरफ्तार: जिले के कटेया थाने की पुलिस जमुनहा राजेन्द्र मोड के समीप वाहन जांच के दौरान एक बोलेरो से करीब 1765 बोतल देशी व विदेशी शराब के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार तस्कर उचकागांव थाने के बंकीखाल गांव का अशोक सिंह बताया गया है। पुलिस गिरफ्तार तस्कर से पूछताछ करने में जुटी हुयी है। इसकी जानकारी देते हुए एसपी स्वर्ण प्रभात ने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि एक बोलेरो से शराब की खेप लायी जा रही है। जिसके आधार पर पुलिस ने जमुनहा राजेन्द्र मोड के समीप वाहनों की सघन जांच शुरू कर दी। जांच के दौरान बोलेरो से करीब 1765 बोतल देशी व विदेशी शराब को जप्त कर लिया गया। वही बोलेरो में सवार तस्कर को गिरफ्तार कर लिया गया। इस मामले को लेकर उत्पाद अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर तस्कर को जेल भेजने की कारवाई की जा रही है।

शराब की टोह में बैकुंठपुर दियारा इलाके में चला सर्च अभियान, भट्ठी ध्वस्त

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

जिले के बैकुंठपुर थाना क्षेत्र के सत्तरघाट दियारा इलाके में शुक्रवार को उत्पाद विभाग की टीम ने सर्च अभियान चलाकर तैयार की जा रही शराब की खेप को बरामद करने के साथ ही उसे नष्ट कर दिया। इस दौरान शराब भट्ठी को भी ध्वस्त कर दिया। उत्पाद अधीक्षक राकेश कुमार ने बताया कि गंडक नदी के किनारे स्थित सत्तरघाट के समीप नदी के किनारे उत्पाद विभाग की टीम ने ड्रोन कैमरे व स्वान दस्ता की मदद से सर्च अभियान चलाया। सर्च अभियान के दौरान नदी के तट पर छुपाकर बनाई जा रही शराब भट्ठी को ध्वस्त कर दिया गया। इस दौरान उत्पाद विभाग की टीम ने 5000 केजी गुड़ के पाश को बरामद करने के साथ ही उसे विनिष्ट कर दिया। इसके साथ ही षराब बनाने के उपयोग में लायी जाने वाली गैस चूल्हा, मैटेलिक पाइप, ड्रम सहित अन्य उपकरण को बरामद किया गया। उत्पाद अधीक्षक ने बताया कि उत्पाद विभाग की टीम की छापेमारी को देखकर दियारा इलाके में सक्रिय शराब तस्कर फरार हो गए। हालांकि फरार हुए शराब तस्करों की पहचान करने के बाद उनकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी अभियान चलाया जा रहा है। उन्होने कहा कि दियारे इलाके में लगातार छापेमारी जारी है। किसी भी हाल में शराब का कारोबार नही होने दिया जाएगा। गौरतलब हो कि होली पर्व को लेकर उत्पाद विभाग की टीम शराब तस्करों व धंधेबाजों के खिलाफ लगातार अभियान चला रही है। उत्पाद विभाग के इस अभियान से सक्रिय शराब तस्करों व धंधेबाजों में दहशत का माहौल है।

होली में डीजे और आर्केस्ट्रा के संचालन पर होगी प्राथमिकी

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

जिले के उचकागांव थाना परिसर में थानाध्यक्ष सुभाष कुमार सिंह के अध्यक्षता में होली और शब ए बारात पर्व को लेकर डीजे और आर्केस्ट्रा संचालकों के साथ बैठक आयोजित की गई। इस दौरान थानाध्यक्ष सुभाष कुमार सिंह ने कहा कि क्षेत्र में होली और शब ए बारात पर्व के दौरान डीजे व आर्केस्ट्रा पर पूरी तरह से प्रतिबंध रहेगा। प्रशासन के रोक के बावजूद डीजे व आर्केस्ट्रा के संचालन करने पर डीजे को जप्त करते हुए डीजे और आर्केस्ट्रा संचालकों के विरुद्ध

प्राथमिकी कर पुलिस कानूनी कार्रवाई करेगी। उन्होंने कहा कि थाना क्षेत्र में होली और शब ए बरात पर्व के दौरान विधि व्यवस्था को लेकर जगह जगह मजिस्ट्रेट के साथ पुलिस तैनात रहेगी। इस दौरान किसी भी प्रकार से कानून के साथ खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि पर्व के दौरान अधिकांश विवाद के मामले डीजे और आर्केस्ट्रा के दौरान ही पैदा होते हैं। जिससे इन दोनों पर प्रशासन ने पूरी तरीके से प्रतिबंध लगा दिया है। इस दौरान पुलिस क्षेत्र के 15 डीजे और नो आर्केस्ट्रा संचालकों के विरुद्ध 107 की कार्रवाई कर चुकी हैं। जिन्हें हथुआ अनुमंडल में जाकर एसडीएम के पास बांड भरने का निर्देश दिया गया है। बांड नहीं भरने पर पुलिस विधि व्यवस्था को देखते हुए ऐसे लोगों को गिरफ्तार भी कर सकती है।

उत्कृष्ट कार्य करने वालों को किया जाएगा सम्मानित: आलोक

डाक अधीक्षक ने सभी ग्रामीण डाक घर संचालकों के साथ किया बैठक

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

डाक घर की योजनाओं का शत प्रतिशत क्रियान्वयन करने वाले ग्रामीण डाक घर संचालकों को सम्मानित किया जाएगा। डाक घर द्वारा ग्राहकों की सेवा में दी जाने वाली ग्रामीण डाक जीवन बीमा और डाक जीवन बीमा दोनों ग्राहकों के लिए वरदान है। डाक घर की योजनाओं में सबसे अधिक लाभप्रद योजनाओं में से एक है। इसका सम्पूर्ण प्रचार प्रसार कर इस योजना का लाभ प्रत्येक ग्राहकों को बताने का प्रयास कर अपने लक्ष्य को पूरा करें। इन दोनों योजनाओं में ग्राहकों को विशेष सुविधा डाकघर द्वारा दी जा रही है। उक्त बातें हथुआ उप डाकघर परिसर में आयोजित बैठक में डाक

अधीक्षक आलोक कुमार सुमन ने कहा। बैठक में पहुंचे हथुआ, मीरगंज व बथुआ के अन्तर्गत आने वाले सभी ग्रामीण डाक घर संचालकों के साथ बैठक कर आर पी एल आई और पी एल आई योजना में अधिक से अधिक निवेश करवाने का निर्देश दिया। डाक अधीक्षक ने इस बाबत सभी ग्रामीण डाक घर संचालकों को दस दस लाख का डिपोजिट करने का निर्देश भी दिया। वहीं बचत खाता, आवर्ती जमा योजना, सुकन्या समृद्धि योजना सहित डाक घर की अन्य ग्राहक योजनाओं में अधिकतम खाता खोलने का निर्देश भी दिया। डाक अधिक ने सभी संचालकों कि समस्याओं को भी जानने का प्रयास किया। कई संचालकों ने अपनी समस्याओं को अधिकारी के समक्ष रखा। जिसको गंभीरता से लेते हुए डाक अधीक्षक ने निष्पादन करने का निर्देश दिया। मौके पर मौजूद डाक निरीक्षक अजय कुमार ने एक एक ग्रामीण डाक घर के संचालकों से आगामी 10 मार्च तक हर हाल में लक्ष्य पुरा करने का निर्देश दिया। इस मौके पर डाकपाल रविशंकर, डाक सहायक हरेंद्र बैठा, मनोज कुमार राम, रौशन कुमार, आशा कुमारी, डाकिया ओम प्रकाश पर्वत, नितीन प्रकाश यादव, अरुण कुमार गिरी, प्रमोद कुमार श्रीवास्तव सहित सभी डाकपाल व उप डाकपाल आदि थे।

आपसी सौहार्द के बीच मनाये होली व शब ए बरात का त्योहार : एसडीओ

असामाजिक तत्वों पर रहेगी पैनी नजर, नियंत्रण कक्ष से होगी निगरानी

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

आपसी प्रेम व भाईचारे का त्योहार होली व शब ए बरात के त्योहार को सौहार्द पूर्ण माहौल में मनाये जाने को लेकर गुरुवार अनुमंडल स्तरीय शांति समिति की बैठक आयोजित की गयी। जिसकी अध्यक्षता सदर अनुमंडल पदाधिकारी डॉ. प्रदीप कुमार ने की। वही बैठक में सदर एसडीपीओ संजीव कुमार सिंह भी उपस्थित थे। उनके द्वारा बताया गया कि होली हिंदूओं प्रमुख त्योहार है, वही शब ए बरात मुस्लिम समुदाय का त्योहार है। इस वर्ष दोनों त्योहार एक साथ पड़ा हुआ है। ऐसे में सभी लोगों को एक दुसरे के त्योहार में उत्साह व जश्न के माहौल कायम रखने में सहयोग प्रदान करना चाहिए। एसडीपीओ ने बताया कि समिति सदस्यों के साथ मंथन कर

अनुमंडल क्षेत्र के सभी संवेदनशील, अतिसंवेदन स्थलों को चिन्हित किया गया है। जहां पर पुलिस पदाधिकारी, मजिस्ट्रेट और पुलिस जवानों की तैनाती की जायेगी।

एसडीओ ने बताया कि सभी स्थलों पर सात मार्च की सुबह से ही पुलिस पदाधिकारी के साथ मजिस्ट्रेट और पुलिस जवान तैनात रहेगें। उनके द्वारा अनुमंडल क्षेत्र के सभी पंचायत प्रतिनिधियों व राजनैतिक दलों के अध्यक्षों से अपील किया है कि अपने- अपने क्षेत्र में शांति व्यवस्था कायम रखने में उनका सबसे बड़ा योगदान है। वे अपने क्षेत्र में होने वाले सभी गतिविधियों पर नजर रखेंगे। वही असामाजिक तत्त्वों पर प्रशासन के साथ- साथ स्वयं भी पैनी नजर रखें। किसी भी प्रकार की हरकत या अफवाह फैलाने वालों पर प्रशासन के अधिकारी नजर रखेगे। प्रशासन के कार्यो में सहयोग की अपील भी पंचायत प्रतिनिधियों से किया गया। उन्होने बताया कि होली व शब ए बरात को लेकर जिला स्तर पर नियंक्षण कक्ष बनाया जायेगा। जहां से पल- पल की गतिविधि पर नजर रखी जायेगी। अब तक 180 से अधिक स्थलों को चिन्हित किया गया है। जहां पर प्रशासन के द्वारा सख्ती बरती जायेगी। वहीं कुछ पुलिस बल को रिजर्व में भी रखा जायेगा. बैठक में मुख्य रुप से जदयू जिलाध्यक्ष आदित्य शंकर शाही, प्रखंड प्रमुख मांझा वाजिद अली, कांग्रेस नेता शौकत अली, प्रमोद कुमार पटेल, अरविंद पटेल, देवेंद्र तिवारी, ललन मांझी, मुखिया संघ अध्यक्ष मांझा मंटू सिंह, जिप सदस्य प्रतिनिधि ई. विकास कुमार सिंह सहित अन्य समिति सदस्य उपस्थित थे।

न्यू ज्ञानलोक कॉम्पिटिशन स्कूल के चार छात्रों ने सिमुलतला में लहराया परचम

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

जब मन में कुछ कर गुजरने की चाहत हो और मन ठान ले कि कुछ अच्छा करना है तो कुछ भी असंभव नहीं होता, उसे हर हाल में इंसान पूरा करके ही रहता है तथा इसके लिए कोई कार्य असंभव नहीं रह जाता है। इस असंभव को संभव कर दिखाया है। फुलवरिया प्रखंड के मिश्र बतरहा बाजार स्थित संचालित न्यू ज्ञानलोक कॉम्पिटिशन स्कूल के छात्र-छात्राओं ने जिन्होंने सत्र 2023- 24 में सिमुलतला प्रवेश परीक्षा में चार छात्र-छात्राओं ने परिचम लहराया है। इस सफलता से अपने प्रखंड के साथ-साथ गांव का भी नाम छात्र-छात्राओं ने रौशन किया है। इन छात्रों का अथक मेहनत का नतीजा है जो इन्हें यह कामयाबी हासिल हुई

है। इन छात्र-छात्राओं की कामयाबी से उनके माता-पिता से लेकर विद्यालय के शिक्षकों में भी काफी खुश है। वहीं अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहे विद्यालय के एमडी पंचालाल गुप्ता व प्रधानाध्यापिका सुनीता देवी ने छात्रों को लगन से पढ़ाई करवा कर अपने विद्यालय के बच्चों को सिमुलतला के प्रवेश परीक्षा की पुरजोर तैयारी करवाते रहे। इसको लेकर शुक्रवार को विद्यालय परिसर में सम्मान समारोह आयोजित कि गई। जहा एमडी पंचालाल गुप्ता, प्रधानाध्यापिका सुनीता देवी व वरिष्ठ शिक्षक चंदन कुमार सिंह ने सफल छात्र-छात्राओं को मेडल वह शील्ड देकर हौसला बढ़ाया। साथ ही छात्र-छात्राओं व शिक्षकों ने विजय का प्रतीक चिन्ह दिखा कर अपनी खुशी का इजहार किया। सफल छात्रों में हथुआ प्रखंड के चैनपुर गांव के निवासी मुकेश कुमार राय की पुत्री पलक कुमारी, भोरे प्रखंड के बनकता जगधारी गांव निवासी विनोद चैहान के पुत्र आलोक कुमार, कटिया प्रखंड के पटखौली गांव के निवासी उमेश बैठा का पुत्र रितेश कुमार तथा वीरेंद्र प्रसाद का पुत्र दिप राय शामिल है। मौके पर वरिष्ठ शिक्षक राजेश कुमार दास, खुर्शीद आलम, मोहम्मद अली तथा गार्ड रघुपति यादव व गामा पहलवान आदि उपस्थित रहे।

संत का तिरस्कार करने वाला होता है दरिद्र: आचार्य यामिनी जी महाराज

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

जिले के भोरे प्रखंड के महरादेउर में चल रहे श्री रूद्र महायज्ञ के सातवें दिन कथा वाचक आचार्य यामिनी जी महाराज ने कहा कि इस संसार में वे लोग ही धन भागी होते हैं। जिन्हें संत सानिध्य प्राप्त होता है। जबकि संत महात्मा का तिरस्कार करने वाले दरिद्र को प्राप्त होते हैं। चाहे वह पृथ्वी लोक का वासी हो, साधारण मनुष्य हो, राजा हो या खुद राजा इंद्र ही क्यों न हो। यदि उसका अपराध संत के प्रति है, तो ईश्वर भी क्षमा नहीं करते।

उन्होंने कहा कि देवराज इंद्र ने भगवान दुवार्सा जी के द्वारा प्रदत्त माला को अपने ऐरावत हाथी से कुचलवा दिया जिसपर क्रोधित मुनि ने शाप के कारण उन्हें श्री हीन होना पड़ा और समस्त देवता दर दर की ठोकर खाने को विवश हुए वहीं कुबेर के पुत्र नलकुबर और मणि ग्रीव ने जब देवर्षि नारद जी के प्रति अपराध किया, तो उन्होंने भी वृक्ष योनि में जाना पड़ा। जिसका विमोचन एक युग के बाद जब भगवान श्रीकृष्ण का अवतार हुआ तब जाकर मुक्ति मिली। उन्होंने कहा कि केवल संत ही नहीं अपितु गाय, गंगा, ब्राह्मण, स्त्री, बालक और भोले भाले लोगों के प्रति अपराध करने वाले नरक में भी स्थान नहीं मिलता। इसके उल्टे गौ सेवा, विप्र सेवा, ठाकुर सेवा, साधु संतों की सेवा का परिणाम कभी निरर्थक नहीं जाता। देर रात तक चली कथा में महारास वर्णन की चर्चा करते हुए भगवान शंकर के अर्धनारीश्वर स्वरूप का भी बखान किया। जिसमें उन्होंने बताया कि इस धरती पर वृंदावन जैसा कोई वन नहीं है, नंदग्राम जैसा कोई ग्राम नहीं है। वंशीवट जैसा कोई वट वृक्ष नहीं है और श्रीकृष्ण नाम जैसा कोई नाम नहीं है। इसलिए प्रत्येक माता पिता कोई अपनी संतानों का नामकरण भगवान कृष्ण, राम, शिव आदि के नामों के अनुरूप ही रखना चाहिए और वैसा ही आचरण प्रदान करना चाहिए। कुछ भी नहीं सूझ रहा हो, तो अपने बालकों के नाम श्कार और श्श्श्मश्श्श्कार से युक्त ही रखना चाहिए। मनुष्य के जीवन पर उसके नाम का बड़ा गहरा असर पड़ता है।

दूसरी बार शराब पीने पर युवक को एक साल के लिए भेजा गया जेल

गोपालगंज । जिले के भोरे थाने की पुलिस ने दूसरी बार शराब पीकर हंगामा कर रहे एक युवक को गिरफ्तार कर लिया। जिसे नए संशोधित शराबबंदी कानून के तहत एक साल के लिए जेल भेज दिया गया। गोपालगंज में यह चैथा मामला है। जिसमें किसी को शराब पीने के जुर्म में एक साल के लिए जेल भेजा गया है। इससे पहले भी भोरे पुलिस ने ही तीन बार शराब पीने वालों एक साल के लिए जेल भेजा था। बता दें कि नए कानून में पहली बार शराब पीने पर 2000 से 5000 तक का जुमार्ना लगाए जाने का प्रावधान किया गया है। अगर वही व्यक्ति दूसरी बार शराब पीकर हंगामा करता है, तो उसे एक साल के लिए जेल जाना होगा। अभी तक पहली बार ही लोग शराब पीकर पकड़े जा रहे थे। पुलिस ने दूसरी बार शराब पीकर हंगामा कर रहे युवक को गिरफ्तार कर लिया। बताया जाता है कि थाना क्षेत्र के कल्याणपुर में एक युवक शराब पीकर हंगामा कर रहा था। जिसकी सूचना एसआई अनिल कुमार पासवान को मिली थी। उन्होंने मौके पर से युवक को गिरफ्तार कर लिया। जिसकी पहचान कल्याणपुर के कुंदन रंगवा के रूप में की गई।

फुलवरिया में बच्चे को बचाने के दौरान बाइक सवार पेड़ से टकराया

गोपालगंज। जिले के फुलवरिया थाना क्षेत्र के भागीपट्टी समउर-मीरगंज मुख्य पथ के माड़ीपुर बाजार के समीप एक बच्चे को बचाने के क्रम में बाइक सवार युवक पेड़ से टकरा गया। जिसमें बाइक सवार युवक खून से लहूलुहान हो गया। खून से लथपथ युवक को बाजार के व्यवसायियों ने इलाज के लिए बाजार के ही एक निजी हॉस्पिटल में दाखिला कराया। साथ ही व्यवसायियों ने इसकी सूचना स्थानीय पुलिस को दी। सूचना मिलते ही त्वरित कार्रवाई करते हुए फुलवरिया थाने की पुलिस पहुंची। जहां घायल युवक को आनन-फानन में इलाज के लिए मरछियां देवी रेफरल अस्पताल फुलवरिया में दाखिला कराया। जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार किये। घायल युवक मीरगंज थाना क्षेत्र के बड़का आमठा गांव के निवासी सीताराम यादव का पुत्र रामजीत यादव के रूप में पहचान की गई है। पुलिस ने बताया कि घायल युवक बिल्कुल सुरक्षित है। वह खतरे से बाहर है पुलिस अधिकारी ने बताया कि दुर्घटना की सूचना युवक के परिजनों को दे दी गई। जहां परिजन पहुंचकर युवक को सकुशल अपने घर लेकर चले गए।

बैकुंठपुर में बाजार से लौट रहे युवक को मारी गोली

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

जिले के बैकुंठपुर थाना क्षेत्र के सोनवालिया कोनार गांव के पास अज्ञात बदमाशों ने एक युवक को गोली मार दी। जख्मी अवस्था में उसे तत्काल इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया।

जहां से डॉक्टर ने स्थिति को नाजुक देखते हुए बेहतर इलाज के लिए गोरखपुर रेफर कर दिया। फिलहाल युवक की स्थिति गम्भीर बनी हुई है। जख्मी युवक बैकुंठपुर थाना क्षेत्र के सोनवलिया कोनार गांव का चंद्रिका राय बताया गया है। घटना की वजह का खुलासा नहीं हो सका है। बताया जाता है कि युवक कही गया हुआ था। देर रात अपने घर लौट रहा था। तभी पहले से घात लगाए कुछ बदमाश उसे सोनवालिया कोनार गांव के पास कुछ दूरी पर उसे घेर लिया।

इसी बीच बदमाशों ने उसके छाती में एक गोली दाग दी। इससे वह बुरी तरह लहूलुहान होकर जख्मी हो गया। वहीं बदमाश मौके का फायदा उठा कर फरार हो गए। वही स्थानीय लोगो ने इसकी सूचना तत्काल युवक के परिजनों को दी।

स्वच्छता के क्षेत्र में बेहतर योगदान देने वाली महिला मुखिया आज होगी सम्मानित

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर स्वच्छता के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित किया जाना है। जिसका निर्देश लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के मिशन निदेशक सह विशेष कार्य पदाधिकारी राजेश कुमार से प्राप्त है। विभाग से निर्देश मिलने के बाद जिला प्रशासन इस कार्यक्रम की तैयारी में जुट गया है। अंतराष्ट्रीय महिला दिवस प्रत्येक वर्ष आठ मार्च को मनाया जाता है, लेकिन इस वर्ष होली के त्योहार को लेकर इस आयोजन को चार मार्च को ही करने का निर्णय लिया गया है। जिसके तहत स्वच्छता के क्षेत्र में बेहतर कार्य को लेकर कुचायकोट प्रखंड के सिसवां पंचायत की मुखिया पुनम सिंह व गोपालगंज प्रखंड के तिरविरवां पंचायत की मुखिया रीता कुमारी शर्मा को चिन्हित किया गया है। जिन्हे सम्मानित किया जायेगा। कार्यक्रम आज यानि चार मार्च को कलेक्ट्रेट के कौशल विकास केंद्र में होगा। वही स्वच्छता से जुडे अन्य कर्मी जिनका कार्यकलाप बेहतर है, उन्हे भी पुरस्कृत कर उत्साहवर्द्धन किया जायेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता डीएम डॉ. नवल किशोर चैधरी के द्वारा किया जायेगा, जबकि कार्यक्रम की तैयारी जिला जल एवं स्वच्छता समिति के उपाध्यक्ष सह डीडीसी अभिषेक रंजन के द्वारा किया गया है।

सारण स्नातक व सारण शिक्षक निर्वाचन को लेकर 16 कोषांगों का हुआ गठन

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

सारण स्नातक व सारण शिक्षक चुनाव को लेकर चहुंओर हलचल मच गयी है। इसी क्रम में सारण स्नातक व सारण शिक्षक चुनाव को लेकर भारत निर्वाचन आयोग के द्वारा अधिसूचना जारी किया गया है। चुनाव की बिगुल बजने के साथ ही जिला प्रशासन के द्वारा तैयारियां शुरू कर दी गयी है। जिला निर्वाचन पदाधिकारी- सह डीएम डॉ. नवल किशोर चैधरी के द्वारा चुनाव को लेकर 16 कोषांगों का गठन करते हुए नोडल पदाधिकारी, सहयोगी पदाधिकारी और सहायकों को नामित किया है। जिनके द्वारा सारण स्नातक व सारण शिक्षक निर्वाचन की बेहतर तैयारियां की जायेगी। सारण स्नातक व सारण शिक्षक के चुनाव को लेकर आयोग के द्वारा 14 मतदान केंद्र बनाया गया है। जिन मतदान केंद्रों पर सारण स्नातक व सारण शिक्षक का वोट मतदाताओं के द्वारा डाला जायेगा। जिसको लेकर कोषांगों का गठन कर तैयारी कराया जा रहा है। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने बताया कि समय-समय पर कोषांग के कार्यो की समीक्षा की जायेगी, ताकि समय रहते सारण स्नातक व सारण शिक्षक चुनाव की बेहतर तैयारियां की जा सके।

अब आंगनबाड़ी भवन निर्माण में खानापूर्ति का आया मामला, वार्ड सदस्यों ने डीएम से की शिकायत

प्रात : किरण संवाददाता

मुजु ।जिले के बंदरा प्रखंड अंतर्गत मुन्नी-बैंगरी पंचायत के सकरी मन एपीएचसी परिसर में स्थित आंगनबाड़ी केंद्र की मरम्मती के नाम पर मुखिया और पंचायत सचिव की मिलीभगत से लाखों रुपए की खानापूर्ति करने और लूट-खसोट करने से संबंधित शिकायत जिलाधिकारी से की गई है। इस संबंध में पंचायत के उप मुखिया शिवनाथ कुमार सहनी के नेतृत्व में पंचायत के वार्ड विभिन्न वार्डो के वार्ड सदस्यों ने जिलाधिकारी, उप विकास आयुक्त, प्रखंड विकास पदाधिकारी तथा विधान पार्षद को आवेदन देकर कार्रवाई की मांग की है। दिए गए आवेदन में कहा गया है कि मुन्नी बैंगरी पंचायत के वार्ड संख्या 9 में आंगनवाड़ी केंद्र के मरम्मती का कार्य पंचायत के द्वारा कराया गया था। जिसमें योजना का सही अनुपालन नहीं करते हुए मुखिया और पंचायत सचिव के मिलीभगत से मनमाने ढंग से काम किया गया है। इस योजना में नया चापाकल गरवाने की जगह पुराने पाइप में ही नया हेड लगा दिया गया है। आंगनवाड़ी भवन का पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त खिड़की एवं किवाड़ बदलने की जगह उसे सिर्फ पेंट कराकर छोड़ दिया गया है। बालू,सीमेंट,गिट्टी भी उचित मात्रा में नहीं दिया गया है। इस प्रकार से पंचायत और प्रखंड स्तरीय कर्मचारी की मिलीभगत से सरकारी राशि का दुरुपयोग किया गया है।

संक्षिप्त खबरें

होली पर्व को लेकर थाना परिसर में हुई शांति समिति की बैठक।

मसौढ़ी। स्थानीय थाना परिसर में शांति समिति की बैठक थानाध्यक्ष संजय कुमार की अध्यक्षता में हुई। जिसमें उपस्थित लोगों ने अपनी बात और होली के दो दिवसीय पर्व में उत्पन्न समस्याओं को थानाध्यक्ष के समक्ष रखा। लोगों की सुनने के बाद थानाध्यक्ष ने कहा कि होली के बहाने हुडदंग करने वाले व अफवाह फैलाने वालों पर पुलिस की पैनी नजर रहेगी। डीजे नहीं बजेगा। डीजे बजाते हुए पकड़े जाने पर साउंड बॉक्स, मशीन सेट जब्त कर उसके संचालक व अन्य पर कानूनी कार्रवाई होना तय है। उन तीन दिनों में पुलिस गांव तक पुलिस की तैनाती रहेगी। साथ ही जनप्रतिनिधियों व समाजसेवियों से शांति ब्यवस्था बनाए रखने की अपील करते हुए कहा कि शराब बंदी व अपराध नियंत्रण के प्रत्येक मामले में आप सभी के सहयोग की अपेक्षा है। बैठक में अनुमंडल पदाधिकारी अनिल कुमार सिन्हा ए एस पी शुभम आर्य मृत्युंजय कुमार कार्यपालक पदाधिकारी जगरनाथ यादव मसौढ़ी थाना प्रभारी संजय कुमार एवं मसौढ़ी थाने की टीम उपमुख्य पार्षद चंद्रकांत कुमार एवं मुखिया, वार्ड पार्षद व समाजसेवियों के अलावे कई अन्य लोग थे।

होली में रंग लगाने के बहाने छेड़खानी बंद करने पर केन्द्रित नुक्कड़ नाटक प्रदर्शित

बोचहा। भारत महिला जीविका स्वालंबी सहकारी समिति के अंर्तगत प्रखंड क्षेत्र मीनापुर के पानापुर पंचायत में शुक्रवार को जीविका व सेंटर फॉर कैटालाइजिंग चेंज के संयुक्त तत्वावधान में होली के अवसर पर रंग लगाने के क्रम में महिलाओं के साथ होने वाली छेड़खानी, घरेलू हिंसा के मुद्दे पर भस्मी ग्राम संघठन की दीदियों द्वारा नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति की गई। इसका मुख्य उद्देश्य समाज में महिलाओं के प्रति हो रही हिंसा के खिलाफ जागरूकता फैलाना और उन्हे साझा शक्ति केंद्र के माध्यम से उचित सहयोग व परामर्श दिलाना है। सी थ्री की तरफ से प्रखंड परियोजना अधिकारी आयुष राज ने बताया कि महिलाओं की समाजिक स्थिति में सुधार लाकर ही लिंग भेद एवम्घरेलू हिंसा जैसी कुरीतियों को समाप्त किया जा सकता है. नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जीविका दीदियों ने समझाया कि कैसे होली के समय पर समाजिक दबाव में आकर महिलायें हिंसा का शिकार हो जाती हैं। इन्हीं कुरीतियों पर आवाज उठाने के लिए वे साझा शक्ति केंद्र में जाकर उचित मदद प्राप्त कर सकती हैं। मौके पर साझा शक्ति केंद्र समन्यवक नगीना कुमारी ने सभी को महिला हिंसा न सहेंगे न सहने देंगे की शपथ भी दिलाई और बताया की समाज में महिला को सशक्त बनाने के लिए जीविका एक मजबूत तंत्र है और सभी उनकी महत्ता, अधिकार और भावनाओं को समझें तो महिलायें समाजिक रूप से भी सशक्त हो सकेंगी. इस मौके पर, लेखापाल ललन कुमार भारतेंदू के साथ साथ जीविका की ग्राम संगठन की समाजिक पहल समिति की दीदीयाँ मौजूद थीं।

सेना भरती परिकारिया में किया गया बदलाव, होगी ऑनलाइन लिखित परीक्षा

मुजफ्फरपुर। आज आर्मी भर्ती कार्यालय मुजफ्फरपुर के सेना भारती निर्देशक, कर्नल बॉबी जसरोटिया ने मीडिया को संबोधित किया और सेना भारती चुनौती के विषय में जानकारी दी। जानकरी देते हुए उन्होंने बताया कि अभी रजिस्ट्रेशन शुरू हो गया है और पहले चरण में ऑनलाइन परीक्षा होगी। दूसरे चरण में फिजिकल और मेडिकल होगा। रजिस्ट्रेशन फीस 500 रुपये है। 250 रुपये भारतीय सेना देगी और 250 रुपये उम्मीदवारों को देने होंगे। उम्मीदवार अपना भुगतान पोर्टल पर अपने क्रेडिट या डेबिट कार्ड से कर सकते हैं। उम्मीदवार की सुविधा के लिए ऑनलाइन आवेदन कैसे करें उसकी जानकारी सीईई के वीडियो यूट्यूब और हमारी साइट पर अपलोड हैं। सीईई के पैटर्न और सिलेबस में कोई बदलाव नहीं है। सभी कैटेगरीज के लिए प्रैक्टिस टेस्ट का लिंक साइट पर दिया गया है और कैंडिडेट्स घर पर ही सीईई का अभ्यास कर सकते हैं। सेना भारती निर्देशक कर्नल बॉबी जसरोटिया ने उम्मीदवारों और उनके माता पिता से अनुरोध किया कि वे दलालों के चुंगुल में न आए। सेना भर्ती निदेशक ने युवाओं को सूचित किया कि वर्ष 2023- 24 के लिए भारतीय सेना में विभिन्न ट्रेडों की भर्ती की जानी हैं, जिसका 16 फरवरी 2023 से 15 मार्च 2023 तक रजिस्ट्रेशन किया जा रहा हैं।

जीवनशैली में बदलाव कर ऑस्टियोपोरोसिस पर पा सकते हैं काबू

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। ऑस्टियोपोरोसिस एक ऐसी बीमारी है जिसमें हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। हड्डियां इतनी कमजोर हो जाती हैं कि जरा सी चोट या झटका लगने पर टूट सकती हैं। अनुप इंस्टीट्यूट ऑफ ऑथोर्पेडिक्स एंड रिहैबिलिटेशन, पटना के मेडिकल डायरेक्टर और जाने-माने हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉक्टर आशीष सिंह का मानना है कि अगर अपनी जीवनशैली पर थोड़ा-सा ध्यान दिया जाए तो इस बीमारी पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है। डॉक्टर आशीष ने कहा कि एक आम आदमी की भाषा में कहें तो इस बीमारी में हड्डियां बताशे की तरह कमजोर हो जाती हैं। यह आमतौर पर समय के साथ होता है। महिलाओं को पुरुषों से ज्यादा इस बीमारी के होने की संभावना होती है। महिलाओं को मेनोपॉज के बाद इस बीमारी के होने का ज्यादा चांस रहता है। बदलती जीवनशैली के कारण, व्यायाम नहीं होने के कारण, जंक फूड खाने के कारण लोगों में कैल्शियम और विटामिन-डी की कमी हो रही है। और इसी कारण से ऑस्टियोपोरोसिस होती है। जंक फूड इसलिए बड़ा कारण है क्योंकि हमें हमेशा एक बैलेंस डाइट लेना चाहिए। बैलेंस डाइट में सही मात्रा में कैल्शियम, मिनरल्स, आयरन, विटामिन-बी2 लेना होता है। इसके अलावा ज्यादातर वक्त हम लोग कार या बाइक से घूमते हैं, पैदल बहुत कम चलते हैं जिससे हड्डियों में कमजोरी होने लगती है। डॉ. आशीष का कहना था कि ओस्टियोपोरोसिस हो जाए तो उसका एक कॉमन लक्षण होता है, पूरे शरीर में दर्द होता है यानी की कमर में दर्द, कंधे में दर्द होता है। लोग आमतौर पर इसे गठिया समझ लेते हैं। इसकी डायग्नोसिसकी जाती है, ओस्टियोपोरोसिस का टेस्ट होता है तो यह सामने आ जाता है। यानी पूरे शरीर के जोड़ों में दर्द हो रहा हो तो इसका कारण गठिया के साथ ऑस्टियोपोरोसिस भी हो सकता है। ओस्टियोपोरोसिस होने के बाद हमारे शरीर में हड्डियों का ढांचा होता है वह कमजोर हो जाता है। हड्डी अंदर से कमजोर हो जाती है।

जिसके कारण थोड़ी-सी भी चोट लगने पर या कुर्सी से भी गिरने पर हड्डी टूट जाती है। टेबल के कोने से भी चोट लगने पर हड्डियां टूट जाती हैं। बाइक का जर्क लगने पर रीढ़ की हड्डी में परेशानी हो जाती है। डॉ. आशीष ने बताया कि ओस्टियोपोरोसिस के इलाज में सही डायग्नोसिस होना जरूरी होता है। एक विशेष प्रकार की मशीन से इसका डायग्नोसिस किया जाता है। इसे डेक्सा स्कैन कहते हैं। ये एक प्रकार का एक्स-रे है। यह सुविधा अनूप इंस्टिट्यूट ऑफ ऑथोर्पेडिक एंडरिहैबिलिटेशन, पटना में उपलब्ध है। उनका कहना है कि हमारा संस्थान ऑथोर्पेडिक के क्षेत्र में पूर्वोत्तर भारत और बिहार में सबसे उन्नत संस्थान है। डेक्सा स्कैन करने के बाद डब्ल्यूएचओ के द्वारा एक क्राइटेरिया तैयार किया गया है। जिसे फॉलो किया जाता है। डेक्सा स्कैन का स्कोर अगर -2.5 के नीचे चला गया तो ऑस्टियोपोरोसिस मान लिया जाता है। विटामिन-डी का भी लेवल देखते हैं। उसके बाद ट्रीटमेंट की जाती है। इसमें इंजेक्शन के द्वारा या नाक में स्प्रे के द्वारा इलाज किया जाता है। मरीज को धूप का सेवन करने की सलाह दी जाती है। दूध, या दूध से बने पदार्थ का सेवन करने को कहा जाता है। जरूरत पड़े तो इंजेक्शन भी दी जाती है। डॉ. आशीष ने कहा कि आमतौर पर उम्र के साथ हड्डियां कमजोर होने लगती हैं। लेकिन एक्टिव रहने, नियमित रूप से व्यायाम करने, खानपान पर ध्यान देने, वजन को कंट्रोल रखने से ओस्टियोपोरोसिस होने की संभावना कम रहती है।

हर घर, हर दिन आयुर्वेद कार्यक्रम के तहत रक्तपित्त के उपर दी गई जानकारी

प्रात : किरण संवाददाता

टना। हर घर, हर दिन आयुर्वेद कार्यक्रम के तहत शुक्रवार को रक्तपित्त के उपर जानकारी दिया। अमृत आयुर्वेद के बगल में 65 नंबर पिलर के सामने पाल मार्केट में उन्होंने बताया की मार्च, अप्रैल, मई, जून के माह में भयंकर गर्मी होने की संभावना है, और गर्मी के दिनों में कुछ खास प्रकार के रोग होते हैं, जिसमें रक्तपित्त को आयुर्वेद में कष्टप्रद रोगों के रूप में वर्णित किया गया हैं। आयुर्वेद में वात पित एवं कफ तीन प्रकार का दोष माना गया हैं। जिसमें पित से सम्बंधित रोग गर्मी के दिनों में अक्सर बढ़ जाया करते हैं, जो पित प्रकृति के लोग नहीं भी होते हैं, उन्हें भी इस मौसम में यह रोग आक्रांत करता हैं। इस रोग में नाक, मल मूत्र, के रास्ते खून निकलने की शिकायत होती हैं। कभी कभी अन्य भागों से यथा मुख, कर्ण, नेत्र, एवं योनि या आंत से भी रक्त निकलने लगता हैं। मसुड़े एवं नाक से खून निकलना आम बात है, मुख्य रूप से यह तीन प्रकार का होता हैं यथा १- उरध भाग से यानी छाती एवं गर्दन के उपर भाग से २- अधोग यानी पेट के निचले भाग से जिसमें मुख्य रूप से गुद मार्ग, योनि मार्ग, पुरुषो के जननांगो से और ३- उभय मार्ग से यानी ऊपर नीचे दोनों तरफ से

इसे तत्काल रोकना बहुत आवश्यक होता हैं अन्यथा जीवन भी खतरे में पड़ सकता हैं। इसके मुख्य कारणों में उष्ण यानी ज्यादा गर्म गर्म खाना या गर्म तासीर के भोज्य पदार्थों का अति सेवन, तिखा, अम्ल यानी खट्टा, कड़वा, नमकीन, धुप में ज्यादा देर तक रहना, शुक्र का अत्यधिक क्षय, ज्यादा देर तक बगैर खाये पिये मेहनत का काम करना, मदिरा, मांस, गर्म मसाला, देर से पचने वाले खानो का प्रयोग, जिसे आयुर्वेद में गुरु एवं रूक्ष भोजन कहा जाता है। नशा करने वाले पदार्थ या दवाईयां जिसमें भांग, गांजा, अफीम सिगरेट, बीड़ी, पान मसाला गुटखा, गुल इत्यादि का सेवन भी मुख्य कारण होता हैं।

इस रोग की अनदेखी करने पर दमा, खांसी, टीबी, बुखार, पतला दस्त या खून के साथ दस्त, पिलिया, एनेमिया, बोलचाल में खरास, अरुचि इत्यादि रोग होने की संभावना रहती है। इससे बचाव या इससे मुक्ति के लिए मधूर यानि मिठठा, तिता, कषौधा, सुपाच्य, शितल अहार एवं औषधियों का प्रयोग करना चाहिए एवं जिन कारणों से रोग होने की संभावना है, उसका त्याग करना चाहिए। फास्ट फूड, जंक फूड मांसाहार, बजारु कोल्ड ड्रिंक, कोकाकोला थमसप इत्यादि तथा आइसक्रीम इत्यादि, का परित्याग करना चाहिए। नागकेसर, सौंफ, खस, दुव घास, गिलोय, निम, चिरायता, पुदीना, सत्तु, विशेष रूप से जौ का सत्तु, दही, डाभ का पानी, मिठठा, पेठा, पानी फल, विशेष रूप से तरबुज, खरबुज, खीरा, कंकरी, लौकी, नेनुआ परवल, पपिता इत्यादि भिन्न भिन्न प्रकार के शाक, मुनका, नारियल इत्यादि का विशेष प्रयोग किया जाना चाहिए। दोनों समय शितल जल से स्नान, चन्दन एवं एलोवेरा का लेप या आन्तरिक प्रयोग इत्यादि काभी लाभप्रद है। यह रोग आयुर्वेद चिकित्सा से ठीक होता हैं। पर रोगी को परहेज में रहना बहुत जरूरी होता हैं। गुस्सा एवं बार बार रोने से याअनावशयक न्चिंता करने से भी यह रोग बढ़ जाता हैं।

विशेष जानकारी के लिए निम्न नंबर पर सम्पर्क किया जा सकता है। :9773960287,9798924125

होली में रंग लगाने के बहाने छेड़खानी बंद करने पर केन्द्रित नुक्कड़ नाटक प्रदर्शित

प्रात : किरण संवाददाता

बोचहा। भारत महिला जीविका स्वालंबी सहकारी समिति के अंर्तगत प्रखंड क्षेत्र मीनापुर के पानापुर पंचायत में शुक्रवार को जीविका व सेंटर फॉर कैटालाइजिंग चेंज के संयुक्त तत्वावधान में होली के अवसर पर रंग लगाने के क्रम में महिलाओं के साथ होने वाली छेड़खानी, घरेलू हिंसा के मुद्दे पर भस्मी ग्राम संघठन की दीदियों द्वारा नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति की गई। इसका मुख्य उद्देश्य समाज में महिलाओं के प्रति हो रही हिंसा के खिलाफ जागरूकता फैलाना और उन्हे साझा शक्ति केंद्र के माध्यम से उचित सहयोग व परामर्श दिलाना है। सी थ्री की तरफ से प्रखंड परियोजना अधिकारी आयुष राज ने बताया कि महिलाओं की समाजिक स्थिति में सुधार लाकर ही लिंग भेद एवम्घरेलू हिंसा जैसी कुरीतियों को समाप्त किया जा सकता है. नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जीविका दीदियों ने समझाया कि कैसे होली के समय पर समाजिक दबाव में आकर महिलायें हिंसा का शिकार हो जाती हैं। इन्हीं कुरीतियों पर आवाज उठाने के लिए वे साझा शक्ति केंद्र में जाकर उचित मदद प्राप्त कर सकती हैं। मौके पर साझा शक्ति केंद्र समन्यवक नगीना कुमारी ने सभी को महिला हिंसा न सहेंगे न सहने देंगे की शपथ भी दिलाई और बताया की समाज में महिला को सशक्त बनाने के लिए जीविका एक मजबूत तंत्र है और सभी उनकी महत्ता, अधिकार और भावनाओं को समझें तो महिलायें समाजिक रूप से भी सशक्त हो सकेंगी. इस मौके पर, लेखापाल ललन कुमार भारतेंदू के साथ साथ जीविका की ग्राम संगठन की समाजिक पहल समिति की दीदीयाँ मौजूद थीं।

बालिकाओं का क्रिकेट मैच आयोजित

मुजफ्फरपुर। जिले के मनियारी थाना छेत्र के मुरादपुर गांव के मुरादपुर पब्लिक स्कूल में लड़कियों को जागरूक करने के लिये लड़कियों के क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। जिसमें लड़कियों ने बढ़ चढ़ कर खेल में हिस्सा लिया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में जाह्नवी सिंह संयुक्त राष्ट्र फाऊंडेशन, अमेरिका अवार्डी लेखिका व मिस टीन इंडिया व्यूवर्स चॉइस 2022 के हाथों सभी लड़कियों ने पार्टिसिपेशन सर्टिफिकेट, मेडल प्राप्त किया। जाह्नवी ने अपनी बातें रखी जिसमें उन्होनें कहा की अगर हमें लड़कियों को आगे बढ़ाना है तो इस तरह के खेल का आयोजन करना होगा जो समाज में लड़कियों में नई उर्जा प्रदान करने का काम करेगा। उन्होंने आगे कहा की लड़कियों को अगर आगे बढ़ना है लड़कों के साथ कंधा से कंधा मिला कर चलना है तो इसके लिये लड़कियों को पढ़ाई के साथ - साथ खेल कूद में भी आगे आना होगा। उन्होंने ने कहा की पी वी सिंधु, सानिया मिर्जा, सायना नेहवाल, मिताली राज ये सब लड़कियों ने भी देश का नाम रौशन करने का काम किया है।

प्रमंडलीय आयुक्त ने कार्यालय कक्ष से आयुक्त कार्यालय मुंगेर प्रमंडल का पहली बार वेबसाइट को किया लॉन्च

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर, (03 मार्च, 2023)। प्रमंडलीय आयुक्त श्री संजय कुमार सिंह ने आज अपने कार्यालय कक्ष से आयुक्त कार्यालय मुंगेर प्रमंडल का पहली बार वेबसाइट को लॉन्च किया है। प्रमंडलीय आयुक्त ने कहा कि मुंगेर प्रमंडलीय कार्यालय का अपना वेबसाइट आज मिल गया हैं जिसके माध्यम से मुंगेर प्रमंडल के सभी नागरिक ऑनलाइन मुंगेर प्रमंडल से संबंधित विभिन्न सूचनाओं को प्राप्त कर सकेंगे। आयुक्त कार्यालय के वेबसाइट के अंतर्गत प्रमंडल के सभी जिलों का अलग अलग लिंकेज का समावेश किया गया है। जिसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति किसी भी जिले के वेबसाइट से आवश्यक एवं वांछित सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं। आयुक्त न्यायालय से संबंधित काउज लिस्ट, महत्वपूर्ण निर्णय, लोक शिकायत अपीलिय प्राधिकार से संबंधित सूचनाएं, निर्णय, सुनवाई की तिथि के संबंध में भी सूचना प्राप्त कर सकते हैं। महत्वपूर्ण सर्कुलर अधिसूचना आदि महत्वपूर्ण पत्र भी इस वेबसाइट पर उपलब्ध रहेंगे। प्रमंडल अंतर्गत धार्मिक, ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों के संबंध में भी संक्षिप्त विवरणी के साथ सूचना उपलब्ध रहेगी। आयुक्त महोदय ने वेबसाइट तैयार करने वाली एनआईसी की टीम को निर्देश दिया है कि आयुक्त कार्यालय के वेबसाइट को और अधिक सूचनापरक एवं आमजन के लिए उपयोगी बनाया जाए। महत्वपूर्ण निर्णयों, नोटिस को ब्लिंकर के साथ प्रदर्शित की जाए, ताकि सहज रूप से वह तुरंत दृष्टिगोचर हो सके। साथ ही सभी सूचनाओं को अद्यतन रखने का निर्देश दिया गया। प्रमंडलीय आयुक्त के निर्देश पर जिला सूचना एवं विज्ञान पदाधिकारी रंजन कुमार यादव के नेतृत्व में आलोक ठाकुर, संजय कुमार, प्रशांत कुमार, उदय कुमार की टीम द्वारा आयुक्त कार्यालय का वेबसाइट तैयार की गयी है।

दुर्घटनाग्रस्त हुई कार तो पता चला कार से शराब ले जा रहा था

प्रात : किरण संवाददाता

बोचहा। बिहार में शराब पूर्ण रूप से प्रतिबंधित है, इसके बावजूद माफिया शराब की खेप ले जा रहे थे।

प्रतिबंधित शराब की खाली बोतल के साथ भी पुलिस पकड़ सकती है। लेकिन, लूटने का मौका मिला तो लोग सबकुछ भूल गए। जिसे जितनी शराब की बोतलें हाथ लगीं, लेकर भाग गया। इस घटना का वीडियो सामने आया है। हालांकि वीडियो में किसी के हाथ में शराब की बोतलें दिखाई नहीं दे रहा है। वही इस वीडियो में विदेशी शराब के विभिन्न ब्रांड के खाली डब्बा दिखाई दे रहा है। मामला अहियापुर थाना क्षेत्र के एनएच 57 फोर लाइन गराहा चौक के समीप की है। जहां शराब की खेप ले कर मुजफ्फरपुर की ओर जा रही तेज रफ्तार कार ट्रैक्टर को बचाने के दौरान अनियंत्रित होकर हाईवे किनारे 10 फीट गहरे गड्ढे में पलट गया। इस घटना में कार क्षतिग्रस्त हो गया चालक घटनास्थल से फरार हो गया। इस दौरान वहां पर राहगीरों की भीड़ जुट ना शुरू हो गया। तब जाकर इस बात का पता चला कि उस कार में दारू ले जाया जा रहा था। काफी संख्या में शराब के खाली डिब्बे गाड़ी के अंदर देखने को मिला है। इस से अंदाजा लगाया जा सकता है कि दुर्घटनाग्रस्त हुई कार से खाली डब्बा छोड़ शराब की बोतल निकाली गई है। वही कार के अंदर विभिन्न राज्यों के नंबर प्लेट भी रखे हुए थे। फिलहाल इस मामले पर प्रशासन ज्यादा कुछ न कहते हुए मामले की जांच की बात कह रहे हैं।

18वीं वाहिनी एस एस बी की बड़ी कार्रवाई तस्करी का 240 किलो गांजा बरामद किये हैं

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी। 18 वाहिनी एसएसबी ने बोडर क्षेत्र में ग्रामीणों को मनजीत रहे हैं। मधुबनी जिला के 18 वीं वाहिनी मुख्यालय राजनगर के कमांडेन्ट अरविंद वर्मा के निदेर्शानुसार "सी" कंपनी नारी के जवानों ने कार्रवाई में 240 किलों गांजा जप्त किया है, मौका देख तस्कर नेपाली क्षेत्र की ओर फरार होने में सफल हो गया। "सी" कंपनी के कंपनी कमांडर निरीक्षक बलजीत सिंह ने बताया कि बुधवार को सूचना मिली थी कि कुछ तस्कर नेपाल से गांजा की खेप भारतीय क्षेत्र में ले जाने वाले है।

इस बाबत नेपाल सीमा से होकर गांजा की खेप को सर पर लादकर चोरी-छिपे भारतीय क्षेत्र में स्तम्भ संख्या-238/2 के रास्ते तस्करी के माध्यम से ले जाने के दौरान नाका कमांडर सहायक उप निरीक्षक मुरारी लाल एवं जवानों के द्वारा संयुक्त रूप से कार्रवाई की परंतु तस्कर नेपाली क्षेत्र में प्रवेश कर फरार हो गए हालांकि वह गांजा के पोका को फेक दिये थे। उप निरीक्षक मुरारी लाल ने बताया कि पोकों में बरामद गांजा की वजन 240 किलों पाई गई है। उन्होंने बताया कि फरार होने वाले गांजा तस्कर की पहचान कर उनके विरुद्ध कार्रवाई करने में एस एस बी कि अधिकारियों ने जुट गए हैं और अपने स्तर से जांच में लगे हैं वहीं झंझारपुर लोक सभा क्षेत्र के सांसद रामप्रीत मंडल मीना कामत विधायिका करियौत पंचायत के मुखिया धनेश्वर यादव समेत बॉर्डर क्षेत्र के ग्रामीणों ने कमांडेन्ट अरविंद वर्मा को इस तरह का सफलता मिलने पर धन्यवाद ज्ञापन दिये है। बोडर क्षेत्र के ग्रामीणों प्रतिनिधि सभी ने कहा आज अगर हम सभी रात में नींद भर सोते हैं, तो ये हमारे एस एस बी के जवानों के बदौलत। ज्ञात हो कि नेपाल से तस्करी कर लाए गए 240 किलों गांजा को मधुबनी जिले के नारी एस एस बी ने जब्त कर अग्रिम कार्रवाई हेतू लौकही पुलिस को सुपुर्द कर दिया गया है।

बिहार के प्रत्येक ब्लॉक के लिए एक सौ करोड़ के आत्मनिर्भर व्यवसाय मॉडल को लेकर प्रेरित करेंगी : पूर्व सचिव

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। पूर्व सचिव भारत सरकार डॉक्टर कमल तरोई ने गाँवों से स्थानीय व्यापार का उपयोग करके बिहार के प्रत्येक ब्लॉक के लिए एक सौ करोड़ के आत्म निर्भर व्यवसाय मॉडल के लेकर एक प्रेसवार्ता का आयोजन किया गया। इस दौरान कमल तरोई ने व्यापार के मॉडल के बारे में प्रेस को संबोधित बताया कि मॉडल के तहत बिना किसी अनुदान या सब्सिडी के ग्राम पंचायत और बैंकों के माध्यम से गांव को आत्मनिर्भर कैसे बनाया जा सकता है, इस पर विस्तृत चर्चा की। वही प्रशिक्षण और जानकारी का अभाव मुख्य है गांवों का विकास नहीं होने के कारण वंचित गांवों को इस मॉडल का हिस्सा बने इसके लिए गांवों के लोगों को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। वही उन्होंने बताया कि सी.डी. भागलपुर जिले का अनुपात बहुत कम है और इसे बढ़ाया जाना चाहिए। यह आंकड़ा प्राप्त करने के लिए विभिन्न विभागों को सुव्यवस्थित और सिंक्रनाइज करने की आवश्यकता है। भागलपुर जिले में लगभग दो हजार करोड़ के व्यवसाय को प्राप्त करने के लिए केवल 2 करोड़ प्रति गांव की आवश्यकता है। टीकेटी ग्रुप इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गांवों में स्थानीय निकायों की मदद से परियोजनाओं को तैयार करने में मदद करेगी। वही उन्होंने कहा कि कार्यक्रम का संचालन आईईए ने संयुक्त रूप से किया जा रहा है। बिहार और केटी ग्रुप के डॉ. तरोई ने जानकारी दी। इस क्रम में डॉ. विजय कुमार, एचओडी गांधीयान सोसायटी भागलपुर, अभिषेक जैन व उत्तम झुनझुनवाला निदेशक केटी ग्रुप मौजूद रहे।

ब्रजमंडल एवं विष्णु सूर्य मंदिर कमिटी द्वारा होली मिलन समारोह आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मसौढ़ीः शुक्रवार को मणिचक तलाब धाम परिसर में ब्रज मंडल एवं विष्णु सूर्य मंदिर कमेटी के द्वारा होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम की अध्यक्षता मकसूद रजा ने की वहीं संचालन नवल भारती ने किया। आने वाले दिनों में रंगों के पर्व होली को लेकर लोगों में उत्साह बना हुआ है। इसे देखते हुए मसौढ़ी वासियों ने होली मिलन समारोह कर लोगों को अमन चैन से यह पर्व मनाने का आग्रह किया इस होली मिलन समारोह में मसौढ़ी के समाजसेवियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया इस अवसर पर होली मिलन समारोह में उपस्थित लोगों ने एक दूजे को गुलाल लगाकर ढोलक की थाप पर नृत्य करते हुए फाग उत्सव मनाया।

जन्मजात बहरेपन की उपचार को लेकर चलाया गया जागरूकता अभियान

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। विश्व श्रवण दिवस के अवसर पर, एम्स पटना में ईएनटी विभाग ने जन्मजात बहरेपन की समस्या का जल्द पता लगाने और उसके लिए उपचार के उपलब्ध तौर-तरीकों के महत्व से संबंधित जागरूकता अभियान चलाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि कार्यकारी निर्देशक डॉ. जी.के. पॉल और चिकित्सा अधीक्षक डॉ. सी.एम. सिंह ने श्रवण के महत्व के बारे में एकत्रित आम जनता को अपने ज्ञानवर्धक शब्दों को साझा किया। उनके शब्दों को संस्थान के स्नातक एमबीबीएस छात्रों द्वारा एक जीवंत और साथ ही, जानकारीपूर्ण स्किट के माध्यम से जनता के सामने अधिनियमित किया गया, यह सुनिश्चित करने के लिए कि हर कोई इस संदेश को आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त रूप से जागरूक हो। उन्होंने विभिन्न आयु समूहों में बहरेपन की समस्या के लिए उपलब्ध उपचार के तौर-तरीकों पर और इसे कैसे प्राप्त किया जाए पर प्रकाश डाला। जब जागरूकता फैलाने की बात आई तो संचार के किसी भी साधन को नहीं छोड़ा गया क्योंकि रचनात्मक पोस्टर, पेंटिंग और निबंध छात्रों, रेजिडेंट्स और नर्सिंग स्टाफ द्वारा न केवल एम्स पटना से बल्कि पटना के पहले मेडिकल कॉलेज - पीएमसीएच से भी प्रस्तुत किए गए थे।

उन सभी को उनके जागरूकता कार्यक्रम की पहुंच को और बढ़ाने के लिए प्रदर्शन के लिए रखा गया था। संस्थान की अकादमियों ने भी विशेष रूप से ओटोलॉजी और श्रवण के लिए आयोजित क्विज प्रतियोगिता के दौरान अपने दिमाग को तराशने में मजा लिया।

कुल मिलाकर, एम्स पटना ने यह सुनिश्चित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी कि डब्ल्यूएचओ का संदेश और इस साल इसकी थीम है- कान और सुनने की देखभाल सभी के लिए!

रेलवे क्रॉसिंग पर अंडरपास बनाने से पूर्व स्थानीय लोगों का समस्या का निदान करे रेलवे :अजीत

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। कांटी क्षेत्र के वीरपुर रेलवे क्रॉसिंग पर अंडरपास बनाने का मामला अब काफी गर्मा गया है। स्थानीय लोग कई दिनों से प्रदर्शन कर अंडर पास का विरोध कर रहे हैं। लोगों का कहना है की अंडर पास बनने से ग्राम वासियों को जलजमाव का समस्या झेलना पड़ेगा। इस संबंध में ग्रामीणों के द्वारा डीआरएम समस्तीपुर सहित प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री सहित रेलवे के बरिए अधिकारियों को ज्ञापन भेजकर स्थल जांच कराने के उपरांत ही अंडरपास बनाने की मांग की गई।

स्थानीय लोगों के बुलावे पर शुक्रवार को पूर्व मंत्री अजीत कुमार वीरपुर पहुंचे जहां स्थानीय लोगों ने अंडर पास से होने वाली कठिनाइयों से उन्हें अवगत कराया। साथ ही पूर्व मंत्री अजीत कुमार से लोगों ने शीघ्र वरीय अधिकारियों से संपर्क कर अंडरपास का निर्माण रुकवाने का आग्रह किया। इस मौके पर ग्रामीणों का बैठक रामा शंकर पटेल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

मौके पर पूर्व मंत्री अजीत कुमार ने समस्तीपुर रेलवे डिवीजन के ए डी आरएम से दूरभाष पर बात कर उन्हें स्थानीय लोगों के समस्याओं के बारे में अवगत कराया तथा शीघ्र ही स्थल पर रेलवे का तकनीकी टीम भेजकर स्थानीय लोगों का समस्या का निदान कराने का आग्रह किया। पूर्व मंत्री अजीत कुमार ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि मैं इस संदर्भ में भारत सरकार के रेल मंत्रालय से भी शीघ्र संपर्क करूंगा एवं स्थानीय लोगों के कठिनाइयों से उन्हें अवगत करा कर निदान कर आऊंगा।

विद्या दीदी के चयन के लिए लिया गया साक्षात्कर

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। शुक्रवार को प्रखंड मुख्यालय स्थित सर्वश्रेष्ठ जीविका महिला विकास स्वाबलंबी सहकारी समिति लिमिटेड के कार्यालय में जीविका द्वारा संचालित सामुदायिक पुस्तकालय कैरियर विकास केंद्र के लिए विद्या दीदी के चयन हेतु प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न पंचायतों से आए लाभार्थियों का साक्षात्कार लिया गया। इस संदर्भ में जानकारी देते हुए प्रखंड परियोजना प्रबंधक जीविका निर्भय कुमार ने बताया कि प्रखंड के विभिन्न पंचायत से कुल 12 उम्मीदवारों ने विद्या देवी के लिए आवेदन दिया था। जिसके तहत सभी उम्मीदवारों के लिखित परीक्षा के साथ-साथ साक्षात्कार लिया गया जिसमें प्रखंड के ददरीजाला पंचायत के शबनम कुमारी को विद्या दीदी के रूप चयन किया गया। वही मौके पर उपस्थित जीविका के क्षेत्रीय समन्वयक बबलू कुमार ने कहा कि जीविका द्वारा संचालित यह सामुदायिक पुस्तकालय सह कैरियर मेकिंग केंद्र एक अच्छी पहल है. इसमें पाठ्य पुस्तक, डिजिटल लाइब्रेरी के अलावे भी बहुत सारी सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी. समय-समय पर जीविका के वरीय पदाधिकारियों को टीम के द्वारा युवाओं को रोजगार से संबंधित मार्गदर्शन भी दिया जाएगा. मौके पर जीविका के सीएफ रजनी कुमारी एमबीके विभूति मंडल सी एल एफ अध्यक्ष अंजली कुमारी कोषाध्यक्ष कुमारी दीपिका शिक्षा समिति के चयन सदस्य गुड्डी देवी सचिव सुदामा देवी सहित जीविका के दर्जनों कर्मी एवं अभ्यार्थी उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

तेज रफ्तार ट्रक ने मासूम को बीच सड़क रौंदा

मधुबनी/खुटौना। प्रखंड के लौकहा थाना क्षेत्र अंतर्गत जोकही गांव पंचायत भवन के समीप लौकहा खुटौना मुख्य सड़क पर गांव के ही मुशहरी टोला की छः वर्षीय साक्षी को तेज रफ्तार ट्रक ने रौंद दिया जिससे मौके पर ही बच्ची की दर्दनाक मौत हो गई।अचानक हुऐ हादसे से इलाके में हंगामा मच गया। वहीं ठोकर मारने के बाद ट्रक चालक वहां से फरार हो चला जिसे लोगों ने खुटौना पुलिस की मदद से पकड़ा। बता दें कि मृत बच्ची सड़क पार कर पास के ही तालाब में नहाने जा रही थी इतने में ट्रक ने बुरी तरह से कुचल दिया। हादसा इतना भयावह था कि सड़क पर लाश के चिथड़े बिखरे पड़े थे वहीं लाश फटकर मांस के टुकड़े बाहर आ गए थे।तत्काल मौके पर लौकहा के थानाध्यक्ष संतोष कुमार मंडल और खुटौना थानाध्यक्ष धनंजय कुमार पुलिस बल के साथ कैम्प कर रहे हैं इधर परिजनों ने सड़क जाम कर रखा था।समाचार लिखने तक जाम खुलवाने को लेकर मान मनौव्वल का सिलसिला जारी था। वहीं इस संबंध में पूछने पर पुलिस पदाधिकारी मिडिया के सवालों से बचते नजर आए जबकि परिजन न्याय की मांग कर रहे थे।

मोतीपुर के अंचलाधिकारी को निगरानी की टीम ने 9 हजार रुपये घूस लेते रंगे हाथ किया गिरफ्तार

मुजफ्फरपुर।निगरानी अन्वेषण ब्यूरो की मुख्यालय टीम द्वारा आज,मोतीपुर के सीओ अरविंद कुमार अजीत क 9 हजार रुपये घूस लेते रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया। यह कार्रवाई निगरानी थाना कांड संख्या 11/2023के तहत की गई है।
परिवादी अजीत कुमार, पिता स्व० रामलखन राय, ग्राम रामपुरउगान पो०- ब्रह्मपुरा थाना + अंचल मोतीपुर, जिला मुजफ्फरपुर द्वारा निगरानी अन्वेषण ब्यूरो में दिनांक 20.02.23 को शिकायत दर्ज कराया गया था कि आरोपी अरविन्द कुमार अजीत, अंचलाधिकारी एवं हरेन्द्र पासवान, राजस्व कर्मचारी, दोनों अंचल मोतीपुर, जिला- मुजफ्फरपुर द्वारा परिवादी के पिता (चौकीदार) की मृत्यु उपरान्त इनके माँ के नाम से परिवारिक पेंशन की स्वीकृति हेतु बकाया रहित प्रमाण पत्र एवं पेंशन फार्म निर्गत करने के लिए रिश्वत की मांग की जा रही है।इस मामले का ब्युरो द्वारा सत्यापन कराया गया एवं सत्यापन के क्रम में आरोपी द्वारा रिश्वत मांगे जाने का प्रमाण पाया गया। आरोप सही पाये जाने के पश्चात उपरोक्त कांड अंकित कर अनुसंधानकर्ता विकाश कुमार श्रीवास्तव, पुलिस उपाधीक्षक के नेतृत्व में एक धावादल का गठन किया गया, जिनके द्वारा कार्रवाई करते हुए अभियुक्त श्री अरविन्द कुमार अजीत, अंचलाधिकारी को 9,000/- रू० रिश्वत लेते इनके कार्यालय स्थित कक्ष से रंगे हाथ गिरफ्तार किया गया है। अभियुक्त को पूछताछ के उपरांत माननीय न्यायालय, निगरानी, मुजफ्फरपुर में उपस्थापित किया जायेगा।

सकरा की बबीता गुप्ता को आज मिलेगा राष्ट्रपति पुरस्कार

मुजफ्फरपुर। जिले और राज्य लिए आज गौरव का दिन है. नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित होने वाले समारोह में बिहार के मुजफ्फरपुर की एकमात्र विनर बबीता गुप्ता को राष्ट्रपति ह्लस्वच्छ सुजल शक्ति सम्मान 2023ह्व से सम्मानित करेंगी. उन्हें यह पुरस्कार प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन श्रेणी में मिलेगा. । बबीता जिले के सकरा क्षेत्र की रहने वाली है। पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा ह्लस्वच्छ सुजल शक्ति सम्मान 2023ह्व के लिए हाल में पूरे देश भर से स्वच्छता एवं पेयजल के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली महिलाओं से ऑनलाइन नामांकन मांगे गए थे. पूरे देश भर से हजारों की संख्या में पुरस्कार के लिए प्रविष्टियां आई। बिहार से 130 महिलाओं ने नामांकन किया था. । जीविका समूह तथा लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान द्वितीय चरण अंतर्गत प्लास्टिक अपशिष्ट प्रसंस्करण इकाई सकरा, मुजफ्फरपुर से जुड़ी बबीता गुप्ता को अंतिम रूप से इस पुरस्कार के लिए चयनित किया गया.। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर जलशक्ति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 04 मार्च को आयोजित होने वाले समारोह के लिए बबीता गुप्ता एक दिन पूर्व शुक्रवार को विज्ञान भवन नई दिल्ली पहुंचकर इस कार्यक्रम के लिए रिहर्सल में भाग लिया.। उन्होंने इस पुरस्कार के मिलने पर अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की .हैं। बबीता गुप्ता मुजफ्फरपुर जिला अंतर्गत सकरा की निवासी है.।

नवीन राजकीय पॉलीटेक्निक में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। नवीन राजकीय पॉलीटेक्निक पटना 13 में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में डॉ शरण सत्संगी, असिस्टेंट प्रोफेसर, एनआईटी पटना, मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरूआत छात्र छात्राओं द्वारा बनाए गए साइंस प्रोजेक्ट के प्रदर्शन से हुई। इस अवसर पर संस्थान के प्राचार्य डॉ चंद्रशेखर सिंह ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए विज्ञान में अपनी रूचि बनाए रखने तथा इस क्षेत्र में नए अनुसंधान करने के लिए प्रोत्साहित किया।

उन्होंने छात्र छात्राओं द्वारा बनाए गए प्रोजेक्ट की सराहना करते हुए उन्हे पेटेंट कराने का सुझाव दिया। मुख्य अतिथि डॉ सत्संगी ने इस अवसर पर सर सी वी रमन की जीवनी पर विस्तृत प्रकाश डाला तथा उन्होंने छात्र-छात्राओं की सराहना करते हुए कहा कि पॉलिटेक्निक पटना-13 के छात्र किसी भी तरह से आईआईटी और एनआईटी के छात्र-छात्राओं से कम नहीं है। उन्होंने बच्चों के द्वारा बनाए गए प्रोजेक्ट्स की भूरी भूरी प्रशंसा की। विज्ञान दिवस पर विगत दो सप्ताह से चल रहे क्विज, चित्रकारी इत्यादि प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। साथ ही विज्ञान दिवस के अवसर पर विज्ञान एवं प्रावैधिकी विभाग बिहार सरकार द्वारा आयोजित सर सी वी रमन टैलेंट सर्च टेस्ट में पूरे पटना से भाग लिए गए अभ्यर्थियों में से चौथे से दसवें स्थान प्राप्त छात्रों को भी मेडल, प्रशस्ति पत्र एवं नकद राशि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ के एल पुष्कर, वरीय व्याख्याता डॉ आर एन सिंह एवं प्रोफेसर अनुराधा कृष्ण मंचासीन थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में कार्यक्रम की संयोजक डॉ. मंजु कुमारी, व्याख्याता (भौतिकी) की अहम भूमिका रही। कार्यक्रम में प्रो. श्वेता चौबे, प्रो. विकास कुमार, प्रो. रोहित कुमार, प्रो त्रिभुवन कुमार, प्रो रोमा रानी, प्रो सैयद आफताब, प्रो निशांत कुमार एवं अन्य व्याख्यातागण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन संस्थान के तृतीय सेमेस्टर के छात्र मोद्दासिर रजा तथा छात्रा पायल राणा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन तृतीय सेमेस्टर के ही छात्र रौनक कुमार ने किया। इस अवसर पर संस्थान के सभी व्याख्यातागण एवं कर्मचारी कार्यक्रम में उपस्थित थे। कार्यक्रम के सफल संचालन में संस्थान के आई टी क्लब के छात्र छात्राओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण संस्थान के यूट्यूब चैनल के माध्यम से किया गया।

विश्वविद्यालय को स्काडा की भूमि प्राप्ति का आंदोलन होगा तेज

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय भूमि प्राप्ति अभियान समिति के सदस्यों की बैठक आज प्रो बलिराज ठाकुर की अध्यक्षता में भोजपुरी विभाग सभागार में हुई जिसमें आंदोलन की धार को तेज करने का संकल्प लिया गया। बड़ी संख्या में शिक्षकों, छात्रों और सामाजिक कार्यकताओं के अलावा आज अभियान को समर्थन देने छपरा और बलिया के शिक्षक तथा बुद्धिजीवी उपस्थित थे। बैठक की शुरूआत में रवि प्रकाश सूरज और अनिरुद्ध सिंह ने सभी को अभियान का मकसद और इस दिशा में किये गये अब तक के प्रयासों की जानकारी दी। उसके बाद सभी सदस्यों से आंदोलन की धार मजबूत करने के लिए सुझाव मांगे गये। अध्यक्ष प्रो बलिराज ठाकुर ने कहा कि शाहाबाद की धरती से उठा यह शिक्षा का आंदोलन सफल होगा और पूरे शिक्षा जगत को नई राह देग। सीनेटर विनोद कुमार सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि आगामी ११ मार्च को अभियान समिति की वृहद बैठक होगी जिसमें सभी छात्र संगठन और सामाजिक संगठन आमंत्रित हैं, उसी बैठक में चरणबद्ध तरीके से आंदोलन का स्वरूप भी तय किया जायेगा। कुंवर वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष धीरज कुमार उर्फ लव जी ने कहा कि विश्वविद्यालय के अस्तित्व पर आये संकट को दूर करने के प्रयासों में शाहाबाद के कोने कोने में जनजागरण किया जाये। सामाजिक कार्यकर्ता अशोक मानव ने कहा कि हमें जिम्मेदार जनप्रतिनिधियों से एक मंच पर संवाद करना होगा। विजय मेहता ने कहा कि आंदोलन की धार तेज करने के लिए प्रचार माध्यमों का सहारा लिया जाये। भोजपुरिया जन मोर्चा के अध्यक्ष कुमार शीलभद्र ने कहा कि हम मेडिकल कॉलेज के विरोधी नहीं पर विश्वविद्यालय के स्वरूप को बचाये जाने के पक्ष में अंतिम समय तक खड़े रहेंगे। पूर्व छात्र नेता नवीन कुमार ने सभी छात्र संगठनों को एक मंच पर सामूहिक लड़ाई लड़ने का आह्वान किया। हिंदी विभाग के शिक्षक निलाम्बुज सिंह ने कहा कि आंदोलन की प्रासंगिकता बनाये रखने के लिए मीडिया के विभिन्न माध्यमों से प्रचार किया जाये। जे पी विश्वविद्यालय छपरा के पूर्व प्राध्यापक पी राज सिंह ने कहा कि यह संकट सिर्फ एक विश्वविद्यालय का नहीं बल्कि सार्वजनिक शिक्षा पर आया बड़ा संकट है। बलिया के पत्रकार और बुद्धिजीवी मोहन सिंह ने कहा कि आंदोलन के साथ साथ हमें सभी पक्षों से निरंतर संवाद बनाये रखना होगा। हिंदी सह भोजपुरी के विभागाध्यक्ष दिवाकर पाण्डेय ने बताया कि अभियान सही दिशा में आगे बढ़ रहा है, इसमें शाहाबाद के सभी जन संगठनों को एक मंच पर आकर सामूहिक प्रयास करना होगा। बैठक का संचालन भोजपुरी छात्र संगठन के संयोजक सयंदन सुमन ने किया। इस मौके पर उर्दू विभाग के जमील अख्तर, अर्थशास्त्र के नीरज वर्मा, शोध छात्र राजेश कुमार, चंदन कुमार, मनोज, ए बी वी पी के सोहित सिन्हा ने भी अपने सुझाव दिये। आगामी ११ मार्च को अभियान समिति की वृहद बैठक में शाहाबाद के अलावा राज्य के अन्य भागों से बुद्धिजीवियों और समाजसेवियों का जुटान होने की उम्मीद है।

एक दिवसीय जिला स्तरीय इन्वेस्टर मीट आयोजित हुई

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी। निवेश अनुदान रोजगार सृजन अनुदान बिजली शुल्क दर अनुदान माल भाड़ा प्रतिपूर्ति प्रोत्साहन और पेटेंट निबंधन में सरकार द्वारा पूरी सहजता के साथ उद्यमियों को पर्याप्त सहायता होगी उपलब्ध। जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में उद्योग विभाग बिहार सरकार तथा जिला प्रशासन, मधुबनी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय जिला स्तरीय इन्वेस्टर मीट आयोजित हुई।इस अवसर पर मुख्य अतिथि विशेष सचिव, उद्योग विभाग, बिहार सरकार, दिलीप कुमार ने उपस्थित उद्यमियों एवं पत्रकारों को संबोधित करते हुए जिले में उद्योग की संभावनाओं पर विस्तृत जानकारी दी और बताया कि सरकार द्वारा जिले में रोजगार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उद्यमियों को नए उद्यम स्थापित करने में पर्याप्त सहायता दी जा रही है। उन्होंने कहा कि अब पूंजी निवेश अनुदान, रोजगार सृजन अनुदान, बिजली शुल्क दर अनुदान, माल भाड़ा प्रतिपूर्ति प्रोत्साहन और पेटेंट निबंधन में सरकार द्वारा उद्यमियों को पर्याप्त सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। इसके लिए उन्होंने २६ू2ुँ१.ॅङ्ग५.ल्ल के वेबसाइट पर जाकर सभी चरणों की जानकारी लेने अथवा टोल फ्री नम्बर 18003456214 पर कॉल कर जानकारी हासिल कर लेने की बात कही।

इन्वेस्टर मीट को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि यह एक बड़ा अवसर है जब उद्योग विभाग सभी अपेक्षित सुविधाओं के साथ उद्यमियों के साथ खड़ा है। अक्सर उद्यमियों की ये* शिकायत होती है कि बहुत दौड़ना पड़ता है। अब सरकार द्वारा इस मान्यता को पूरी तरह बदला जा रहा है। जिसका साकार रूप हम सभी इस इन्वेस्टर मीट के रूप में देख रहे हैं। जिले के उद्यमियों के लिए यह ऐसा अवसर है जब सरकार द्वारा उद्योग के लिए भूमि उपलब्ध करवाने, शेड उपलब्ध करवाने, मशीन लगाने, कर्मियों के प्रशिक्षण, माल के एक्सपोर्ट सहित अन्य मुद्दों पर पर्याप्त आर्थिक सहायता मुहैया करा रही है। सारे चरण ऑनलाइन मोड में होंगे ताकि पूर्ण पारदर्शिता बरती जा सके। जिलाधिकारी ने कहा कि अन्य जिलों अथवा राज्य के बाहर के उद्यमी तो जिले में उद्योग विस्तार के लिए आ ही सकते हैं। परंतु, जिले के उद्यमियों को जिले में नए नए उद्योग की संभावनाओं की तलाश के लिए आगे आना चाहिए।

ये यहां के लोगों की जिम्मेवारी भी बनती है। प्लांट छोटे हों या बड़े पर, हमको पहल करनी चाहिए की मानसिकता से आगे बढ़ना होगा। जिलाधिकारी ने जिला उद्योग केंद्र में उद्यमियों की सहायता के लिए काउंसलिंग डेस्क बनाने की बात कही। उन्होंने स्पष्ट किया कि* किसी भी संबंधित विभाग से किसी प्रकार का विलंब हो रहा हो तो संबंधित उद्यमी सीधा उनसे संपर्क कर जानकारी दे सकते हैं। उन्होंने सभी आवदनों को प्राथमिकता के स्तर पर निपटाए जाने की बात कही।उक्त अवसर पर उप विकास आयुक्त विशाल राज, महा प्रबंधक जिला उद्योग केन्द्र, रमेश कुमार शर्मा सहित बड़ी संख्या में जिले के उद्यमी व संवाददाता उपस्थित थे।

वरिष्ठ कांग्रेसी नेता का माँझी श्मसान घाट पर हजारों लोगों की मौजूदगी में हुआ दाह संस्कार पुत्र व कांग्रेस के युवा नेता ने दी मुखाग्नि

प्रात : किरण संवाददाता

माँझी। माँझी के दो बार विधायक रहे बरिष्ठ कांग्रेसी नेता बुद्धन प्रसाद यादव 85 वर्ष का शुक्रवार को माँझी श्मसान घाट पर हजारों लोगों की मौजूदगी में दाह संस्कार सम्पन्न हो गया। उनके पुत्र व कांग्रेस के युवा नेता संदीप रौशन ने मुखाग्नि दी। मौके पर उनके अनुज व पूर्व मुखिया सत्यनारायण प्रसाद यादव तथा माँझी विधान सभा के पूर्व प्रत्यासी ई सौरभ सन्नी सहित उनके परिजन आदि हजारों लोग मौजूद थे। इससे पहले स्व यादव के चैनपुर स्थित आवास पर पहुँचे कांग्रेस के जिलाध्यक्ष मनोज कुमार भारद्वाज पूर्व विधायक रघुनंदन माँझी कामेश्वर सिंह विद्वान साधु दुबे कमलेश द्विवेदी तथा शिव बालक सिंह आदि ने कांग्रेस का झंडा उनके शव पर ओढ़ाकर उन्हें सम्मानित किया।

बाद में उनके शव को साई बाबा ट्रस्ट द्वारा संचालित शव वाहन पर सवार करके माँझी नगर पंचायत क्षेत्र का परिभ्रमण कराया गया इस दौरान टोला मुहल्ला के लोगों ने उनके शव पर पुष्प अर्पित कर हजारों नगरवासियों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। बाद में शव को माँझी प्रखण्ड मुख्यालय परिसर में रखा गया जहां महाराजगंज के सांसद जनार्दन सिंह सिग्रीवाल पूर्व मंत्री गौतम सिंह प्रो बीरेन्द्र नारायण यादव विधान पार्षद श्रीकांत यादव विधायक राजद नेता सुधांशू रंजन हेम नारायण सिंह राणा प्रताप उर्फ डब्ल्यु सिंह तथा शिक्षक नेता दिनेश सिंह आदि ने फूलमाला अर्पित कर स्व यादव को श्रद्धांजलि दी। अपने सम्बोधन में सांसद सिग्रीवाल ने स्व यादव के निधन को सारण के लिए अपूरणीय क्षति बताया तथा कहा कि उनके द्वारा स्थापित सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की परिपाटी को बहाल कर वर्तमान राजनीति में बदलाव किया जा सकता है तथा सामाजिक समरसता बहाल की जा सकती है। बाद में माँझी श्मसान घाट पर उनका दाह संस्कार सम्पन्न हो गया।

इससे पहले कल शाम को दर्जनों बाइक व चार पहिया पर सवार समर्थकों ने उनके शव की अगवानी की।पांच किमी लंबी शवयात्रा में शामिल समर्थक बुद्धन यादव अमर रहें तथा जबतक सूरज चांद रहेगा बुद्धन तेरा नाम रहेगा आदि नारे का जयघोष कर रहे थे। शव यात्रा में जिला पार्षद ई कमलेश यादव प्रखण्ड प्रमुख कमला देवी ओमप्रकाश कुशवाहा रामायण जीवनदानी नागेन्द्र मिश्रा संजय यादव दलन प्रसाद यादव अखिलेश यादव हरेन्द्र यादव राकेश राय राजेश राय मिन्टू यादव अख्तर अली अमरजीत सिंह जय किशोर सिंह संतोष पहलवान पैक्स अध्यक्ष बीरेन्द्र सिंह विजय सिंह मकेश्वर सिंह मनोज प्रसाद उमाशंकर ओझा परमहंस साह अरविंद सिंह पृथ्वीनाथ सिंह तथा रंजन शर्मा सहित बड़ी संख्या में गणमान्य लोग शामिल थे।

फेडरेशन कप नेशनल महिला हैंडबॉल में बिहार ने हिमाचल और मध्यप्रदेश को हरा अंतिम चार में पहुंची

छपरा। हरियाणा के दिघल में आयोजित 34 वी फेडरेशन कप नेशनल हैंडबॉल प्रतियोगिता में बिहार महिला टीम ने अपने पूल मैच में हिमाचल एवम मध्यप्रदेश को अधिक गोल के अंतर से पराजित कर सेमीफाइनल में प्रवेश कर पदक किया पक्का। बिहार टीम के खिलाड़ियों ने बेहतर खेल का प्रदर्शन करते हुए हिमाचल की टीम पर 19 - 08 जबकि मध्यप्रदेश को 24-14 के बड़े अंतर से जीत दर्ज की। प्रतियोगिता स्थल से बिहार हैंडबॉल के महासचिव ब्रजकिशोर शर्मा ने बताया कि बिहार टीम से पीपी खुशबू कुमारी ने सर्वाधिक गोल किया ।इसके अलावे सीनियर खुशबू ,अंशु , बिहार पुलिस की खुशबू , सुषमा, मनीषा ,रोहिणी, निशा, निधि सहित अन्य ने बेहतर प्रदर्शन किया। बिहार महिला टीम सारण के लौवा बनियापुर अवस्थित संत जलेश्वर एकेडमी में एक पखवाड़े के आवासीय प्रशिक्षण के बाद सीनियर महिला नेशनल हैंडबॉल प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन के आधार पर फेडरेशन कप नेशनल के लिए क्वालीफाई किया । जिस टीम में आज बिहार महिला टीम पहली बार पदक की रेस में शामिल हो इतिहास रचने की दहलीज पर खड़ी है। बिहार टीम के बेहतर प्रदर्शन को लेकर बिहार हैंडबॉल संघ के चेयरमैन विधानपर्षद इंजिनियर सच्चिदानंद राय, अध्यक्ष पंकज कुमार , महासचिव ब्रजकिशोर शर्मा , कोषाध्यक्ष त्रिपुरारी प्रसाद, उपाध्यक्ष संजय पाठक , आचार्य गोपाल जी, वरीय संयुक्त सचिव संजय कुमार सिंह , आलोक कुमार , राष्ट्रीय खिलाड़ी कनक कुमार , चंदन कुमार , संजीव कुमार , रितेश कुमार सिंह , अभिषेक कुमार सिंह सहित अन्य ने बधाई दी है।

मारवाड़ी सम्मेलन के 31वां अधिवेशन 11 और 12 मार्च को मधेपुरा में

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यकारी महामंत्री घनश्याम अग्रवाल ने बताया कि मधेपुरा शाखा के आतिथ्य में 11 और 12 मार्च 2023 को इकत्तीसवां वार्षिक अधिवेशन सम्मेलन के हजारों महिलाओं, पुरुषों, युवाओं और बुजुर्गों की उपस्थिति में सम्पन्न होगा। घनश्याम अग्रवाल ने कहा कि प्रदेश और देश में जहाँ भी मारवाड़ी समाज के लोग बसे हैं, वो सबसे पहले स्थानीय बेहतरी और उन्नति के लिए कार्य करते हैं। वहाँ के लोगों को सस्ते उत्पाद और रोजगार के बेहतरीन अवसर उपलब्ध कराना और सरकार को समुचित राजस्व देना समाज की प्राथमिकता होती है। हमलोगों का मानना है कि बिहार की उन्नति के बगैर देश की प्रगति संभव नहीं। श्री अग्रवाल ने कहा कि अधिवेशन में शिक्षा, चिकित्सा, राष्ट्रीय विकास एवं एकता और महिला सशक्तिकरण जैसे विषयों पर व्याख्यान देने के लिए विशेषज्ञ वक्ताओं को आमंत्रित किया गया हैह्व अधिवेशन में युवा सत्र, महिला सत्र, प्रेरणा सत्र, सांस्कृतिक सत्र के साथ ही बिहार विकास पदयात्रा आयोजित होगी। अब तक एक हजार से अधिक प्रतिनिधियों ने अपने आने की स्वीकृति प्रदान की है। अधिवेशन में राजस्थानी लोक कला और संस्कृति युक्त रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा। उन्होंने बताया कि सम्मेलन बगैर वर्ग, धर्म, जाति, संप्रदाय का भेदभाव किए शुद्ध पेयजल के लिए स्थाई जल केंद्रों की स्थापना करती हैह्व मरीजों की सुविधा के लिए प्रदेश की सत्तर शाखाओं द्वारा सात सौ ऑक्सीजन सिलेंडरों के माध्यम से प्राणवायु सेवा प्रदान की जाती रही है। प्रदेश को विकलांग विहीन बनाने के लिए गरीब मरीजों को नेत्र चिकित्सा, अंग प्रत्यारोपण, आवश्यक सर्जरी और फिजियोथेरेपी की निशुल्क सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। साथ ही हर स्थानीय पर्व त्योहार और जरूरत के वक्त सम्मेलन की ओर से आवश्यक सहयोग और सुविधा मुहैया कराई जाती है।

स्व सूर्यकालो देवी के पुण्यतिथि पर वृद्ध सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। बालबांध गाँव निवासी समाजसेवी महिला स्व सूर्यकालो देवी के पांचवा पुण्यतिथि के मौके पर आरा वीर कुंवर सिंह स्टेडियम के प्रांगण में वृद्ध सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। जिसमें जरूरतमंद 25 वृद्ध महिला पुरुष को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जदयू नेता अभय विश्वास भट्ट ने किया।

कार्यक्रम की शुरूआत हनुमान मंदिर रमना आरा के महंत सुमन बाबा के शांति मंत्रोच्चार के साथ सामाजिक कार्यकर्ता सह अखिल भारतीय भट्ट ब्राह्मण महासभा शाहाबाद के अध्यक्ष बाल्मीकि शर्मा, सत्य वृद्धाश्रम आरा के संस्थापक संजय राय, जदयू नेता सुनील पाठक, समाज कल्याण विभाग के एल्डर लाइन के नोडल पदाधिकारी मनोज सिंह, निगम पार्षद गुड्डू पासवान के उपस्थिति में हुआ। ततपश्चात उपस्थित सभी अतिथियों ने माता सूर्यकालो देवी के तैलचित्र पर माल्यार्पण किया। वही उनके पुत्र अशोक भट्ट ने कहा कि स्व सूर्यकालो देवी अपने जीवन के अंतिम पायदान पर भी गरीबो की सेवा करती रही ।। उन्होंने हम सब को हमेसा सिख दी है कि जितना सम्भव हो जरूरतमंदों को मदद किया करो। वही बाल्मीकि शर्मा ने कहा कि सेवा नारायण सेवा के तर्ज पर मैं हमेसा सेवा कार्य करता हूँ। इस प्रकार का कार्यक्रम अतुलनीय है। कार्यक्रम में शहर के 25 वृद्ध महिला पुरुष को अंगवस्त्र एवं स्टील का स्टिक देकर सम्मानित किया गया तथा माला पहनाकर स्वागत किया गया। धन्यवाद ज्ञापन सुशील भट्ट ने किया।

कार्यक्रम में उपस्थित लोगों में चित्रकार कमलेश कुंदन, डॉ अभिषेक मिश्रा, सोनु पासवान,अंकित राय तथा वृद्धजन रामावतार पांडेय, कृष्णा प्रसाद,विद्यासागर प्रसाद, आरती देवी, अजय कुमार, लीलावती देवी,राजकुमारी देवी, वंशीधर राय,कमला कुंवर, बिंदा देवी, रुक मीना कुंवर, सविता देवी,सोना देवी, चिंता देवी, राधारमण पांडे, जवाहरलाल राम, रामनरेश राम, जमुना राम समेत कई थे ।

भोजपुर के सभी अस्पतालों में विश्व श्रवण दिवस मनाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। विश्व श्रवण दिवस सदर अस्पताल एवं भोजपुर के तमाम अस्पतालों में मनाया गया। श्रवण के प्रति जागरूकता अभियान के तहत डॉ. प्रवीण कुमार सिन्हा, जिला एन. सी. डी. पदाधिकारी ने सदर अस्पताल में एक सेमीनार आयोजित किया एवं जानकारी दी कि हमें श्रवण के प्रति संवेदनशील एवं जागरूक होना पड़ेगा। सबसे बड़ी बात तो यह है कि हम श्रवण दोष होने का स्वयं आभास नहीं होता है और हमारे परिजनों को यह पता नहीं चलता है कि वास्तविक में दोष है या इनका चाले-चलन ऐसा है। डॉ. प्रवीण कुमार सिन्हा ने स्पष्ट रूप से बताया कि अधिक आवाज के माहौल में रहने से हमारा श्रवण क्षमता छिन्न जाता है।

अधिक शोर या लम्बे अवधि तक शोर-गूल या गाना-बजाना के माहौल में रहने से हमारा श्रवण क्षमता घट जाती है। कन्सर्ट, डिस्को, रैली, पूजा पाठ के माहौल में, घर पर ज्यादा वाल्यूम में टी.भी., रेडियो, टेप- रेकार्डर सुनना, गाड़ी में ज्यादा वाल्यूम में म्यूजिक बजाना, बच्चों को बड़े बड़े स्पीकर के समीप रखना कान के श्रवण क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। सुनाई कम पड़ने के लक्षण हैं कि : व्यक्ति बार बार पूछेगा कि क्या कह रहे थे, वो लोग क्या बात कह रहे थे, फोन से बात के उपरांत कहेगा कि कुछ समझ में नहीं आया ऊ का बोला, व्यक्ति बार बार पार्डन यानी कि बात को दुहरायें कहेगा, नजदीक में कोई गपशप करने लगे तो टी.वी. का वाल्यूम बढ़ा देना आदि अगर परिवार के किसी सदस्य में ये सब बातें घटने लगे या घटता दिखाई दे रहा है तो उस व्यक्ति का श्रवण परिक्षण करवाना चाहिए ताकि शुरूआती दौर में उचित इलाज मुहैया कराई जा सके।डॉ . प्रवीण ने बताया कि हमारा कान के तीन भाग होते हैं :- पहला बाहरी कान, दूसरा मध्य कान, तीसरी आन्तरिक कान और इन तीनों जगहों पर दोष, संक्रमण, आघात, ट्यूमर आदि होने से श्रवण दोष होता है। डॉ. प्रवीण ने यह भी बताया कि कान की सफाई हेतु जॉन्सन बड, रूमाल का कोना, तौलिया का कोना आदि का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए क्योंकि यह सूकून के बाद समस्याएं बढ़ा देती है कान के गूँज को और अन्दर ठेल देती जो वाक्स इमपैक्शन करा देती और आसानी से निजात पाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन हो जाता है।

नेहरू युवा केंद्र ने जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का किया आयोजन

आरा। नेहरू युवा केंद्र के द्वारा जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन प्रयास एक कोशिश बदलाव के संयुक्त तत्वधान में किया गया दो दिवसीय प्रतियोगिता के पहले दिन कबड्डी और फुटबॉल की मैच कराई गई जिसमें कबड्डी के फाइनल में रोमांचक मुकाबले में बड़हरा की टीम ने तरारी की टीम को हराया वही फुटबॉल के फाइनल में तरारी की टीम और कोईलवर प्रखंड की टीम के बीच में रोमांचक मुकाबला खेला गया निर्धारित समय तक दोनों में से किसी टीम ने गोल नहीं किया अंततः ट्राई ब्रेकर में तरारी की टीम विजय रही इस अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ता नवीन राय जिला परियोजना पदाधिकारी नमामि गंगे अमित सिंह प्रसिद्ध शिक्षक मिथिलेश प्रधान ग्रेपलिंग एसोसिएशन के सचिव रिजवान अहमद वरिष्ठ फुटबॉल खिलाड़ी रेफरी राजकुमार गोल्डन बेबी फुटबॉल एकेडमी के कोच विनीत गौतम निर्णायक के रूप में धर्मेश उपाध्याय थे इस अवसर पर प्रयास एक कोशिश बदलाव के सदस्य सुशील कुमार रघुराज तिवारी कुणाल सिंह शिवम कुमार सिंह इत्यादि लोग थे।

पर्यटन विकास के लिए दीर्घावधि योजना के साथ काम करने की जरूरत

नई दिल्ली, एजेंसी

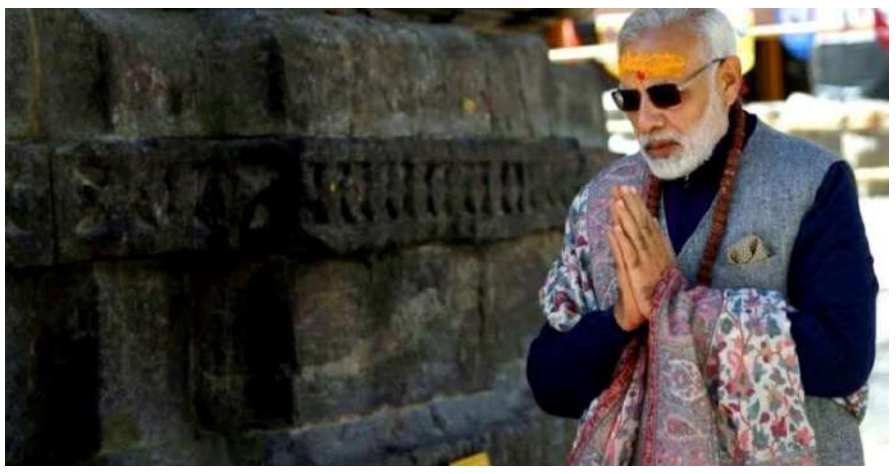

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को देश में पर्यटन विकास के लिए वैज्ञानिक तरीके और नई सोच के साथ विकसित किए जाने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि इस क्षेत्र में कृषि, अवसंरचना एवं कपड़ा जैसे क्षेत्रों की ही तरह रोजगार के विशाल अवसर सृजित करने की संभावना है।

श्री मोदी बजट के बाद की वेबीनार-श्रृंखला की आज की कड़ी में पर्यटन क्षेत्र के विकास विषय पर सरकार और अन्य हितधारकों के प्रतिधियों की चर्चा का उद्घाटन कर रहे थे। उन्होंने इस क्षेत्र के लिए लम्बी अवधि की योजना पर काम किए जाने का सुझाव रखा। भारत के पर्यटक स्थलों से संबंधित ऐप और डिजिटल कंटेन्ट को संयुक्त राष्ट्र की सभी मान्यता प्राप्त भाषाओं के साथ देश की सभी प्रमुख भाषाओं में तैयार करने की सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि पर्यटन स्थलों पर साइनेज (मार्ग निर्देशक पट) भी यथा संभव सभी भाषाओं में होने चाहिए जिससे दूसरे भाषाभाषी पर्यटकों को बहुत आसानी हो जाती है। उन्होंने कहा, हम ऐसी बातों का महात्म्य को समझ लें और पर्यटन क्षेत्र को वैज्ञानिक सोच के साथ विकासित करे तो इस क्षेत्र में रोजगार पैदा करने की तकत कृषि, अवसंरचना और टेक्सटाइल्स जैसे क्षेत्रों जैसी ही है। उन्होंने भारत में प्रशिक्षित विभिन्न भाषाओं के लिए टूरिस्ट गाइड की संख्या बढ़ाने की जरुरत को भी रेखांकित किया और इसके लिए संस्थाओं में पाठ्यक्रम और प्रमाण-पत्र की व्यवस्था और गाइड के लिए ड्रेस कोड लागू किए जाने का सुझाव दिया। श्री मोदी ने कहा, हमें देश में टूरिज्म सेक्टर को नई ऊँचाई देने के लिए लीक से हट कर सोचना होगा और लम्बी अवधि की योजना बना कर चलना होगा। उन्होंने कहा कि जब भी कोई पर्यटन स्थल विकसित करने की बात होती है तो तीन सवाल महत्वपूर्ण होते हैं जिनमें पहला उस स्थान की संभावना क्या है, दूसरा वहां आसानी से पहुंचने की बुनियादी जरूरतें क्या हैं और उन्हें कैसे पूरा करेंगे तथा तीसरा प्रोमोशन (प्रचार) के लिए क्या किया जायेगा। उन्होंने कहा कि भारत में पर्यटन स्थलों पर नागरिक सुविधाओं की बढ़ोतरी, पहुंच की अच्छी सुविधा, अस्पताल की सुलभता और बेहतर अवसंरचना तथा गंदगी का नामोनिशान न हो तो देश के पर्यटन में कई गुना वृद्धि हो सकती है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत आज पर्यटन क्षेत्र का कायाक्ल्प करने में जुटा है और आज की जरूरत नई सोच तथा दीर्धकालिक योजना की। उन्होंने कहा कि जब सभी हितधारक काम को रणनीतिक और कारगर तरीके से करने के लिए कंधे से कंधा मिला कर चलते हैं तो वांछित परिणाम समय से प्राप्त होते हैं।

उन्होंने कहा कि भारत में सदियों से पर्यटन का बहुत बड़ा दायरा रहा है। सदियों से देश में यात्राएं होती रही हैं।यह भारत के सांस्कृतिक जीवन का हिस्सा रहा है।

उन्होंने आस्था के स्थलों से जोड़ने वाली चारधाम, द्वादश ज्योतिर्लिंग की यात्रा, 51 शक्तिपीठ की यात्रा और ऐसी तमाम यात्राओं का उल्लेख करते हुए कहा जब साधन नहीं थे तब भी लोग कष्ट उठाकर यात्राएं किया करते थे। श्री मोदी ने कहा, यात्राओं ने देश को मजबूत करने का भी काम किया है। हमें इन्हें भी मजबूत करने की पहल करना होगा।

उन्होंने कहा कि दुर्भाग्य से इस पुरातन परंपरा के बावजूद इन स्थानों पर समय के अनुकूल सुविधाएं बढ़ाने पर ध्यान नहीं दिया गया। पहले सैकड़ों वर्षों की गुलामी और फिर आजादी के दशकों में भी इन स्थानों की राजनीतिक उपेक्षा ने देश का बहुत नुकसान किया।

अब देश उपेक्षा की इस स्थिति को बदल रहा है। उन्होंने कहा, जब यात्रियों के लिए सुविधाएं बढ़ती हैं, तो यात्री आकर्षित होते हैं और उनकी संख्या में भारी वृद्धि होती है, ये भी हम देश में देख रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा देश में तटीय पर्यटन, बीच टूरिज्म, हिमालय दर्शन, मैंग्रोव पर्यटन, एडवेंचर टूरिज्म, अभयारण्य पर्यटन, नैसर्गिक और विरासत की जगहों का पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, वेडिंग डेस्टिनेशन और स्पोर्ट्स पर्यटन जैसी ढेरों संभावनाए मौजूद हैं। बेहतर होते इंफ्रास्ट्रक्चर के कारण हमारे दूर-सुदूर के गांव, अब टूरिज्म मैप पर आ रहे हैं। उन्होंने स्कूल बच्चों और विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों की यात्राओं को प्रोत्साहित किए जाने का भी उल्लेख किया और कहा कि इससे पर्यटन सुविधाओं की मांग बढ़ेगी तथा युवापीढ़ी का क्षेत्र के बारे में ज्ञान भी बढ़ेगा।

संक्षिप्त खबरें

रुपया शुरूआती कारोबार में 36 पैसे की मजबूती के साथ 82.24 प्रति डॉलर पर

मुंबई। घरेलू शेयर बाजार में सकारात्मक रुख के बीच शुक्रवार को शुरूआती कारोबार में रुपया 36 पैसे की मजबूती के साथ 82.24 रुपये प्रति डॉलर पर आ गया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया डॉलर के मुकाबले 82.28 पर खुला और बढ़त दर्ज करते हुए 82.24 के स्तर पर पहुंच गया। रुपया बृहस्पतिवार को अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले 82.60 पर बंद हुआ था। अन्य मुद्राओं की तुलना में अमेरिकी मुद्रा की मजबूती का आकलन करने वाला डॉलर सूचकांक 0.13 प्रतिशत गिरकर 104.88 पर पहुंच गया। वैश्विक मानक ब्रेंट कच्चा तेल वायदा 0.39 प्रतिशत गिरकर 84.42 डॉलर प्रति बैरल पर था।

म्यांमार का आसियान देशों से व्यापार 9 महीनों में 10.3 बिलियन डॉलर से अधिक

यांगोन। वित्तीय वर्ष 2022-2023 के दिसंबर तक नौ महीनों में आसियान देशों के साथ म्यांमार का व्यापार 10.3 बिलियन डॉलर से अधिक हो गया। देश के वाणिज्य मंत्रालय ने ये जानकारी दी है। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, मंत्रालय ने गुरुवार को बताया कि देश में आयात, निर्यात से अधिक हो गया। निर्यात 3.538 अरब डॉलर रहा और आयात 6.77 अरब डॉलर था। म्यांमार के प्रमुख आसियान व्यापार भागीदारों में थाईलैंड, सिंगापुर, मलेशिया, इंडोनेशिया और वियतनाम शामिल हैं। मुख्य निर्यात वस्तुएं कृषि और मत्स्य उत्पाद, और खनिज हैं।

सबसे अमीर लोगों की लिस्ट में मस्क फिर दूसरे नंबर पर

एलन मस्क दुनिया के नंबर एक अमीर व्यक्ति होने का ताज एक बार फिर गंवा बैठे हैं। टेस्ला, स्पेसएक्स और ट्विटर जैसी कंपनियों के मुखिया मस्क इसी हफ्ते फिर से दुनिया के नंबर एक व्यक्ति बने थे। ब्लूमबर्ग बिजनेस इंडेक्स के अनुसार मस्क का नेट वर्थ 187.1 अरब डॉलर के करीब है। फॉर्च्यून की एक रिपोर्ट में कहा गया है टेस्ला के शेयरों के भाव बुधवार को 5% से अधिक फिसल गए। इससे मस्क को करीब दो अरब डॉलर का नुकसान हुआ। इसके बाद फ्रांस के कारोबारी बर्नार्ड अरनॉल्ट एक बार फिर दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति बन गए। बुधवार के कारोबारी सेशन के दौरान मस्क की संपत्ति में 1.9 अरब डॉलर की कमी आई और यह 184 बिलियन डॉलर पर पहुंच गई। वहीं अरनॉल्ट की कुल संपत्ति करीब 186 अरब डॉलर है। दो दिन पहले ही मस्क अरनॉल्ट को पीछे करते हुए हुए दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति बने थे।

भारतीय शॉर्ट-फॉर्म वीडियो बाजार 2030 तक 12 अरब डॉलर तक पहुंच जाएगा

नई दिल्ली, एजेंसी

भारतीय शॉर्ट-फॉर्म वीडियो बाजार मुद्रीकरण सफलता के शिखर पर है और संभावित रूप से 2030 तक 8 डॉलर से 12 अरब डॉलर का हो सकता है।

शुक्रवार को एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई।

रेडसीर स्ट्रैटेजी कंसल्टेंट्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय ऐप अब वैश्विक शॉर्ट-फॉर्म ऐप के साथ अच्छी तरह से मुकाबला कर रहे हैं और म्यूजिक/डान्स और डायलॉग/एक्टिंग कंटेंट के प्रस्तावों में महत्वपूर्ण अंतर के साथ पांच शीर्ष कंटेंट शैलियों में से तीन में अग्रणी हैं।

रिपोर्ट में 2028 में 0.35-0.4 अरब डॉलर के मौजूदा स्तर से प्रभावशाली लोगों पर मार्केटिंग खर्च 2.8-3.5 अरब डॉलर होने का अनुमान लगाया गया है।

रेडसीर स्ट्रैटेजी कंसल्टेंट्स के पार्टनर मोहित राणा ने कहा, वर्तमान में, ब्रांड और प्रभावित करने वाले ज्यादातर मध्यस्थ एजेंसियों के माध्यम से जुड़ते हैं- एक ऐसा मॉडल जो टूटा हुआ है और जिसमें दक्षता की कमी है। उन्होंने कहा, तकनीक-सक्षम, पारदर्शी और स्केलेबल समाधान की आवश्यकता है। क्रिएटर मार्केटप्लेस इस अंतर को पाट सकते हैं।

वैश्विक स्तर पर, शॉर्ट-फॉर्म वीडियो प्लेटफॉर्म और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म ग्राहकों की व्यस्तता और बिक्री को बढ़ावा देने के लिए वीडियो कॉमर्स पर तेजी से ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

भारत में, वीडियो कॉमर्स अभी शुरू ही हुआ है, शॉर्ट-फॉर्म वीडियो प्लेटफॉर्म के 2030 में 8-11 बिलियन डॉलर के वीडियो कॉमर्स बाजार में 40 प्रतिशत पर कब्जा करने की उम्मीद है।

इसके अलावा, रिपोर्ट से पता चला है कि मेट्रो और टियर 1 शहरों में कंटेंट की खपत के लिए पसंदीदा भाषा हिंदी है, इसके बाद अंग्रेजी और अन्य क्षेत्रीय भाषाएं हैं।

यह भी देखा गया है कि यूजर-जेनरेटिड कंटेंट (यूजीसी) प्लेटफॉर्म क्रिएटर मार्केटप्लेस विकसित कर रहे हैं जो क्रिएटर्स के लिए ब्रांडों से जुड़ने के लिए एक केंद्रीकृत नेटवर्क बन सकते हैं।

इससे क्रिएटर्स और ब्रैंड दोनों को फायदा हो सकता है, क्योंकि यह क्रिएटर्स को अपना काम दिखाने के लिए और ब्रैंड को काम करने के लिए उपयुक्त क्रिएटर्स खोजने के लिए एक प्लैटफॉर्म मुहैया कराता है।

रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि भारत में शॉर्ट-फॉर्म वीडियो प्लेटफॉर्म पर वर्चुअल गिफ्टिंग 2030 तक 1.7 अरब डॉलर होने की उम्मीद है।

माइक्रोसॉफ्ट ने बिंग चैटबॉट में अलग-अलग टोन सेट करने का जोड़ा नया फीचर

नई दिल्ली, एजेंसी

सैन फ्रांसिस्को। टेक दिग्गज माइक्रोसॉफ्ट ने अपने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)-संचालित बिंग चैटबॉट में एक नया फीचर जोड़ा है, जो यूजर्स को प्रतिक्रियाओं के लिए अलग-अलग टोन चुनने की अनुमति देता है। यूजर्स चैटबॉट की प्रतिक्रियाओं के लिए तीन विकल्पों प्रीसाइज, बैलेंस और क्रिएटिव में से चुन सकते हैं। द वर्ज की रिपोर्ट के अनुसार, क्रिएटिव मोड ऐसी प्रतिक्रियाएं प्रदान करता है जो मूल और कल्पनाशील होती हैं, जबकि सटीक मोड अधिक तथ्यात्मक और संक्षिप्त उत्तरों के लिए सटीकता और प्रासंगिकता प्रदान करता है। टेक जायंट ने बिंग चैटबॉट के डिफॉल्ट मोड को बैलेंस पर सेट किया है, जो सटीकता और रचनात्मकता के बीच सही संतुलन बनाएगा। ये नए चैट मोड वर्तमान में सभी बिंग एआई यूजर्स के लिए चल रहे हैं, और लगभग 90 प्रतिशत यूजर्स उन्हें पहले से ही देख रहे होंगे। माइक्रोसॉफ्ट में वेब सर्विस के प्रमुख मिखाइल पारखिन के अनुसार, अपडेट में उन मामलों में कमी शामिल है, जहां बिंग बिना स्पष्ट कारण के जवाब देने से इंकार कर देता है। पिछले महीने, कंपनी ने कहा कि वह एक अतिरिक्त विकल्प का भी परीक्षण करने जा रही है, जो यूजर्स को चैट के टोन को अधिक प्रीसाइज, बैलेंस और अधिक क्रिएटिव चुनने की अनुमति देगा। उन्होंने कहा, इसका लक्ष्य यूजर को अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चैट बिहेवियर के प्रकार पर अधिक कंट्रोल देना है।

ट्विटर ने कम्युनिटी नोट्स का ब्राजील में विस्तार किया

नई दिल्ली, एजेंसी

माइक्रो-ब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म ट्विटर ने शुक्रवार को घोषणा की है कि उसने अपने कम्युनिटी नोट्स का ब्राजील में विस्तार किया है और यह पहला देश है जहां उपयोगकर्ता मुख्य रूप से एक अलग भाषा में प्राथमिक नोट लिखने और रेट करने में सक्षम होंगे।

कंपनी ने अपने एटदरेट कम्युनिटी नोट्स अकाउंट्स से ट्वीट किया, ब्राजील में योगदानकताओं का स्वागत है! हम ट्विटर पर सबसे बड़े समुदायों में से एक कम्युनिटी के नोट्स लाने के लिए उत्साहित हैं और सबसे पहले एक अलग प्राथमिक भाषा में नोट्स लिखने और रेट करने वाली पहली कंपनी हैं।

हम विश्व स्तर पर कम्युनिटी नोट्स का विस्तार करना जारी रखते हैं। हमेशा की तरह, हम यह सुनिश्चित करने के लिए ध्यान दे रहे हैं कि नोट्स दुनिया भर के विभिन्न धष्टिकोणों से लोगों के लिए सहायक हों। इस साल जनवरी में, कंपनी ने अपने क्राउड-सोर्स्ड फैक्ट-चेकिंग प्रोग्राम को चार देशों- यूके, आयरलैंड, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में विस्तारित किया था।

कम्युनिटी नोट्स का उद्देश्य उपयोगकताओं को लिंक और रिपोर्ट के माध्यम से ट्वीट्स में अधिक संदर्भ जोड़ने की अनुमति देना है।

लोकप्रिय ट्वीट्स में किए गए दावों को खारिज करने या सही करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया गया है।

ट्विटर ने पिछले साल अमेरिका में बर्डवॉच के तहत सोशल फैक्ट-चेकिंग प्रोग्राम पेश किया था, लेकिन एलन मस्क ने ट्विटर का प्रबंधन शुरू करने के बाद, उन्होंने बर्डवॉच का नाम बदलकर कम्युनिटी नोट्स कर दिया।

पिछले साल नवंबर में, कंपनी ने एक एल्गोरिथम अपडेट शुरू किया था जो अधिक निम्न-गुणवत्ता वाले सामुदायिक नोट्स की पहचान करता है, जिसके परिणामस्वरूप उन लोगों के योगदानकर्ता की स्थिति को निलंबित कर दिया जाएगा जो ट्वीट्स पर और स्पष्टीकरण और संदर्भ प्रदान करने के लिए अनुपयोगी एनोटेशन लिखते हैं।

राजनीतिक लाभ के लिए हो रहा निवेशकों का शिखर सम्मेलन : टीडीपी

नई दिल्ली, एजेंसी

आंध्र प्रदेश की मुख्य विपक्षी पार्टी तेलुगू देशम पार्टी (टीडीपी) ने आरोप लगाया है कि राज्य सरकार द्वारा शुक्रवार से विशाखापत्तनम में आयोजित किया जा रहा इंवेस्टेर समिट राज्य के हित में नहीं है, बल्कि केवल राजनीतिक लाभ के लिए है। टीडीपी ने यह भी आरोप लगाया कि पिछले चार साल से कई उद्योगपतियों को परेशान किया गया है और अब औद्योगिक शिखर सम्मेलन का आयोजन केवल जनता को गुमराह करने के लिए किया जा रहा है।

विपक्षी दल ने दावा किया कि कई प्रसिद्ध उद्योगपति और व्यवसायी मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी के भ्रष्ट आचरण के शिकार हुए। टीडीपी ने एक फैक्ट शीट में कहा कि जगन रेड्डी सरकार की विनाशकारी नीतियों और नफरत के कारण पिछले चार सालों में एक भी उद्योगपति ने राज्य में इकाई स्थापित करने में दिलचस्पी नहीं दिखाई। टीडीपी ने कडप्पा स्टील प्लांट के दो बार शिलान्यास किए जाने पर कहा कि प्लांट का काम आगे नहीं बढ़ा। वाईएसआरसीपी के सत्ता में आने के तुरंत बाद, मायलावरम सौर संयंत्रों पर हमला किया गया और किआ प्रबंधन को ब्लैकमेल किया गया, जबकि अमारा राजा बैटरी को बंद करने की साजिश रची गई। टीडीपी ने आगे कहा कि बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार से डरकर, जॉकी यूनिट अनंतपुर जिले के रपथडू से पड़ोसी राज्य में चली गई, जबकि रिलायंस इलेक्ट्रॉनिक उद्योग तिरुपति से दूसरे राज्य में स्थानांतरित हो गया। फ्रैंकलिन टेम्पलटन, डेटा सेंटर, लुलु और टाइटन इलेक्ट्रिकल वाहन इकाई, सभी ने विशाखापत्तनम छोड़ दिया।

कुरनूल में मेगा सीड्स यूनिट पूरी तरह से कमजोर हो गई, जबकि सिंगापुर स्थित अंकुरा इंडस्ट्रीज, एक्सएलआर एकेडमिक्स और कई अन्य उद्योगों ने अमरावती छोड़ दिया। इसी तरह, अपोलो टायर्स, रामायपट्टनम की पेपर पल्प यूनिट, बेस्ट बैटरी यूनिट और ऐसी कई कंपनियां राज्य से चली गईं। राज्य सरकार औद्योगीकरण को प्रोत्साहित करने में बुरी तरह विफल रही है। आगे दावा किया गया कि वाईएसआरसीपी के शासन के दौरान विशाखापत्तनम में तीन औद्योगिक शिखर सम्मेलन आयोजित किए गए और 32 लाख युवाओं के लिए रोजगार सृजित करने के लिए 16 लाख करोड़ रुपये के निवेश के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए।

राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में, चंद्रबाबू नायडू ने दावोस का चार बार दौरा किया था और 5 लाख करोड़ रुपये के निवेश को आकर्षित किया और 5.13 लाख रोजगार सृजित किया। टीडीपी ने मुख्यमंत्री से आगामी चुनावों को ध्यान में रखते हुए विशाखापत्तनम शिखर सम्मेलन के नाम पर उद्योगपतियों के प्रति तरीकों में सुधार करने को कहा, साथ ही बकाया राशि जारी करने को भी कहा।

शेयर बाजार में जोरदार तेजी, सेंसेक्स 664 अंक उछला

नई दिल्ली, एजेंसी

सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन आज घरेलू शेयर बाजार में मजबूती नजर आ रही है। कारोबार की शुरूआत से ही खरीदारों ने अपना जोर बनाया हुआ है, जिसके कारण सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांक 1 प्रतिशत से अधिक की उछाल के साथ कारोबार करते नजर आ रहे हैं। बीच में बिकवालों ने एक बार मुनाफा वसूली करने की कोशिश भी की, लेकिन लिवाली के जोर के कारण शेयर बाजार की चाल पर ज्यादा असर नहीं हुआ। शुरूआती 1 घंटे के कारोबार में सेंसेक्स 1.13 प्रतिशत और निफ्टी 1.17 प्रतिशत की मजबूती के साथ कारोबार कर रहे थे। पहले 1 घंटे के कारोबार में स्टॉक मार्केट के दिग्गज शेयरों में से अडाणी पोर्ट्स, अडाणी इंटरप्राइजेज, कोल इंडिया, बीपीसीएल और हीरो मोटोकॉर्प के शेयर 3.45 प्रतिशत से लेकर 1.33 प्रतिशत तक की मजबूती के साथ कारोबार करते नजर आ रहे थे। दूसरी ओर मारुति सुजुकी, एक्सिस बैंक, टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस), महिंद्रा एंड महिंद्रा और एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस के शेयर 2.46 प्रतिशत से लेकर 1.61 प्रतिशत तक की कमजोरी के साथ कारोबार कर रहे थे। अभी तक के कारोबार में स्टॉक मार्केट में 1,920 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हो रही थी। इनमें से 1,490 शेयर मुनाफा कमाकर हरे निशान में कारोबार कर रहे थे, जबकि 430 शेयर नुकसान उठाकर लाल निशान में कारोबार कर रहे थे। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 26 शेयर लिवाली के सपोर्ट से हरे निशान में और 4 शेयर बिकवाली के दबाव के कारण लाल निशान में बने हुए थे। जबकि निफ्टी में शामिल 50 शेयरों में से 45 शेयर हरे निशान में और 5 शेयर लाल निशान में कारोबार करते दिख रहे थे। ग्लोबल मार्केट से मिल रहे मजबूत संकेतों के बीच बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) के सेंसेक्स ने आज मजबूती के साथ कारोबार की शुरूआत की। ये सूचकांक 331.85 अंक की छलांग लगाकर 59,241.20 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरूआत होते ही बाजार में खरीदारों ने लिवाली शुरू कर दी। जिसके कारण सेंसेक्स भी तेजी से आगे बढ़ने लगा। शुरूआती 15 मिनट के कारोबार के बाद ही बिकवालों ने एक बार मुनाफावसूली करने की कोशिश भी की, जिससे सेंसेक्स की चाल कुछ देर के लिए मंद पड़ती नजर आई। लेकिन थोड़ी देर बाद खरीदारों ने दोबारा अपना जोर बना दिया, जिससे ये सूचकांक कुलांचे भरते हुए आगे बढ़ने लगा। बाजार में लगातार जारी खरीद-बिक्री के बीच शुरूआती 1 घंटे का कारोबार होने के बाद सुबह 10:15 बजे सेंसेक्स 664.75 अंक की मजबूती के साथ 59,574.10 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा था।

ग्लोबल मार्केट में तेजी से एशियाई बाजार में उछाल

नई दिल्ली, एजेंसी

अमेरिकी फेडरल रिजर्व के ब्याज दरों में तुलनात्मक तौर पर कम बढ़ोतरी किए जाने का संकेत मिलने के बाद ग्लोबल मार्केट का मूड सुधरा हुआ नजर आ रहा है। पिछले कारोबारी सत्र में वॉल स्ट्रीट के साथ ही यूरोपीय बाजारों में भी तेजी का रुख बना रहा। इसी तरह एशियाई बाजारों में भी आज आमतौर पर तेजी का रुख बना हुआ है। पिछले कारोबारी सत्र में वॉल स्ट्रीट के तीनों इंडेक्स मजबूती के साथ कारोबार कर के बंद हुए। डाओ जोंस 341.73 अंक यानी 1.05 प्रतिशत की बढ़त के साथ 33,003.57 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह एसएंडपी 500 इंडेक्स ने 0.76 प्रतिशत की तेजी के साथ 3,981.35 अंक के स्तर पर अपने पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। इसके अलावा नैस्डेक 83.50 अंक यानी 0.73 प्रतिशत की छलांग लगाकर 11,462.98 अंक के स्तर पर बंद हुआ। उल्लेखनीय है कि गुरुवार को ही अटलांटा के फेड प्रेसिडेंट की ओर से जारी एक बयान में कहा गया है कि अमेरिकी फेडरल रिजर्व इस बार ब्याज दरों में 25 बेसिस पॉइंट्स की बढ़ोतरी कर सकता है। इस बयान में कहा गया है कि ब्याज दरों के बढ़ने की प्रक्रिया इस साल गर्मियों तक संभव है। अटलांटा के फेड प्रेसिडेंट के इस बयान के बाद से ही वॉल स्ट्रीट के कारोबार में उत्साह का रुख बन गया था, जिसका असर तीनों अमेरिकी सूचकांकों की तेजी के रूप में सामने आया। यूरोपीय बाजार भी पिछले कारोबारी सत्र में मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहे। एफटीएसई इंडेक्स 0.37 प्रतिशत की तेजी के साथ 7,944.04 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह सीएसी इंडेक्स ने 0.69 प्रतिशत की छलांग लगाकर 7,284.22 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के अपने कारोबार का अंत किया। इसके अलावा डीएएक्स इंडेक्स 0.15 प्रतिशत की तेजी के साथ 15,327.64 अंक के स्तर पर बंद हुआ। ग्लोबल मार्केट में आई तेजी का असर आज एशियाई बाजारों पर भी पड़ता नजर आ रहा है। अभी तक के कारोबार में एशियाई बाजारों में सेट कंपोजिट इंडेक्स और जकार्ता कंपोजिट इंडेक्स के अलावा शेष सभी सूचकांक बढ़त के साथ हरे निशान में कारोबार कर रहे हैं। एसजीएक्स निफ्टी 176.50 अंक यानी 1.02 प्रतिशत की तेजी के साथ 17,531.50 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह निक्केई इंडेक्स 420.69 अंक यानी 1.53 प्रतिशत उछलकर 27,919.56 अंक के स्तर पर बना हुआ है। वहीं स्ट्रेट्स टाइम्स इंडेक्स 0.38 प्रतिशत की मजबूती के साथ 3,247.10 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। जबकि हैंग सेंग इंडेक्स 145.70 अंक यानी 0.71 प्रतिशत की बढ़त के साथ 20,575.16 अंक के स्तर पर है। इसके अलावा ताइवान वेटेड इंडेक्स 0.40 प्रतिशत की तेजी के साथ 15,661.57 अंक के स्तर पर, कोस्पी इंडेक्स 0.13 प्रतिशत की बढ़त के साथ 2,431.08 अंक के स्तर पर और शंघाई कंपोजिट इंडेक्स 0.17 प्रतिशत की उछाल के साथ 3,316.32 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहे हैं। दूसरी ओर सेट कंपोजिट इंडेक्स 0.29 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 1,607.93 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। जबकि जकार्ता कंपोजिट इंडेक्स 0.57 प्रतिशत टूट कर 6,818.12 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

टेक न्यूज वेबसाइट सीएनईटी कई कर्मचारियों की छंटनी करेगी

नई दिल्ली, एजेंसी

टेक समाचार वेबसाइट सीएनईटी व्यापक छंटनी कर रही है। लंबे समय से जुड़े कई कर्मचारी इसकी चपेट में आ सकते हैं। मीडिया रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। द वर्ज के अनुसार, छंटनी लगभग एक दर्जन लोगों, या लगभग 10 प्रतिशत कार्यबल को प्रभावित कर सकती है। सीएनईटी द्वारा एक ड्राफ्ट ब्लॉग पोस्ट के हवाले से रिपोर्ट में कहा गया कि सीएनईटी के प्रधान संपादक कोनी गुग्लिल्मो भी अपनी भूमिका से हट जाएंगे और एआई कंटेंट स्ट्रेटिजी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और एडिटी-इन-लार्ज बन जाएंगे। निजी इक्विटी-समर्थित मार्केटिंग-टर्न-मीडिया कंपनी रेड वेंचर्स द्वारा ईमेल के माध्यम से आंतरिक रूप से छंटनी की घोषणा की गई थी, जिसने 2020 में सीएनईटी को खरीदा था। रेड वेंचर्स में वित्तीय सेवाओं के अध्यक्ष और सीएनईटी ग्रुप, कार्लोस एंग्रीसानो ने लिखा, एक मजबूत भविष्य के लिए खुद को तैयार करने के लिए, हमें इस बात पर ध्यान देना होगा कि हम अपने संचालन और अपने टेक स्टैक को कैसे सरल बनाते हैं और यह भी कि हम अपना समय और ऊर्जा कैसे निवेश करते हैं। जनवरी में, फ्यूचरिज्म ने बताया था कि सीएनईटी ने दर्जनों लेख प्रकाशित किए जो एआई टूल का उपयोग करके तैयार किए गए थे। द वाशिंगटन पोस्ट, सीएनएन, बजफीड, एनपीआर, एनबीसी न्यूज, एमएसएनबीसी, स्पोर्ट्स इलस्ट्रेटेड और अन्य जैसे कई मीडिया आउटलेट ने हाल के महीनों में कर्मचारियों की छंटनी की है।

झारखंड में 14 ठिकानों पर ईडी की छापेमारी, अब तक तीन करोड़ रुपये नकद बरामद

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रवर्तन निदेशालय ने हजारीबाग के मोहम्मद एझार अंसारी के पास से तीन करोड़ रुपये बरामद किए। सूत्रों के अनुसार नकदी की यह बरामदगी आईएएस अधिकारी पूजा सिंघल मामले से जुड़ी है। बता दें कि झारखंड में कई ठिकानों पर ईडी की छापेमारी जारी है। झारखंड राज्य खनिज विकास निगम (जेएसएमडीसी) के पूर्व कर्मचारी अशोक कुमार और एहसान अंसारी के ठिकानों पर छापेमारी चल रही है। सूत्रों ने बताया है कि रांची और हजारीबाग में 14 ठिकानों पर छापेमारी की जा रही है।

इंदौर टेस्ट में भारत की हार के बाद सुनील गावस्कर बोले, भारतीय बल्लेबाजों में पिच का था खौफ

नई दिल्ली, एजेंसी

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तीसरे टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया से भारत की शर्मनाक नौ विकेट की हार के बाद महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने कहा कि मेजबान टीम को पर्याप्त रन नहीं मिले, उनके मन में पिच को लेकर काफी सारी बातें घूम रही थी। चार मैचों की श्रृंखला में पिच की स्थिति ने सुर्खियां बटोरी है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) से औसत रेटिंग हासिल करने वाले नागपुर और दिल्ली टेस्ट के लिए पिच पर काफी कमेंट्स हुए। ऑस्ट्रेलिया को पहले टेस्ट में एक पारी और 132 रन से हराया था और दूसरा मैच तीन दिन के अंदर 6 विकेट से हार गया था। हालांकि, भारत ने इंदौर में तीसरे टेस्ट में स्पिन आक्रमण के खिलाफ निराशाजनक बल्लेबाजी प्रदर्शन के बाद ऑस्ट्रेलिया को 4 मैचों की श्रृंखला में वापसी करने और इसे 1-2 करने की अनुमति दी। गावस्कर ने स्टार से कहा, पहले दो मैचों में उन्होंने रन नहीं बनाए। नागपुर में रोहित शर्मा के अलावा उन्हें पर्याप्त रन नहीं मिले। जब आप मैच में पर्याप्त रन नहीं बनाते हैं, तो उनकी बल्लेबाजी में थोड़ी अस्थिरता होती है। उन्होंने आगे कहा, भारतीय बल्लेबाजों ने पर्याप्त रन नहीं बनाए। वे पिच से तालमेल नहीं बैठा सके। उन्होंने पिच को खुद पर हावी होने दिया। यह वह पिच थी जो उनके दिमाग से खेल रही थी, दूसरी पारी में तो और भी ज्यादा पिच का खौफ था। तीसरे टेस्ट के पहले दिन बल्लेबाजी करने का फैसला करने के बाद भारत को सिर्फ 109 रन पर समेट दिया गया, जहां ऑस्ट्रेलिया के स्पिनर मैथ्यू कुहनमैन ने अपना पहला पांच विकेट हासिल किया। दूसरी पारी में ऑफ स्पिनर नाथन लियोन ने टेस्ट क्रिकेट में अपना दूसरा आठ विकेट लेने का कारनामा पूरा किया और भारत को 169 रनों पर ऑलआउट कर 76 रनों का लक्ष्य रखा। ऑस्ट्रेलिया को तीसरे टेस्ट में जीत की कगार पर खड़ा कर दिया। ट्रेविस हेड और मार्नस लाबुशेन ने शुक्रवार को होल्कर स्टेडियम में तीसरे टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया को भारत पर नौ विकेट से जीत दिलाने के लिए क्रमशः नाबाद 49 और 28 रनों की पारी खेली। अपनी पसंदीदा टीम की हार देखने के बाद, प्रशंसकों ने रोहित शर्मा की टीम की भी खिंचाई की, जबकि कई लोगों ने महसूस किया कि ऋषभ पंत की मौजूदगी भारत को मैच बचाने में मदद कर सकती थी। एक यूजर ने ट्विटर पर लिखा, इंदौर में अत्यधिक टर्निंग विकेट बनाने की कोशिश में भारत का अंत अच्छा नहीं रहा। एक अन्य प्रशंसक ने कहा, मैच इतनी जल्दी खत्म हो गया, जैसे फिल्म इंटरवल से पहले खत्म हो गई। एक अन्य यूजर ने कहा, हम बहुत कुछ कह रहे हैं कि भारतीय खिलाड़ी स्पिन आक्रमण के खिलाफ बहुत अच्छे हैं, लेकिन क्या वास्तव में ऐसा है? हाल के वर्षों में कई विरोधाभासी उदाहरण सामने आए हैं। शायद हमें यह महसूस करने की जरूरत है कि अब ऐसा नहीं है। 2020-21 की बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी को याद करते हुए, जहां ऋषभ पंत ने गाबा में ऐतिहासिक जीत के लिए टीम का नेतृत्व किया, जिसने भारत के लिए उद्घाटन विश्व टेस्ट चैंपियनशिप में जगह बनाई थी। एक प्रशंसक ने कहा कि विकेटकीपर-बल्लेबाज की मौजूदगी भारत के लिए मैच बचा सकती थी।

रबाडा के छह विकेट, दक्षिण अफ्रीका ने वेस्टइंडीज को पहले टेस्ट में हराया

नई दिल्ली, एजेंसी

सेंचुरियन। दक्षिण अफ्रीका ने गुरूवार को यहां तेज गेंदबाज कागिसो रबाडा (50 रन देकर छह विकेट) के शानदार प्रदर्शन से वेस्टइंडीज को पहले टेस्ट में तीसरे दिन 87 रन से शिकस्त दी। रबाडा के छह विकेट से वेस्टइंडीज की टीम जीत के लिये 247 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए 159 रन पर सिमट गयी। उसके लिये जर्मेन ब्लैकवुड की 79 रन की पारी भी काम नहीं आ सकी। इससे दक्षिण अफ्रीका ने दो मैचों की टेस्ट श्रृंखला में 1-0 से बढ़त बना ली। तेज गेंदबाजों के मुफीद सेंचुरियन की पिच पर अप्रत्याशित उछाल मिल रहा था। तीसरे दिन 16 विकेट गिरे और दूसरे दिन अंतिम सत्र में 11 विकेट गिरे थे। वेस्टइंडीज के लिये अल्जारी जोसफ ने पहली पारी और केमार रोच ने दूसरी पारी में पांच पांच विकेट झटके जबकि एनरिक नोर्किया ने पहली पारी और रबाडा ने दूसरी पारी में यह कारनामा किया। दक्षिण अफ्रीका ने पहली पारी में 342 रन बनाये और वेस्टइंडीज को पहली पारी में 212 रन पर समेटकर 130 रन की बढ़त हासिल की। दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाज दूसरी पारी में जूझते रहे जिसने दिन की शुरूआत चार विकेट पर 49 रन से की लेकिन टीम महज 28 ओवर में 116 रन पर सिमट गयी। यह सेंचुरियन पर उनका सबसे कम टेस्ट स्कोर भी है। रोच ने 47 रन देकर पांच विकेट झटके। मेहमान टीम के पास जीत का मौका था लेकिन 14.2 ओवर में वेस्टइंडीज ने 33 रन तक पांच विकेट गंवा दिये थे और टीम 159 रन पर सिमट गयी।

संक्षिप्त खबरें

भारतीय बल्लेबाजों ने खुद पर पिच को हावी होने दिया

इंदौर। महान खिलाड़ी सुनील गावस्कर ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे टेस्ट में खराब प्रदर्शन के लिए भारतीय बल्लेबाजों की जमकर आलोचना करते हुए शुक्रवार को कहा कि ह्य उनके दिमाग में पिच हावी रहा। पहली गेंद से ही स्पिनरों की मददगार पिच पर भारतीय टीम दोनों पारियों में महज 109 और 163 रन ही बना सकी। ऑस्ट्रेलिया ने इस मैच को तीसरे दिन ही नौ विकेट से जीतकर विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल के लिए क्वालीफाई किया। गावस्कर ने स्टार स्पोर्ट्स से कहा, बल्लेबाजों ने वास्तव में अपनी प्रतिभा के साथ न्याय नहीं किया। अगर आप भारतीय विकेट पतन को देखेंगे तो आप पाएंगे कि भारतीय बल्लेबाजों ने अपनी गलती से विकेट गंवाये। वे कुछ ऐसे शॉट खेल रहे थे जिससे लग रहा था कि उन्होंने पहले से अनुमान लगा लिया हो कि पिच से गेंद किस तरह से आयेगी। गावस्कर ने कहा, अगर आप देखें तो भारतीय बल्लेबाजी में आत्मविश्वास की कमी रही है क्योंकि रोहित शर्मा के अलावा पहले दो मैचों में उन्होंने रन नहीं बनाये है। रोहित ने नागपुर में शानदार शतक जड़ा था। जब आपके खाते में कत रन होते है, तो बल्लेबाजी में थोड़ी अस्थिरता होती है। इस पूर्व दिग्गज ने कहा, वे पिच पर गेंद के करीब नहीं पहुंच पा रहे थे। उन्होंने पिच को अपने ऊपर हावी होने दिया। यह वह पिच थी जो वास्तव में पहली पारी में ही उनके दिमाग हावी होने लगी थी। दूसरी पारी में यह असर और ज्यादा था।

प्रणवी, रिधिमा ने जोबर्ग लेडीज ओपन में कट मे प्रवेश किया

जोहानिसबर्ग। भारतीय गोल्फर प्रणवी उर्स और रिद्धिमा दिलावरी ने तीन लाख यूरो (लगभग 2.62 करोड़ रुपये) जोबर्ग लेडीज ओपन के कट में जगह हासिल करने में सफल रही। रिद्धिमा ने सनशाइन लेडीज टूर पर पाँच टूनार्मेंट में से चौथे में कट हासिल किया। वह दो दौर के बाद इवन पार स्कोर के साथ संयुक्त-29वें स्थान पर हैं। प्राणवी उनसे बेहतर प्रदर्शन कर एक अंडर के स्कोर के साथ संयुक्त 17वें स्थान पर है। तीन अन्य भारतीय गोल्फर वाणी कपूर (75-78), अमनदीप द्राल (76-78) और दीक्षा डागर (78-77) गुरुवार को कट में जगह बनाने में विफल रहे।

धोनी ने कहा कि वह मेरी कमेंट्री का लुत्फ उठाते हैं

नई दिल्ली, एजेंसी

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर के विकेटकीपर-बल्लेबाज ने दिनेश कार्तिक ने कहा कि विश्व कप विजेता पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धोनी उनकी कमेंट्री का काफी लुत्फ उठाते है।

भारत-ऑस्ट्रेलिया टेस्ट श्रृंखला में फिलहाल कामेंट्री कर रहे 37 वर्षीय कार्तिक आगामी आईपीएल (इंडियन प्रीमियर लीग) में मैदान पर आरसीबी का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखेंगे। कार्तिक ने आरसीबी पॉडकास्टर पर कहा कि धोनी से मिले तारीफ के एक-एक शब्दों ने उनके लिए कमेंट्री को और खास बना दिया। कार्तिक ने कहा, मुझे कमेंट्री के जो थोड़े बहुत मौके मिले है मैंने उसका आनंद लिया। मुझे लगता है कि मुझे खेल के बारे में बोलने, विश्लेषण करने में बहुत मजा आ रहा है। मैं इस तरह से वर्णन करना चाहता हूं कि इस खेल को देखने वाले हर व्यक्ति के लिए कुछ सार्थक हो। उन्होंने कहा, आप जानते हैं, मैंने हमेशा अपने तरीके से एक स्थिति से बाहर निकलने की कोशिश की और इसे उस तरह से स्पष्ट करने की कोशिश की, जिस तरह से मैंने सोचा था।

भारत के लिए खेल के तीनों प्रारूपों में खेल चुके कार्तिक ने कहा, मुझे सबसे बड़ी प्रशंसा उस व्यक्ति से मिली जिसकी मुझे सबसे कम उम्मीद थी। मैं धोनी की बात कर रहा हूं। उन्होंने मुझे कहा, मैंने वास्तव में कमेंट्री का आनंद लिया। बहुत बहुत अच्छा। आप शानदार कर रहे है। आरसीबी के लिए पिछले सत्र में 183 के शानदार स्ट्राइक रेट से 330 रन बनाने वाले इस खिलाड़ी ने कहा, इस पर मुझे सुखद आश्चर्य हुआ। मैंने उन्हें शुक्रिया कहा। आप जानते है कि यह मेरे लिए बड़ी बात है। वह खेल पर करीब से नजर रखते है। इसलिए उनसे ऐसी बातें सुनना वास्तव में अच्छा था। और मुझे खुशी है कि उन्होंने मेरी कमेंट्री का आनंद लिया।

एएफसी अंडर-20 महिला फुटबॉल चैंपियनशिप में झारखंड की सात फुटबॉलर शामिल

नई दिल्ली, एजेंसी

रांची। हनोई, वियतनाम में एएफसी अंडर-20 महिला फुटबॉल चैंपियनशिप का आयोजन चार से 12 मार्च तक होगा। इसके लिए भारतीय महिला फुटबॉल टीम की घोषणा कर दी गई है। टीम में झारखंड के कुल सात महिला फुटबालरों को जगह मिली है। इसमें अंजली, अष्टम उरांव, पूर्णिमा कुमारी, नीतू,सुनीता मुंडा, सुमति और अनीता शामिल हैं। भारतीय टीम में जगह बनाने और इस उपलब्धि पर खेल सचिव मनोज कुमार, खेल निदेशक डॉ सरोजनी लकड़ा, उपनिदेशक (साझा) देव शंकर दास, झारखंड फुटबॉल संघ के पदाधिकारी खेल प्रशिक्षकों एवम राज्य के खेल प्रेमियों ने बधाई दी है।

दक्षिण अफ्रीका के क्रेग फुल्टन भारतीय पुरूष हॉकी टीम के नये कोच

नई दिल्ली, एजेंसी

तोक्यो ओलंपिक चैम्पियन बेल्जियम के सहायक कोच रहे दक्षिण अफ्रीका के क्रेग फुल्टन भारतीय पुरूष हॉकी टीम के नये कोच होंगे। भुवनेश्वर और राउरकेला में जनवरी में हुए विश्व कप में भारतीय टीम के क्वार्टर फाइनल तक भी नहीं पहुंच पाने के बाद तत्कालीन कोच ग्राहम रीड ने इस्तीफा दे दिया था। रीड के कोच रहते ही भारत ने तोक्यो ओलंपिक में 41 वर्ष बाद कांस्य पदक जीता था। हॉकी इंडिया ने 10 मार्च से एफआईएच हॉकी प्रो लीग के घरेलू मैचों से पहले शुक्रवार को यह घोषणा की। दक्षिण अफ्रीका के 48 वर्ष के फुल्टन को करीब 25 साल कोचिंग का अनुभव है और वह औपचारिकतायें पूरी करते ही टीम से जुड़ेंगे।

48 वर्ष के फुल्टन तोक्यो ओलंपिक 2020 में खिताब जीतने वाली बेल्जियम टीम के सहायक कोच रहे हैं। वह भुवनेश्वर में 2018 विश्व कप जीतने वाली बेल्जियम टीम के सहयोगी स्टाफ का भी हिस्सा थे। वह 2014 से 2018 के बीच आयरलैंड की पुरूष टीम के मुख्य कोच रहे जब टीम ने रियो ओलंपिक 2016 के लिये क्वालीफाई किया था। ओलंपिक के लिये क्वालीफाई करने वाली सौ वर्ष में वह पहली आयरिश टीम थी जिसके कारण उन्हें 2015 में वर्ष का सर्वश्रेष्ठ एफआईएच कोच भी चुना गया। फुल्टन 2023 में बेल्जियम के सर्वश्रेष्ठ कोच चुने गए क्योंकि उनके कोच रहते बेल्जियम क्लब ने बेल्जियम लीग खिताब जीता। बतौर खिलाड़ी उन्होंने एक दशक के सफर में दक्षिण अफ्रीका के लिये 195 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के लिये अटलांटा ओलंपिक 1996 और एथेंस ओलंपिक 2004 के अलावा विश्व कप और राष्ट्रमंडल खेलों में भी हिस्सा लिया।

हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप टिर्की ने यहां जारी एक बयान में फुल्टन की नियुक्ति का स्वागत करते हुए कहा, मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि हॉकी इंडिया ने भारतीय पुरूष टीम के लिये क्रेग फुल्टन को मुख्य कोच चुना है। मैं उनके खिलाफ खेल चुका हूं और अब भारतीय टीम के नये दौर में उनके साथ काम करूंगा। वहीं फुल्टन ने कहा, भारतीय हॉकी टीम का मुख्य कोच बनना सम्मान की बात है।

भारत का हॉकी में सुनहरा इतिहास रहा है और मैं मौजूदा टीम को नई ऊंचाइयों तक ले जाना चाहता हूं जिसमें कई प्रतिभावान खिलाड़ी हैं।

मैं सिर्फ अपने क्रिकेट का आनंद लेना चाहती हूं : तान्या भाटिया

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली कैपिटल्स की टीम महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के उद्घाटन संस्करण की तैयारी के लिए जोर-शोर से लगी हुई है। लीग की शुरूआत शनिवार, 04 मार्च 2023 से हो रही है। इस टूनार्मेंट को लेकर विकेटकीपर बल्लेबाज तान्या भाटिया ने कहा कि वह केवल अपने क्रिकेट का आनंद लेना चाहती हैं। भारत के लिए 53 टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने वाली भाटिया ने कहा, मैं सिर्फ अपने क्रिकेट का आनंद लेना चाहती हूं। यह टूनार्मेंट एक अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता की तरह है क्योंकि हमें दुनिया भर के दिग्गज खिलाड़ियों के साथ खेलने को लिए मिल रहा है। मैं प्रतियोगिता के दौरान अपने दिमाग को बेहतर करना चाहती हूं। इस बीच, लेग-स्पिनर पूनम यादव, जिन्होंने अपने टी-20 अंतरराष्ट्रीय करियर में 98 विकेट लिए हैं, ने कहा कि डब्ल्यूपीएल महिलाओं के क्रिकेट को अगले स्तर पर ले जाएगा, उन्होंने कहा, महिला क्रिकेट डब्ल्यूपीएल के माध्यम से उच्च स्तर पर जाएगी। इससे महिलाओं के क्रिकेट को नई ऊंचाइयों तक पहुंचने में मदद मिलेगी।

टीम ने परिस्थितियों से डटकर सामना नहीं किया

नई दिल्ली, एजेंसी

भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे टेस्ट में नौ विकेट की शिकस्त को एक असामान्य मैच करार देते हुए शुक्रवार को कहा कि उनकी टीम ने जज्बा और संघर्ष करने की क्षमता का प्रदर्शन नहीं किया। श्रृंखला में 0-2 से पिछड़ने और बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी को गंवाने के बाद ऑस्ट्रेलिया ने यहां के होल्कर स्टेडियम में स्पिनरों की मददगार पिच पर यादगार जीत दर्ज करने के साथ विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली। रोहित ने मैच के बाद पुरस्कार समारोह में कहा, जब आप चुनौतीपूर्ण पिचों पर खेल रहे होते हैं तो एक ही जगह पर गेंदबाजी कर आप दबाव बना सकते है। हमने उनके गेंदबाजों को एक जगह गेंदबाजी करने दी। उनके गेंदबाजों को भी श्रेय मिलना चाहिये, खासकर नाथन लियोन को। हमें कोशिश करनी थी और जज्बा दिखाना था लेकिन मुझे लगता है कि हम ऐसा नहीं कर सके। लियोन ने दूसरी पारी में 64 रन देकर आठ विकेट चटकाये और ऑस्ट्रेलिया के लिए जीत का मार्ग प्रशस्त किया। रोहित ने कहा, आपको एक असामान्य नतीजे वाला मैच मिल सकता है जहां चीजें आपके मुताबिक नहीं होती है। लेकिन फिर भी आपको खिलाड़ियों को एकजुट कर हौसला बढ़ाने की जरूरत होती है। उन्होंने कहा, हम चाहते थे कि कुछ खिलाड़ी क्रीज पर समय बिताये, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। हम थोड़े पीछे रह गये और हमने खुद को उस तरह से लागू नहीं किया, जैसा हम चाहते थे।

बंदूकधारियों ने मेस्सी को दी धमकी, गोलीबारी

नई दिल्ली, एजेंसी

बंदूकधारियों ने अर्जेंटीना के फुटबॉल सुपरस्टार लियोनेल मेसी को एक लिखित संदेश में धमकी देने के साथ उनके परिवार से जुड़े एक सुपरमार्केट में गोलियां चलायीं। यह जानकारी स्थानीय पुलिस ने दी।

गुरुवार की सुबह के हमले में हालांकि किसी को कोई चोट नहीं आयी है। यह स्पष्ट नहीं था कि हमलावरों ने देश के तीसरे सबसे बड़े शहर रोसारियो में यूनिको सुपरमार्केट को क्यों निशाना बनाया। यह सुपरमार्केट उनकी पत्नी एंटोनेला रोकुजो के परिवार के स्वामित्व में है। शहर के महापौर पाब्लो जावकिन ने रोसारियो में इस सुपर मार्केट का दौरा किया और मादक पदार्थ से संबंधित हिंसा को रोकने में विफलता को लेकर संघीय अधिकारियों को खरी खोटी सुनायी। रोसारियो देश की राजधानी ब्यूनस आयर्स से उत्तर-पश्चिम में लगभग 190 मील (300 किलोमीटर) की दूरी पर स्थित है। पुलिस ने कहा कि एक मोटरसाइकिल पर सवार दो लोगों ने तड़के यूनिको सुपरमार्केट में 12 से ज्यादा गोलियां चलाई। उन्होंने वहां एक संदेश छोड़ा जिसमें लिखा था, मेसी, हम आपका इंतजार कर रहे हैं। जावकिन भी मादक पदार्थों का एक तस्कर है, इसलिए वह तुम्हारा ख्याल नहीं रख पायेगा। दुनिया के सबसे महानतम खिलाड़ियों में से एक मेसी ने इस मामले पर अभी कोई टिप्पणी नहीं की है।

उनकी अगुवाई में इस साल दिसंबर में अर्जेंटीना ने 36 साल के लंबे अंतराल के बाद विश्व कप का खिताब जीता था।

वह फिलहाल पेरिस सेंट-जर्मेन के लिए खेल रहे हैं और अपना अधिकांश समय विदेशों में बिताते हैं। वह अक्सर रोसारियो जाते रहते हैं जहां फनीस उपनगरीय क्षेत्र में उनका घर है।

दुबई चैम्पियनशिप: जोकोविच के सामने मेदवेदेव की चुनौती, रूबलेव का सामना ज्वेरेव से

नई दिल्ली,एजेंसी

शीर्ष रैंकिंग के टेनिस खिलाड़ी नोवाक जोकोविच ने दुबई चैम्पियनशिप के क्वार्टर फाइनल में ह्यूबर्ट हर्कज को 6-3 7-5 से हराकर छठी बार इस खिताब को जीतने की ओर मजबूत कदम बढ़ाये।

लगातार 20वीं जीत दर्ज करने वाले जोकोविच के सामने सेमीफाइनल में पूर्व नंबर एक डेनियल मेदवेदेव की चुनौती होगी। मेदवेदेव ने इस हार्ड-कोर्ट टूनार्मेंट में रात के मुकाबले में बोर्ना कोरिच को 6-3, 6-2 से हराया।

दुबई चैंपियन के गत विजेता एंड्री रुबलेव दूसरे सेमीफाइनल मैच में अलेक्जेंडर ज्वेरेव से भिड़ेंगे।

रुबलेव ने बोटिक वैन डी जैडस्चुल्प को 6-3 7-6(3) से हराया जबकि ज्वेरेव ने लोरेंजो सोनेगो को 7-5 6-4 से मात दी।

सेमीफाइनल के लिए भिड़ेंगे चिर-प्रतिद्वंद्वी बेंगलुरू एफसी और केरला ब्लास्टर्स एफसी

नई दिल्ली, एजेंसी

हीरो इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2022-23 प्लेऑफ चरण का नया फॉर्मेट शुक्रवार शाम से श्री कांतीरवा स्टेडियम में शुरू होगा, जहां मेजबान बेंगलुरू एफसी अपने चिर-प्रतिद्वंद्वी व पिछले साल की उप-विजेता केरला ब्लास्टर्स एफसी से भिड़ेगी।

इस मुकाबले में गलती दोनों ही टीमों के लिए घातक रहेगी, क्योंकि विजेता टीम लीग शील्ड विनर मुम्बई सिटी एफसी के खिलाफ सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर लेगी जबकि हारने वाली टीम की इस सीजन से तुरंत विदाई हो जाएगी।

बेंगलुरू एफसी इस समय हीरो आईएसएल 2022-23 के लीग चरण में लगातार आठ जीत दर्ज करने के बाद जीत के रथ पर सवार है और वो इस लय को बरकरार रखते हुए घरेलू मैदान पर अपने मनमाफिक परिणाम हासिल करना चाहेगी। ब्लूज ने इस कैलेंडर वर्ष के दौरान लीग चरण में कोई अंक नहीं गंवाया है, और प्लेऑफ में अपना स्थान पक्का करने के लिए एक जबर्दस्त वापसी की, जिसमें ब्लास्टर्स के खिलाफ जीत शामिल है।

बेंगलुरू एफसी ने महीने भर अपने घर पर हीरो आईएसएल मैच में ब्लास्टर्स का सामना किया था, जहां उन्होंने एक गोल के अंतर के साथ क्लीन शीट रखते हुए पूरे तीनों अंक हासिल किए थे। आगामी मुकाबले से पहले शिवशक्ति नारायणन शानदार फॉर्म में हैं। इस युवा स्ट्राइकर ने इस सीजन में छह गोल किए हैं और ये सभी पिछले आठ मैचों में आए हैं।

ब्लूज के हेड कोच साइमन ग्रेसन ने कहा, ₹हम आत्मविश्वास के साथ खेल रहे हैं क्योंकि हम बहुत अच्छी लय में हैं। हमने वास्तव में कुछ अच्छी टीमों को हराया है। वास्तव में मजबूत उत्साह, अच्छे आत्मविश्वास के साथ इस मुकाबले में उतरेंगे, लेकिन हम कोई अति आत्मविश्वास में नहीं हैं।

उन्होंने कहा, ₹कुछ हफ्ते पहले केरला (ब्लास्टर्स) के खिलाफ हमारा प्रदर्शन वास्तव में अच्छा था, और इससे हमें वहां पहुंचने में मदद मिली जहां हम इस समय हैं। लेकिन अब यह एक अलग मुकाबला होगा और माहौल जोशीला होगा।

केरला ब्लास्टर्स एफसी को आगे बढ़ना है, तो उसको उस मैदान पर आत्मविश्वास के साथ वापसी करनी होगी, जहां पर परिणाम कभी भी उसके माकूल नहीं रहे हैं। ब्लास्टर्स अपने पिछले तीनों हीरो आईएसएल मैच हारने के बाद इस मुकाबले में उतर रहे हैं। वे अपने पिछले पांच लीग मैचों में से केवल एक बार जीते हैं। ब्लास्टर्स ने इस कैलेंडर वर्ष में खेले अपने सभी पांच मैच हारे हैं, और वे नॉकआउट में खेलने वाली टीमों में सबसे खराब स्कोरिंग फॉर्म में हैं। अगले मुकाबले के लिए उनके पास क्रोएशियाई डिफेंडर मार्को लेसकोविक उपलब्ध होंगे, लेकिन गोल करने के मामले में मुख्य कोच इवान वुकोमानोविक बड़े सुधार की तलाश में होंगे।

अक्रामक दरियाई घोड़ों को भारत, मेक्सिको भेजने की योजना बना रहा कोलंबिया

नई दिल्ली, एजेंसी

कोलंबिया कुख्यात मादक तस्कर पाब्लो एस्कोबार के पशु फार्म के पास रहने वाले कम से कम 70 दरियाई घोड़ों को भारत और मेक्सिको भेजने की योजना बना रहा है। गुजरात (भारत) के जामनगर स्थित ग्रीन्स जूलॉजिकल रेस्क्यू एंड रिहैबिलेशन किंगडम में 60 दरियाई घोड़ों को भेजा जाएगा। इसके लिए दरियाई घोड़ों को पकड़ने से जुड़े अभियान, उन्हें ढोने वाले लोहे के कंटेनर और विमान के जरिये भारत भेजने का पूरा खर्च कोलंबिया सरकार उठाएगी। कोलंबिया सरकार ने दरियाई घोड़ों की आबादी पर लगाम लगाने के मकसद से यह फैसला लिया है। पाब्लो एस्कोबार कोलंबिया का वैश्विक स्तर पर कुख्यात मादक पदार्थ तस्कर था, जिसे पुलिस ने 1993 में एक मुठभेड़ में मार गिराया था। उसने 1980 के दशक में अफ्रीका से अवैध रूप से

चार दरियाई घोड़े मंगवाए थे, जिसके बाद से क्षेत्र में दरियाई घोड़ों की संख्या काफी बढ़ चुकी है। पिछले कुछ वर्षों में इन दरियाई घोड़ों की आबादी बोगोटा से 200 किलोमीटर (124 मील) की दूरी पर मैग्डेलेना नदी के किनारे स्थित पशु फार्म हैसिएंडा नेपोल्स रैंच से कहीं आगे तक फैल गई है। पर्यावरण एजेंसियों का अनुमान है कि एंटिओक्विया प्रांत में स्थित इस क्षेत्र में अभी लगभग 130 दरियाई घोड़े हैं और अगले आठ वर्षों में उनकी संख्या बढ़कर 400 तक हो सकती है। एस्कोबार का हैसिएंडा नेपोल्स रैंच और क्षेत्र में मौजूद दरियाई घोड़े 1993 के बाद से पर्यटकों के बीच आकर्षण का प्रमुख केंद्र बनकर उभरे हैं। एस्कोबार की मौत के बाद जब यह पशु फार्म वीरान हो गया, तब वहां स्थानीय नदियों में अनुकूल मौसम परिस्थितियों में दरियाई घोड़ों के प्रजनन को बल मिला, जिससे उनकी संख्या तेजी से बढ़ गई। वैज्ञानिकों ने आगाह किया है कि कोलंबिया में दरियाई घोड़ों का कोई प्राकृतिक शिकारी नहीं है और ये जीव जैव विविधता के लिए एक संभावित खतरा हैं, क्योंकि उनका मल नदियों की संरचना को बदल देता है और यह मैनाटी और कैपीबारा जैसे जीवों के प्राकृतिक आवास को प्रभावित कर सकता है। कोलंबिया सरकार ने दरियाई घोड़ों को पिछले साल एक जहरीली आक्रामक प्रजाति घोषित किया था। एंटिओक्विया के पर्यावरण मंत्रालय में पशु संरक्षण एवं कल्याण विभाग की निदेशक लीना मासेर्ला डि लॉस रॉस मोरैल्स ने बताया कि दरियाई घोड़ों को भारत और मेक्सिको भेजने की योजना पर एक साल से अधिक समय से काम किया जा रहा है। मोरैल्स के मुताबिक, दरियाई घोड़ों को खाने का लालच दिखाकर लोहे के बड़े कंटेनर में कैद किया जाएगा और फिर ट्रक के जरिये 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित रियोनिग्रो शहर के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे ले जाया जाएगा। मोरैल्स ने बताया कि रियोनिग्रो से उन्हें विमान के जरिये भारत और मेक्सिको भेजा जाएगा, जहां दरियाई घोड़ों को ठिकाना देने, उनकी देखभाल करने और आबादी नियंत्रित रखने में सक्षम अभयारण्य और चिड़ियाघर मौजूद हैं। स्थानीय पर्यावरण प्राधिकरण कॉर्नोर्रे के प्रवक्ता डेविड एचेवेरी लोपेज ने कहा, ऐसा करना संभव है। हमें दरियाई घोड़ों को देश के विभिन्न चिड़ियाघरों में स्थानांतरित करने का अनुभव पहले से ही है।

भारत और मेक्सिको में दरियाई घोड़ों का स्थानांतरण लोपेज की निगरानी में होगा।

मोरैल्स ने बताया कि गुजरात (भारत) के जामनगर स्थित ग्रीन्स जूलॉजिकल रेस्क्यू एंड रिहैबिलेशन किंगडम में 60 दरियाई घोड़े भेजने की योजना है। उन्होंने कहा कि दरियाई घोड़ों को पकड़ने से जुड़े अभियान, उन्हें ढोने वाले लोहे के कंटेनर और विमान के जरिये भारत भेजने का पूरा खर्च कोलंबिया सरकार उठाएगी। मोरैल्स के मुताबिक, 10 अन्य दरियाई घोड़े मेक्सिको के ओस्टोक सहित अन्य अभयारण्यों और चिड़ियाघरों में भेजे जाएंगे। एंटिओक्विया के राज्यपाल कार्यालय ने बताया कि इक्वाडोर, फिलीपीन और बोत्सवाना ने भी कोलंबिया के सामने दरियाई घोड़ों को उनके देश भेजने की इच्छा जाहिर की है।

उत्तर कोरिया की धमकी के बावजूद दक्षिण कोरिया और अमेरिका की सेनाएं संयुक्त अभ्यास करेंगी

नई दिल्ली, एजेंसी

दक्षिण कोरिया और अमेरिका की सेना ने शुक्रवार को कहा कि वे इस महीने बड़े पैमाने पर वार्षिक सैन्य अभ्यास करेंगी। उत्तर कोरिया के इस तरह के अभ्यास के खिलाफ आगाह करने और इसके कड़े परिणाम भुगतने की धमकी देने के बावजूद दोनों सेनाओं ने सैन्य अभ्यास करने का फैसला किया है। ऐसा संदेह है कि उत्तर कोरिया आगामी दक्षिण कोरियाई-अमेरिकी अभ्यास का उत्तेजक मिसाइल परीक्षणों और उग्र बयानों के जरिये जवाब देगा, क्योंकि वह इन अभ्यासों को आक्रमण का पूर्वाभ्यास बताता है। दक्षिण कोरिया और अमेरिका की सेना ने एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में कहा कि वे अपनी रक्षा और जवाबी कार्रवाई की क्षमताओं को मजबूत करने के लिए 13 से 23 मार्च तक फ्रीडम शील्ड अभ्यास (एक कंप्यूटर कमांड आधारित अभ्यास) करेंगी। दोनों सेनाओं ने कहा कि अभ्यास उत्तर कोरियाई आक्रामकता, हाल के संघर्षों से सीखे गए सबक और बदलते सुरक्षा परिवेश पर केंद्रित होगा। दक्षिण कोरिया के ज्वाइंट चीफ ऑफ स्टाफ के प्रवक्ता कर्नल ली सुंग जून ने कहा, दक्षिण कोरया-अमेरिका गठबंधन उत्तर कोरियाई सेना द्वारा संभावित उकसावे के खिलाफ तैयार रहने के लिए एफएस (फ्रीडम शील्ड) अभ्यास करेगा। ली ने कहा कि दोनों देश उत्तर कोरियाई के संभावित उकसावे का पूरी तरह से जवाब देंगे। अमेरिकी सेना के प्रवक्ता कर्नल आइजैक के टेलर ने कहा कि दोनों देश अभियानों को अंजाम देने की अपनी क्षमता में सुधार करने के लिए व्यापक स्तर पर वारियर शील्ड एफटीएक्स नामक संयुक्त अभ्यास भी करेंगे।

संक्षिप्त खबरें

तुर्की अनाज सौदा पर गतिरोध कायम, स्थिति स्पष्ट नहीं

संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में तुर्की का अनाज सौदा आगे बढ़ाने पर बातचीत में गतिरोध उत्पन्न हो गया है और फिलहाल इस पर स्थिति स्पष्ट नहीं है। स्पूतनिक ने शुक्रवार को सूत्रों के हवाले से यह जानकारी दी। सूत्रों ने कहा कि ह्लतुर्की और संयुक्त राष्ट्र की ओर से बातचीत की प्रक्रिया अभी रुकी नहीं है और विभिन्न पहल और विकल्प प्रस्तावित हैं, लेकिन गतिरोध कायम है क्योंकि स्थिति अभी भी स्पष्ट नहीं है कि यह पहल जारी रहेगी या नहीं और वैश्विक बाजारों में रूस के कृषि उत्पादों और अमोनिया के प्रवेश को गारंटी प्राप्त होगी या नहीं। यह बहुत आवश्यक है कि गतिरोध को जल्द से जल्द समाप्त किया जाए।ह्व गौरतलब है कि इस सौदे की समयसीमा 18 मार्च को समाप्त होने वाली है।

रूस को विमानन प्रौद्योगिकी भेजने के आरोप में दो अमेरिकी नागरिक गिरफ्तार

अमेरिका की कैनसस सिटी से पुलिस ने रूस को विमानन प्रौद्योगिकी भेजने के आरोप में दो अमेरिकियों को गिरफ्तार किया गया है। अमेरिकी वाणिज्य विभाग के उद्योग एवं सुरक्षा ब्यूरो के सहायक सचिव मैथ्यू एस एक्सलरॉड ने बताया कि आज दो अमेरिकी नागरिकों को रूस को विमानन प्रौद्योगिकी भेजने के आरोप में किया गया है।

रूस की पनडुब्बी ने जापान के समुद्र से कैलिबर मिसाइल का किया परीक्षण

रूस की डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बी पेट्रोपावलोव्स्क-कामचत्स्की ने जापान सागर से एक हजार किलोमीटर की दूरी पर कलिबर क्रूज मिसाइल का परीक्षण किया। प्रशांत बेड़े ने शुक्रवार को यह जानकारी दी है। बेड़े के प्रेस कार्यालय ने कहा, ह्लप्रशांत बेड़े के पेट्रोपावलोव्स्क-कामचत्स्की डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बी के चालक दल ने जापान के सागर में युद्ध अभ्यास योजना के हिस्से के रूप में पानी के नीचे से एक कैलिबर क्रूज मिसाइल का परीक्षण किया गया है। मिसाइल द्वारा एक तटीय लक्ष्य को निशाना बनाया गया है। उन्होंने कहा, ह्लकलिबर मिसाइल ने खाबरोवस्क क्षेत्र में करीब एक हजार किलोमीटर की दूरी पर स्थित स्थित सुरकुम के सामरिक क्षेत्र पर तटीय लक्ष्य निश्चित समय पर भेदा है। कार्यालय ने बताया कि इस दौरान मिसाइल फायरिंग क्षेत्र में प्रशांत बेड़े के जहाजों के साथ-साथ नौसेना के विमानों की आवाजाही को रोक दिया गया था।

सिंगापुर के प्रधानमंत्री के भाई ने कहा, सरकार मेरे परिवार को प्रताड़ित कर रही

नई दिल्ली, एजेंसी

सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली सियन लूंग के भाई ली सियन यांग ने सरकारी प्राधिकारियों पर अपने परिवार को प्रताड़ित करने का आरोप लगाया है। यांग का यह आरोप उनके और उनकी पत्नी के आधिकारिक जांच के दायरे में होने के खुलासे की पृष्ठभूमि में आया है। लूंग और यांग के बीच उनके दिवंगत पिता एवं सिंगापुर के प्रथम प्रधानमंत्री ली क्वान यू की वसीयत को लेकर लंबे समय से विवाद है। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए समन्वय मंत्री तियो ची हियन के बृहस्पतिवार को संसद में एक लिखित जवाब में यह बताने के बाद से दोनों भाइयों के बीच तनातनी और बढ़ गई है कि क्वान यू की वसीयत से जुड़ी न्यायिक कार्यवाही में झूठे साक्ष्य उपलब्ध कराने के आरोप में यांग और उनकी पत्नी ली स्वेत फर्न के खिलाफ जांच की जा रही है। मंत्री ने बताया कि यांग और फर्न पर तीन न्यायाधीशों के एक पैनल और एक अनुशासनात्मक न्यायाधिकरण के सामने ली गई शपथ के तहत झूठ बोलने का आरोप लगाया गया है। उन्होंने संसद को बताया कि दोनों पुलिस की पूछताछ में शामिल होने के लिए राजी हुए थे, लेकिन बाद में उन्होंने इससे इनकार कर दिया, जो बेहद ह्यनिराशाजनकह्ल है। संसद में शुक्रवार को उपलब्ध कराई गई जवाब की प्रति में हियन ने कहा है, ह्लपुलिस ने यांग और फर्न को जांच में शामिल होने के मुद्दे पर पुनर्विचार करने की सलाह दी है, लेकिन उन्होंने सिंगापुर छोड़ दिया है और अभी भी देश से बाहर हैं। बाद में यांग ने फेसबुक पर जारी एक पोस्ट में कहा कि वसीयत पर अमल से संबंधित मामले में पूछताछ का सामना करने के दौरान उन्होंने और उनकी बहन ली वेई लिंग ने कहा था कि दोनों को ह्लउनके और उनके परिवारों के खिलाफ सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किए जाने का डर सता रहा है। यांग ने आगे लिखा, ह्लसिंगापुर के अधिकारियों द्वारा मेरे परिवार का उत्पीड़न बेरोकटोक जारी है। प्रधानमंत्री कार्यालय ने इस मामले में तत्काल कोई टिप्पणी नहीं की है, लेकिन लूंग पहले कई बार अपने भाई-बहन द्वारा लगाए गए आरोपों को ह्यपूरी तरह से बेबुनियादह्ल करार दे चुके हैं।

सीमा मुद्दों को उचित स्थान पर रखते हुए स्थिति सामान्य बनाने पर काम किया जाए: चीनी विदेश मंत्री

नई दिल्ली, एजेंसी

चीन के विदेश मंत्री किन गांग ने भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर से कहा है कि भारत और चीन को द्विपक्षीय संबंधों में सीमा मुद्दे को ह्लउचित स्थानह्व पर रखना चाहिए और अपनी सीमाओं पर स्थिति सामान्य बनाने के लिए यथाशीघ्र मिलकर काम करना चाहिए। विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को यहां यह जानकारी दी। किन ने नयी दिल्ली में आयोजित जी20 विदेश मंत्रियों की बैठक से इतर बृहस्पतिवार को जयशंकर से हुई व्यक्तिगत मुलाकात के दौरान यह बात कही। उन्होंने पूर्वी लद्दाख में 34 महीने से अधिक समय से जारी सीमा विवाद के बीच यह बात कही है।

किन को दिसंबर में वांग यी की जगह चीन का विदेश मंत्री बनाया गया था।

भारत कहता रहा है कि जब तक सीमावर्ती इलाकों में शांति कायम नहीं होती तब तक चीन से उसके संबंध सामान्य नहीं हो सकते। जयशंकर ने किन से कहा कि भारत-चीन संबंधों की स्थिति ह्यअसामान्यह्ल है। भारतीय विदेश मंत्री ने कहा कि उनकी वार्ता द्विपक्षीय संबंधों में व्याप्त चुनौतियों, विशेष रूप से सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति व स्थिरता पर केंद्रित रही। उन्होंने कहा, जी20 में क्या हो रहा है, इस पर भी हमने संक्षिप्त चर्चा की। लेकिन बैठक में वास्तव में हमारे द्विपक्षीय संबंधों और उनके समक्ष खड़ीं चुनौतियों, विशेष रूप से सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति व स्थिरता पर जोर रहा। चीन की सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने विदेश मंत्रालय की ओर से जारी आधिकारिक विज्ञप्ति के हवाले से कहा, किन ने जयशंकर से कहा कि दोनों पक्षों को दोनों देशों के नेताओं के बीच बनी महत्वपूर्ण सहमति को लागू करना, संवाद बनाए रखना, विवादों को सही ढंग से सुलझाना, और द्विपक्षीय संबंधों में सुधार को बढ़ावा देना व लगातार मजबूत बनाना चाहिए। किन ने कहा, द्विपक्षीय संबंधों में सीमा मुद्दे को उचित स्थान पर रखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जितनी जल्दी हो सके, सीमाओं पर स्थिति को सामान्य बनाना चाहिए।

इटली जहाज दुर्घटना : मृतकों में दो पाकिस्तानी नागरिक शामिल

नई दिल्ली, एजेंसी। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने कहा कि दक्षिणी इटली तट पर हुई जहाज दुर्घटना में मारे गये लोगों में कम से कम दो पाकिस्तानी नागरिक शामिल हैं जबकि 17 अन्य को बचा लिया गया है। पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता मुतज जहरा बलूच ने यह जानकारी दी। उन्होंने कहा, जहाज दुर्घटना में दो लोग अभी भी लापता हैं। रोम में हमारा दूतावास सक्रिय रूप से इतालवी अधिकारियों के साथ हादसे में बचे लोगों और मृतकों के अवशेष को स्वदेश लाने के लिए प्रयासरत है। उल्लेखनीय है कि 24 फरवरी को हुई दुर्घटना में 64 से अधिक शरणार्थी मारे गए थे। जहाज में कथित तौर पर 100 से अधिक शरणार्थियों को ले जाया जा रहा था। ये शरणार्थी मुख्य रूप से ईरान, पाकिस्तान और अफगानिस्तान से थे।

अमेरिका, रूस और यूएई के अंतरिक्ष यात्रियों का नया दल आईएसएस पहुंचा

नई दिल्ली, एजेंसी

अंतरिक्ष यात्रियों का एक नया दल छह महीने के मिशन के लिए शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन (आईएसएस) पहुंचा। दल में रूस के आंद्रे फेदियाएव और अमेरिका के वारेन होबर्ग व स्टीफ बोवेन के अलावा संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के सुल्तान अल-नियादी शामिल हैं। अल-नियादी एक महीने के लिए आईएसएस जाने वाले अरब जगत के पहले अंतरिक्ष यात्री हैं। उनसे पहले 2019 में यूएई के पहले अंतरिक्ष यात्री हाजा अल-मंसूरी एक सप्ताह के लिए अंतरिक्ष स्टेशन गए थे। चार अंतरिक्ष यात्रियों को लेकर स्पेसएक्स के कैप्सूल ने फॉल्कन रॉकेट के जरिये बृहस्पतिवार तड़के आईएसएस के लिए उड़ान भरी थी। हालांकि, कैप्सूल के एक ह्यडॉकिंग हुकह्ल (लैंडिंग के दौरान कैप्सूल को आईएसएस से जोड़ने वाला हुक) में तकनीकी समस्या के कारण यात्री दल कुछ घंटों के लिए आईएसएस से 65 फुट की दूरी पर अटका रहा । शुक्रवार को कैलिफोर्निया में मौजूद उड़ान नियंत्रक दल तकनीकी समस्या को दूर करने में सफल रहा, जिसके बाद चारों अंतरिक्ष यात्रियों ने आईएसएस में कदम रखा। स्पेसएक्स के मुताबिक, कैप्सूल के उड़ान भरने के कुछ ही देर बाद ह्यडॉकिंग हुकह्ल में तकनीकी समस्या की बात सामने आई थी। कंपनी ने बताया कि कैप्सूल में लगे सभी 12 हुक ठीक नजर आ रहे थे, लेकिन उनमें से एक का स्विच सही तरीके से काम नहीं कर रहा था। इसके बाद, स्पेसएक्स मिशन कंट्रोल ने कैप्सूल में सवार अंतरिक्ष यात्रियों से संयम बनाए रखने की अपील की। उसने यात्रियों को बताया कि वे इस स्थिति में दो घंटे तक रह सकते हैं, तब तक टीम समस्या को दूर कर लेगी। कंपनी के अनुसार, स्पेसएक्स मिशन कंट्रोल ने कुछ ही मिनटों बाद सॉफ्टवेयर के लिए नए कमांड जारी किए, जिसके बाद कैप्सूल आईएसएस से जुड़ने में सफल हो गया। उसने बताया कि ह्यडॉकिंग हुकह्ल में तकनीकी समस्या के कारण अंतरिक्ष यात्री निर्धारित समय से लगभग एक घंटे की देरी से आईएसएस पहुंचे।

भारत जी20 की अपनी अध्यक्षता की बेहद आशाजनक शुरूआत करने को तैयार

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत द्वारा जी-20 देशों के विदेश मंत्रियों की एक बेहद सफल बैठक की मेजबानी करने के बाद अमेरिका ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत जी-20 की अपनी अध्यक्षता की बेहद आशाजनक शुरूआत करने जा रहा है। अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता नेड प्राइस ने अपने दैनिक संवाददाता सम्मेलन में कहा, ह्यह्यआज तक जिस तरह से उन्होंने जी-20 का नेतृत्व किया है, उसके लिए हम अपने भारतीय भागीदारों के आभारी हैं। जैसा कि आपने बताया कि अभी इस वर्ष बहुत कुछ और किया जाना है भारत जी-20 की अपनी अध्यक्षता की एक बहुत ही आशाजनक शुरूआत करने जा रहा है। प्राइस ने कहा कि भारत-अमेरिका साझेदारी पर विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन और उनके भारतीय समकक्ष एस जयशंकर के बीच नयी दिल्ली में चर्चा की गई।

प्राइस ने भारत के साथ संबंधों को अमेरिका के सबसे महत्वपूर्ण संबंधों में से एक बताते हुए कहा, ऐसा इसलिए है, क्योंकि हम भारत के साथ मिलकर हर उस चीज पर काम करते हैं, जो हमारे लिए प्राथमिकता है और जो भारत के लिए भी प्राथमिकता है इसमें हमारी आपसी समृद्धि को बढ़ाना, लोकतंत्र का समर्थन करना, जलवायु संकट पर काबू पाना और अंतरराष्ट्रीय कानून पर आधारित शासन को कायम रखना शामिल है। उन्होंने कहा, कानून आधारित शासन दुनियाभर में हमारे लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन खासकर हिंद-प्रशांत क्षेत्र के संदर्भ में यह अमेरिका और भारत, दोनों के लिए बेहद अहम है। प्राइस ने कहा, ह्यह्ययह एक मुक्त एवं खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के निर्माण और संरक्षण में मदद करता है। यह एक ऐसा नजरिया है, जो हम भारतीय समकक्षों के साथ साझा करते हैं। ब्लिंकन और जयशंकर ने जी-20 देशों के विदेश मंत्रियों और वित्त मंत्रियों की बैठक में भारत द्वारा अब तक किए गए कार्यों के अलावा एक ऐसा एजेंडा बनाने पर चर्चा की, जो उन्हें वैश्विक तथा रणनीतिक साझेदारी से जुड़े मुद्दों से निपटने में मदद करे। प्राइस ने कहा कि जी20 भारत और अमेरिका के लिए बेहद महत्वपूर्ण है।

जी-20 बैठक में यूक्रेन को लेकर संयुक्त घोषणापत्र का अभाव देशों के बीच विभाजन का संकेत : संयुक्त राष्ट्र

नई दिल्ली, एजेंसी

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुतारेस के एक प्रवक्ता ने कहा है कि जी-20 के विदेश मंत्रियों की बैठक में यूक्रेन को लेकर संयुक्त घोषणापत्र पर सहमति नहीं बनना अंतरराष्ट्रीय मंच पर देशों के बीच ह्यविभाजनह्ल को दशार्ता है। उन्होंने कहा कि यह एक मेजबान के रूप में भारत के प्रयासों का परिचायक नहीं है। जी-20 के अध्यक्ष के रूप में भारत ने विदेश मंत्रियों की बैठक बृहस्पतिवार को नयी दिल्ली में आयोजित की थी जिसमें अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन, रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव और चीनी विदेश मंत्री क्विन गांग समेत अन्य देशों के विदेश मंत्रियों ने हिस्सा लिया। मेजबान भारत की ओर से मतभेदों को कम करने की कोशिशों के बाजवूद यूक्रेन संघर्ष को लेकर रूस और पश्चिम के बीच गहरी खाई दिखी जिसके कारण संयुक्त घोषणापत्र पर सहमति बनाने के लिहाज से यह बैठक नाकाम रही। नयी दिल्ली में एक प्रेसवार्ता के दौरान ब्लिंकन ने कहा कि रूस और चीन दो देश थे जिन्होंने बैठक के दौरान संयुक्त घोषणापत्र का समर्थन नहीं किया। गुतारेस के प्रवक्ता स्टीफन दुजारिक ने प्रेसवार्ता में बृहस्पतिवार को कहा, ह्यह्यहम बैठक में एक पक्षकार नहीं थे। मुझे लगता है कि स्वाभाविक रूप से यह किसी भी तरह से जी-20 के मेजबान के रूप में भारत के प्रयासों को प्रदर्शित नहीं करता। चूंकि हम मेज पर नहीं थे, इसलिए हमारे लिए यह उचित नहीं है कि इस बात के लिए दोष मढ़ें या विश्लेषण करें कि मुद्दे को कहां होना चाहिए था। लेकिन यह एक और विभाजन का प्रदर्शन है जिसे हम कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर देखते हैं। यूक्रेन पर एक साल पहले रूस के हमले के बाद पहली बार ब्लिंकन और लावरोव ने जी-20 बैठक से इतर एक दूसरे आमने-सामने की बातचीत की।

यूक्रेन युद्ध | भारत के साथ संबंधों को अमेरिका के सबसे महत्वपूर्ण संबंधों में से एक.....

यूक्रेन युद्ध को खत्म करने में भारत को विशिष्ट भूमिका निभानी है : अमेरिका

नई दिल्ली, एजेंसी

अमेरिका ने कहा है कि जी20 समूह के अध्यक्ष के रूप में भारत को यूक्रेन में जारी युद्ध को समाप्त करने में विशिष्ट भूमिका निभानी है, क्योंकि रूस के साथ उसके लंबे समय से ऐतिहासिक संबंध हैं। साथ ही उसने कहा कि भारत के पास जबरदस्त नैतिक स्पष्टता के साथ बोलने की क्षमता है, जैसा कि वह प्रधानमंत्री (नरेन्द्र) मोदी के मामले मंर देख चुका है।

अमेरिका ने यूक्रेन में संघर्ष को रोकने का उपाय तलाशने में भारत के साथ मिलकर काम करने की उम्मीद भी जताई।

यूक्रेन युद्ध को लेकर पश्चिमी देशों और रूस के बीच मतभेद दूर करने की भारत की कोशिशों के बावजूद दोनों पक्षों में विवाद बरकरार रहने के कारण भारत की मेजबानी में बृहस्पतिवार को आयोजित जी20 देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक में साझा बयान जारी नहीं किया जा सका था। अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता नेड प्राइस ने बृहस्पतिवार को वाशिंगटन में अपने दैनिक संवाददाता सम्मेलन में कहा, आज तक जिस तरह से उन्होंने जी-20 का नेतृत्व किया है, उसके लिए हम अपने भारतीय भागीदारों के आभारी हैं। जैसा कि आपने बताया कि अभी इस वर्ष बहुत कुछ और किया जाना हैह्ल भारत ने जी-20 की अपनी अध्यक्षता की एक बहुत ही आशाजनक शुरूआत की है। प्राइस ने कहा कि भारत-अमेरिका साझेदारी पर विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन और उनके भारतीय समकक्ष एस जयशंकर के बीच नयी दिल्ली में चर्चा हुई। उन्होंने भारत के साथ संबंधों को अमेरिका के सबसे महत्वपूर्ण संबंधों में से एक

● ब्लिंकन को लगता है कि रूस और यूक्रेन के बीच तनाव घटाने तथा युद्ध को समाप्त करने में भारत की अभी भी कोई भूमिका है

बताते हुए कहा, ऐसा इसलिए है, क्योंकि हम भारत के साथ मिलकर हर उस चीज पर काम करते हैं, जो हमारे लिए प्राथमिकता है और जो भारत के लिए भी प्राथमिकता है इसमें हमारी आपसी समृद्धि को बढ़ाना, लोकतंत्र का समर्थन करना, जलवायु संकट पर काबू पाना और अंतरराष्ट्रीय कानून पर आधारित शासन को कायम रखना शामिल है। यह पूछे जाने पर कि क्या ब्लिंकन को लगता है कि रूस और यूक्रेन के बीच तनाव घटाने तथा युद्ध को समाप्त करने में भारत की अभी भी कोई भूमिका है, प्राइस ने कहा कि दुनियाभर में कई देश हैं, जिनके रूस के साथ ऐसे संबंध हैं, जो रूस और अमेरिका के बीच के संबंधों से अलग हैं। उन्होंने कहा, भारत यकीनन उस श्रेणी में आता है। भारत के रूस के साथ लंबे समय से ऐतिहासिक संबंध हैं। वह रूस के साथ जिस तरह से जुड़ा हुआ है, उस तरह से अमेरिका नहीं जुड़ा हुआ है। प्राइस ने कहा कि भारत विभिन्न मामलों में जबरदस्त पैठ भी रखता है, फिर चाहे वह आर्थिक मामले हों, कूटनीतिक मामले हों, राजनीतिक मामले हों या फिर नैतिक मामले हों। उन्होंने कहा, और भारत के पास जबरदस्त नैतिक स्पष्टता के साथ बोलने की क्षमता है, जैसा कि हमने प्रधानमंत्री (नरेन्द्र) मोदी के मामले में देखा है। प्राइस ने कहा कि जब प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले साल कहा था कि यह युद्ध का युग नहीं है, तो पूरी दुनिया ने सुना, क्योंकि जब प्रधानमंत्री मोदी और उनका देश इस तरह की बातें कहता है, तो यह अमेरिका के लिए सार्थक होती हैं, रूस के लिए सार्थक होती हैं, पास और दूर के सभी देशों के लिए सार्थक होती हैं। पिछले साल सितंबर में समरकंद में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के वार्षिक शिखर सम्मेलन के इतर रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ एक द्विपक्षीय बैठक में प्रधानमंत्री मोदी ने लोकतंत्र, संवाद और कूटनीति के महत्व को रेखांकित करते हुए यूक्रेन में संघर्ष को जल्द से जल्द समाप्त करने का आह्वान किया था। मोदी ने पुतिन से कहा था, मैं जानता हूं कि आज का युग युद्ध का युग नहीं है। प्राइस ने कहा कि अमेरिका इस मुद्दे पर भारत के साथ मिलकर काम करना जारी रखेगा।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129, 9430990555